नायाब परछाइयाँ

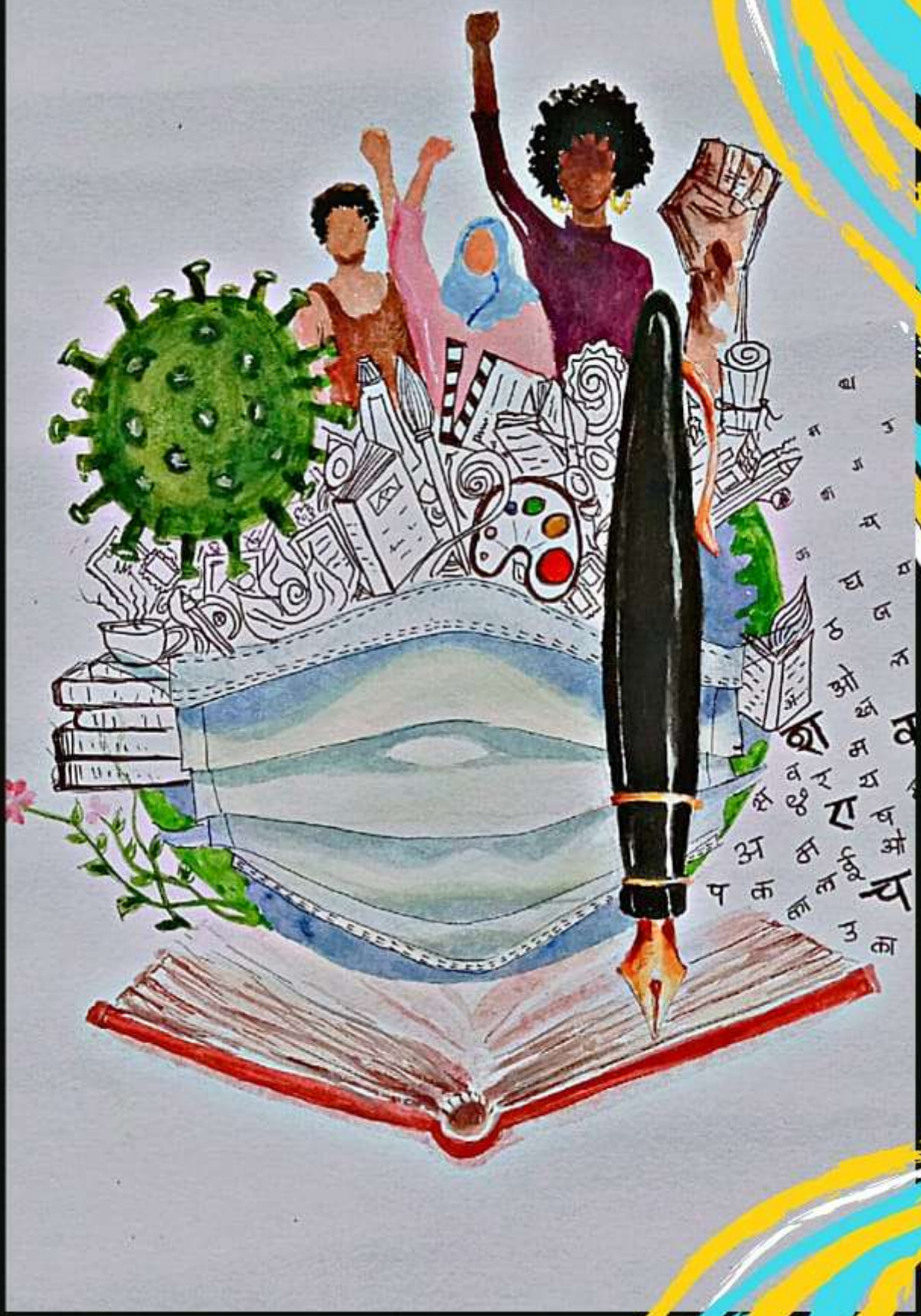

क्रैस्ट कॉलेज(स्वायत्त),इरिञालकुडा
हिन्दी विभाग, ई- पत्रिका 2020 - 2021 ।

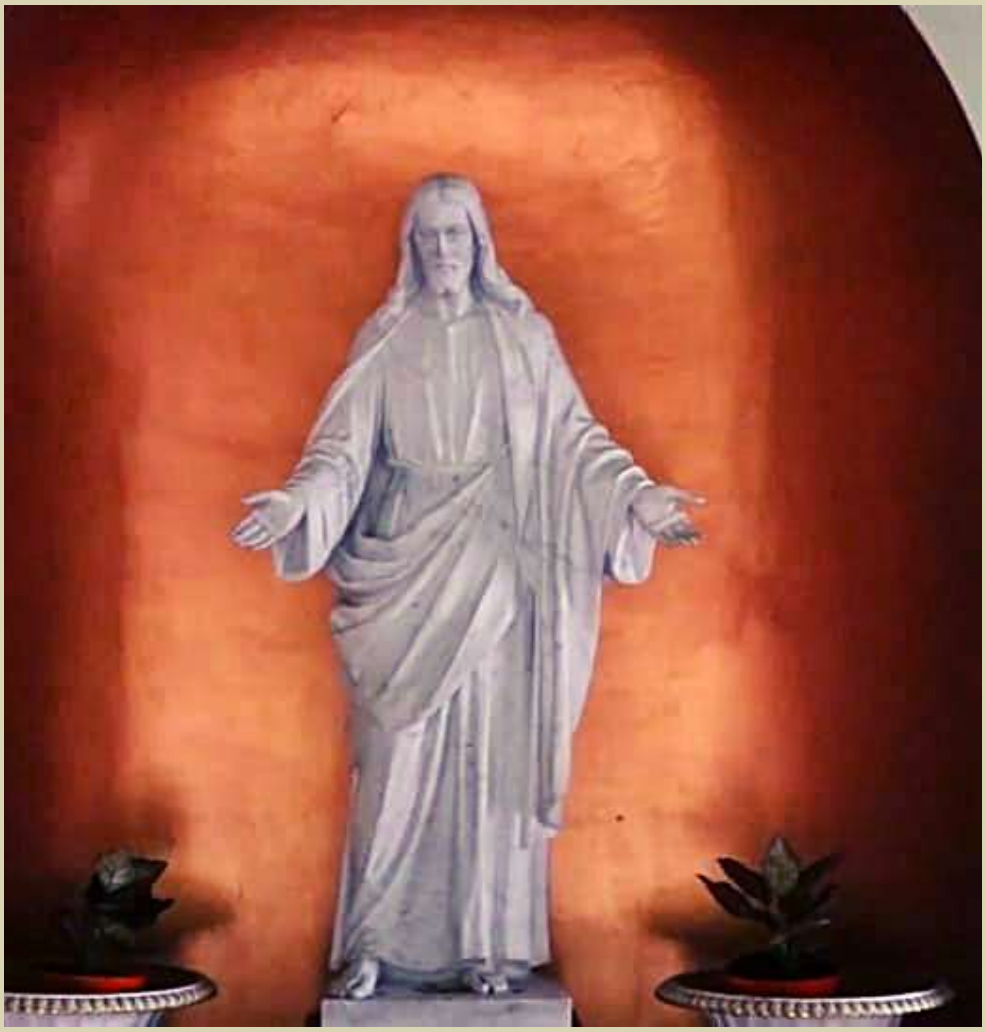

नायाब परछाइयाँ

क्रैस्ट कॉलेज के छात्रो ने दिखाई है बहुत सी अच्छाइयाँ ।
ज़रा एक बार पढकर तो देख लो हमारी 'नायाब परछाइयाँ ' ।

विषय सूची

- प्राचार्य का संदेश
- संपादकीय
- आभार
- भूमिका
- रचनाएँ

प्राचार्य का संदेश

प्रिय छात्रों , मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता हो रहा है कि क्रैस्ट कॉलेज के हिन्दी विभाग ' नायाब परछाईयाँ ' (Unique Reflections) नामक एक ई - पत्रिका प्रकाशित करने को आगे बढ़ा है । मैं पूरी ईमानदारी से विभाग अध्यक्षा षीबा वर्गीस , संपादक डॉ.शिवकुमार और उन छात्रों की भी तारिफ करता हूँ , जिन्होंने इस पत्रिका को सफल बनाने लिए कड़ी मेहनत की है । जब हम अपने विचारों को अक्षरों या शब्दों में परिवर्तित करने की कोशिश करेंगे , जैसे कि लेख , कहानियाँ , कविता , उपन्यास , कार्टून , चित्र आदि , तब हम इस विशाल दुनिया से संपर्क करने में सक्षम बन जाऐंगे । हमारी शिक्षा प्रणाली का एक अनिवार्य अंग है सांस्कृतिक प्रगति , जिससे हम अपने विचारों को रूपायित करने के साथ , इसका प्रचार - प्रसार भी सफलता से निभा सकते हैं । कोविड़ महामारी के इस अवसर पर समय का सदुपयोग करके इ - पत्रिका के द्वारा आपकी रचनात्मकता को बढ़ावा देने का प्रयत्न बिलकुल सराहनीय है | एक बार भी हिन्दी विभाग के सारे अध्यापकों और मेरे प्रिय छात्रों को तहेदिल से बधाइयाँ और शुभकामनाएँ । धन्यवाद ।

संपादकीय

आज सारा संसार कोरोना महामारी से ग्रस्त है। इसका घातक असर पूरा संसार देख रहा है । आप अखबारो में या सारे चैनलों पर नज़रे दौडा ले , आपको कोरोना की ही खबरें नजर आएंगी । जिसे देखकर और सुनकर हमारा मन अन्दर से भय खाने लगता है और हम तनाव में आ जाते हैं।

क्राइस्ट कॉलेज के छात्रों ने कोरोना महामारी के बीच अपना विचार बांटने के लिए हिंदी पत्रिका को अपना जरिया बनाया | जिससे उनका तनाव कम हो जाए । सच्चाई यह है कि इस पर कार्य करते हुए समय कैसे गुजर गया । हमें पता ही नहीं चला । इस पत्रिका के कार्य की समाप्ति के बाद सारा वातावरण बदल गया । इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों में छुपी हुई योग्यताओं को उजागर करने का प्रयास किया है । उनकी योग्यता और परिश्रम का फल है , हिंदी पत्रिका "नायाब परछाइयां " |

आभार

प्रोफ . षीबा वर्गीस यु

हिंदी विभाग की अध्यक्षा प्रोफ.षीबा वर्गीस इस ई-पत्रिका को सफल बनाने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आपने तन मन लगाकर पत्रिका का संपादन किया |

हमारे अन्दर के लेखक को जगाने में डौ.शिवकुमार जी का बड़ा योगदान था | आपने अपना कीमती समय इस ई-पत्रिका की सफलता के लिए दिया |

डौ.शिवकुमार

शुभ चिन्तक

प्रोफ. के के चाको

डॉ.के.एम. जयकृष्णन

डॉ.त्रेसियाम जोसेफ

ई-पत्रिका के सदस्य

STUDENT EDITORS

DITHI C.N
2ND DC ECONOMICS

KRISHNACHANDRAN M
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

ATHMAJA M
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

BEJOY JAYARSON
2ND DC PHYSICS

MAGAZINE COMMITTEE MEMBERS

PADMINI C MENON
2ND DC CHEMISTRY

TANISH THOMSON
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

JOMOL JOHN
2ND DC ECONOMICS

AFEELA MOHAMMED
2ND DC ECONOMICS

MRINAL RAJESH
2ND DC GEOLOGY

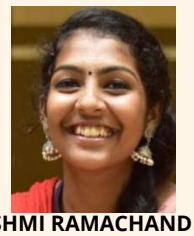

LAKSHMI RAMACHANDRAN
2ND DC ECONOMICS

SWAPNA SUDHA
2ND DC ZOOLOGY

PARVATHY N.N
1ST DC ECONOMICS

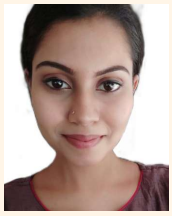

NIRANJENA ANUP
1ST DC ECONOMICS

रचनाएँ

देशभक्ति गीत

PRADEESHA NP
2ND DC GEOLOGY

मेहमान

" अजी सुनते हो , कुछ बन - ठन के जायिए न , खेती करने थोड़े ही जा रहे हैं " - रसोई में से शॉता की आवास आयी " | क्या बन - ठन के जाऊँ हूँ तो मैं किसान ही न " - रामकिशन चिढ़कर कहाँ । बीवी फिर कुछ ना बोली । रामकिशन रसोई में आकर शाँता से उत्साह से पूछने लगा " तू बता इमलिया के लिए क्या लेते जाऊँ ? " शांता के होठो पर मुस्कुराहट की झलक दिखाई पड़ी , अपने पास पड़े एक पुडिये को रामकिशन के हाथ में थमाकर बोली " यह मोतीचूर के लड्डू है इमलिया को बहुत पसंद है ना , यह लेते जाइए " | " और जमाई बाबू के खातिर ? " रामकिशन थोडे सोच - विचार के बाद पूछने लगा । " तुम यह मोटी रोटी लेकर जाओ " - शांता कुछ देर सोचकर बोल उठी । और वह उन रोटियों को एक थैले में भरने लगी , और फिर रामकिशन के हाथों में थमा दिया । रामकिशन की संशयात्मक नजर को देखकर शाँता बोली – " बिटिया बोल रही थी कि उन्हें बहुत पसंद है , तुम फिकर मत करो । रामकिशन के चेहरे पर आश्वस्त भाव प्रकट हुआ । वह अपनी गर्दनों की झुर्रियों सहला कर बाहर निकल आया |

अब रामकिशन को दो किलोमीटर और चलना है । वह थक गया था , रास्ते के पास ही एक बेंच पड़ी थी । वह बिना समय गवाएं उस पर बैठ गया बिटिया की शादी बहुत बडे खानदान में हुई है । जब इमली को देखने के खातिर ठाकुराइन आयी थी , तो उन्होंने कह दिया कि " हमारे बेटे को आपकी दिकरी पसंद है " । हम तो पहले घबरा गय थे । ये क्या इतने बड़े खानदान के लोग हमसे रिश्ता जोडने के लिए आये है । इमलिया से पूछकर देखा तो पता चला वह दोनों आपस में प्रेम करते हैं । जहां बेटी की खुशी वहां हम क्यों भला मूंह फेरने लगे , करवा दी शादी । ये अलग बात है की गांव के लोगों को यह अच्छा नहीं लगा ।प्रत्येक रुप से सुंदर सिह को , हमारी दिकरी का उनसे पहले लगन हो गया था न , जलते हॅ हमसे ।

बेटी से मिलने की खुशी में वह दो किलोमीटर भी पार कर लिया । रामकिरान ठाकुरों के आलीशान बंगले के बाहर खडा था । वह अंदर घुसने ही वाला या कि दो पहरेदारों ने उन्हें रोक दिया । " ओ चाचा कहाँ घुसे जा रहे है ये ठाकुरो का घर है , तुम जैसों को अंदर तो क्या , गेट के सामने भी नही होना चाहिये " – उनमें से एक पहरेदार बोला ।रामकिशन को गुस्सा आया वह अपनी दाँते कुरेदते हुए बोला – " हम तो रिश्तेदार है , हमारी बिटिया इस घर की बहु है " | वे दोनों पहरेदार ठहाके मारने लगे । फिर एक आवाज आयी " उन्हें अंदर आने दो " ये सुनकर रामकिश का चहरा दमक उठा । एसा लगा रामकिशन के अंदर के जाड़े को पश्मीने की तरह एक सहारा मिल गया हो । वह उनकी बेटी थी इमली ।

बिटिया को देखकर रामकिशन बहुत खुश था , इमनी की आँखों भर आयी थी । रामकिशन अपनी बेटी से प्यार से बोला , " हर लड़की को शादी के बाद पति के घर में रुकना पड़ता है , मै जानता हूं तुम हमें याद करती हो मैं आया ना तुमसे मिलने " । इमली अपने बाबा की बातें सुनकर थोड़ी खुश हुई । अंदर चलते ही ठाकुराइन रागश्वरी और जमाई बाबू ने रामकिशन का आदर सत्कार किया जमाई बाबू उनके पैर पड़के आशीर्वाद लेना चाहा , पर रामकिशन ने खुशी - खुशी मना कर दिया । ठाकुराइन तो अच्छे से रामकिशन से हाल - चाल पूछ रही थी । जमाई बाबू और खाने को बोल रहे थे । बाहर पहरेदारो ने जो बेइज्जती की थी वह सब कुछ भूल गए थे । फिर बेटी के हाथ में लड्डु और रोटी का थैला पकड़ा दिया । बेटी की खुशी से टिमटिमाती चहरे पर - चाँद के दाग सी उदासी रामकिशन को दिखाई पडा । वह पूछने ही वाला था कि जमाई बाबू इमलिया को लेकर चले गए । अचानक ठाकुराइन थोड़े दुख के साथ बोलने लगी कि " भाई साहब हमें माफ़ कीजिए , पहरेदार ने जो भी बदतमीज़ी की उसके लिए । वो दरसल शादी बहुत सरल थी ना इसलिए लोग यह नहीं जानते कि आप हमारी बहु के पिता हैं । " नहीं नही ठाकुराइन कोई बात नही हम समझते हैं - रामकिशन बहुत विनम्रता से बोला । अच्छा मैं अभी आती हूँ मुझे एक फोन करता है " । ठाकुराईन फोन के बहाने से वहाँ से चली गई । अब रामकिशन उस बड़े से हॉल में अकेले क्या करता । रामकिशन यह बात सोचकर खुश था कि अगर ठाकुरआईन मेरी इतनी अच्छे से सेवा करती है , तो इमलिया को तो रानी बनाकर रखती होगी ! बहुत खुशनसीब है मेरी बेटी " । तभी रामकिशन को अपनी बेटी के चेहरे की उदासी याद आ गई । " कहा है वह ? | रामकिशन सबर की सीमा पर खडा था , वह तुरंत सोफे में से उठा और हॉल से निकल आया , वह नजारा देखकर रामकिशन चौक गया । " बाप रे ! इतनी बड़ी रसोई घर , इतने सारे मशीने यहां तो सोने के लिए गद्दे बिछाने की भी जरूरत नहीं है । शाँता होती तो कहती कि , " हमें सिर्फ यही कमरा चाहिए सारी जिंदगी कट जाएगी " । वह जितना दूर चलता , उतना ही आश्चर्य उसके मन में भरता । राजाओं की तस्वीरें , उनकी तलवारे तीर और कमान इत्यादि चीजें रखी हुई थी ।रामकिशन ने अनुमान लगाया कि इमलिया का कमरा ऊपर होगा ।वह सीढ़ियां चढ़ने लगा ।जितनी देर रामकिशन उस घर पर था उतनी ही देर अपनी बेटी की सौभाग्य के बारे में सोच कर खुश हो जाता । वह एक - एक कमरे से होकर निकलता । हर कमरे में बहुत सारे चित्र लगे हुए थे । बहुत सुंदर और अर्थमयी चित्रों का भंडार था वह घर । कुछ चित्र देखकर वह चौक जाता , कुछ देखकर वह असमंजस में पड़ जाता , कुछ देखकर वह दुखी हो जाता ।

रामकिशन को बगल वाले कमरे से आवाजें आ रही थी । जमाई बाबू के चिल्लाने की आवाज़ सुनकर रामकिशन एक - दो सेंकड दग रह गया । क्या बेला था मैंने अपने घरवालों को मेरे घर से दूर रखना । स्वरा , तुम उन्हें बुलाकर मेरी इज्जत उजाड़ना चाहती हो ? " जमाई बाबू आक्रोश में थे । उनका गुस्सा सातवें आसमान में था । रामकिशन उस कमरे से झांककर देखा मोतीचूर के लड्डू और मोटी रोटी ज़मीन पर गिरे पड़े थे । इमली रो रही थी , वो थीमे स्वर मे बोली , " बाबा को मैंने नहीं बुलाया " | रामकिशन की आँखो से सूखे आँसू बहने लगे । वो उस आलीशन बंग्ले से भागना चाहता था । जमाई बाबू का स्वर रामकिशन के कानों में गूंज रहा था । आ जाते है मेहमान के रवैये में ठाकुरो को बेइज्जत करने " |

रामकिशान जल्दी से हॉल पहुँचा | वहाँ तब तक बहुत मेहमान आ चुके थे । वो बहुत बडे लोग लग रहे थे । रामकिशन को देखने के बाद सबकी नजर ठाकुराईन की और चली गई । उसमें से एक औरत रामकिशन को तिरछी नजरों से देखते हुए बोली " ये कौन है रेगस ? ठाकुरों के घर में दो टक्के के लोग क्या कर रहे है ? डोण्ड से कि ये तुम्हारे मेहमान है " | ठाकुराईन अपनी साड़ी ठीक करते हुए बोली , " मेहमान नहीं बिन बुलाये मेहमान , छोड़ो न हम अपनी पार्टी शुरू करे है । उस दिन रामकिशन ने ठान लिया कि अब दोबारा इस घर कदम भी नहीं रखूगा | जितना बडा उनका घर है उतनी ही खोखली इनकी बातें ।

" सुनो जी , इस बार की फसल पिछले साल से ज़्यादा है , तो बेटी के ससुराल में ले जाइए न " शांता बहुत खुशी से बोली । " नहीं शाँता वो लोग तो इससे भी अच्छा खाते होंगे " - रामकिशन अपने मन के हलचल को समेटते हुए बोला । " तुम चले जाओ उन्हे अच्छा लगेगा , मैं अनाज थैले मैं डाल रही हूँ " | शाँता अनाज थैले में डालने लगी अब शाँता को क्या समझाना , उसे थोड़े पता है कि वह अब इमली नहीं स्वरा ठाकुर है । एक साल बाद फिर से इस बिन बुलाये मेहमान को ठाकुरों के घर जाना होगा " | उसने अपना सर हिलाकर एक लंबी सॉस भर ली ।

PADMINI C MENON
2ND DC CHEMISTRY

गीत आलाप

INDUJA S
2ND DC GEOLOGY

SWAPNA SUDHA
2ND DC ZOOLOGY

वर्ष २०२०; हमने क्या खोया, हमनेक्या पाया।

उत्साहो बलवान् नृत्सुतं परम बलम् |
ऊष्टहरम्भ मंत्रेण जायते सर्वस्व पदम्

अंग्रेजी कैलेंडर के अनुसार १ जनवरी से नए साल की शुरूआत मानी जाती है । चूंकि ३१ दिसंबर को एक वर्ष का अंत होने के बाद १ जनवरी से नए अंग्रेजी कैलेंडर वर्ष की शुरूआत होती है । इसलिए इस दिन को पूरी दुनिया में नया साल शुरू होने के उपलक्ष्य में पर्व की तरह मनाया जाता है । नए साल का उत्सव भोजन , फोल और अनुष्ठान से भरपूर होता है ।

चूंकि साल नया है , इसलिए नई उम्मीदें , नए सपने , नए लक्ष्य , नए आईडियाज के साथ इसका स्वागत किया जाता है । नया साल मनाने के पीछे मान्यता है कि साल का पहला दिन अगर उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाए , तो साल भर इसी उत्साह और खुशियों के साथ ही बीतेगा ।

लेकिन वर्ष २०२० कई मायनों में अलग और अनूठा था । इस वर्ष कई अप्रत्याशित , असामान्य और नाटकीय घटनाएं हुईं , जिसने हमें अपनी जीवन शैली को बदलने और नई प्रथाओं को समायोजित करने के लिए मजबूर किया । कई आपदाओं , विशेष रूप से वैश्विक महामारी का दुनिया भर के मनुष्यों के जीवन पर बहुत बड़ा दार्शनिक प्रभाव पड़ा । इसने मनुष्यों को कई मूल्यवान सबक सिखाए जो कि अपने व्यस्त जीवन कार्यक्रम के कारण पहले उपेक्षित थे ।

२०२० में विशेष रूप से लॉकडाउन के कारण लोगों के जीवन में कई सुखद और सकारात्मक अनुभव उत्पन्न हुए , जिससे जीवन की गुणवत्ता में सुधार और कई मायनों में समाज की बेहतरी हुई ।. जहाँ कुछ लोगों ने यूट्यूब से वीडियो देखकर भोजन बनाना सीखा । कुछ लोगों ने घर पर परिवार संग अंताक्षरी खेला , कुछ ने मशहूर चलचित्र और वेब - सेरिस देखा । कुछ लोगों जिन्हे अपने बच्चों के साथ वक़्त बिताने का मौका नहीं मिलता , लॉकडाउन के कारण वह सुअवसर प्राप्त हुआ । बच्चों के साथ वीडियो गेम्स , कैरम जैसे गृहखेल का बड़ो ने आनंद लिया । विद्यालयों में छुट्टी होने के कारण घर बैठकर शिक्षको ने ऑनलाइन क्लासेज का सहारा लिया ताकि विद्यार्थियों की शिक्षा में कोई रूकावट न आये।लोगों को लॉकडाउन के इन कुछ दिनों में अपने दिल में दबे शौक पूरा करने का अवसर मिला । आम आदमी से लेकर बड़े बड़े सेलेब्रटीज़ ने इसका लुफ्त उठाया । किसी ने कोई वाद्य यन्त्र बजाना सीखा , किसी ने नृत्य सीखा और अभ्यास किया जो दैनिक जीवन में असंभव है ।

वायु प्रदुषण में नियंत्रण आ चूका है । नदियों का जल स्वछता की और अग्रसर हो रहा है । यमुना का जल पहले से अधिक साफ़ लग रहा है । वायु , ध्वनि और जल प्रदूषण में गिरावट आयी है जो प्रकृति की दृष्टि से लाभदायक है । परिंदे आकाश में स्वछंद रूप से सैर कर रहे है । वायु पहले के मुकाबले शुद्ध हो गया है | आकाश का रंग नीला है हम सब भूल गए थे । लॉकडाउन की वजह से प्रदुषण में कमी आयी है जिसकी वजह से नीले आसमान को देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है ।

लेकिन ये सभी अच्छे अनुभव २०२० के सामाजिक आर्थिक और विशेष रूप से दार्शनिक स्तर पर मनुष्यों के जीवन में आए नुकसान की भरपाई नहीं कर सकते।वर्ष की शुरुआत अप्रत्याशित रूप से प्राकृतिक आपदाओं जैसे कि जंगल की आग , ज्वालामुखी विस्फोट , बाढ़ , सूखा , चक्रवात और अन्य अनगिनत घटनाओं से हुई । वर्ष २०२० में अमेरिका के नस्लीय भेदभाव की घटना जैसी कई सामाजिक और घरेलू हिंसा देखी गई । अपराध दर और आत्महत्या की रिपोर्ट अमानवीय स्तर पर पहुंच गई थी । बहुत से लोगों ने नौकरी और घर खो दिया और अपने घर में रहने के लिए मजबूर हो गए । अर्थव्यवस्था एक खतरनाक दर से गिर रही थी । विभिन्न समुदायों के बीच कई धार्मिक और सामाजिक संकट भी देखे गए । मानसिक तनाव और अवसाद का एहसास भी था । हमने ऋषि कपूर इरफान खान और सुशांत सिंह राजपूत जैसी कई सुनहरी हस्तियों को खो दिया ।

लेकिन इस साल ने हमें कई सच्चे जीवन के सबक सिखाए । इस साल ने हमें ज़रूरत और विलासिता के अंतर को समझने के लिए मजबूर किया । लॉकडाउन की स्थिति में , दुनिया ने परिवार के साथ अधिक समय बिताया । घर पर अटक जाने के कारण , लोगों ने अपनी पवित्रता को बनाए रखने के तरीकों के बारे में सोचा और इस तरह रचनात्मकता को उबाला - पुराने शौक नए जुनून में बदल गए । पुराने गिटार धूल और ट्यून किए गए थे , और साल पहले शुरू किए गए चित्रों को आखिरकार पूरा किया गया।महामारी से ग्रस्त , इस वर्ष ने हमें सिखाया है कि हम एक दूसरे पर कितना निर्भर हैं । हमारी स्वास्थ्य प्रणाली , खाद्य प्रणाली और आपूर्ति श्रृंखला सभी जुड़े हुए हैं|

नया साल एक नई शुरुआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढ़ने की सीख देता है । पुराने साल में हमने जो भी किया , सीखा , सफल या असफल हुए उससे सीख लेकर , एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिए | जिस प्रकार हम पुराने साल के समाप्त होने पर दुखी नहीं होते बल्कि नए साल का स्वागत बड़े उत्साह और खुशी के साथ करते हैं , उसी तरह जीवन में भी बीते हुए समय को लेकर हमें दुखी नहीं होना चाहिए । जो बीत गया उसके बारे में सोचने की अपेक्षा आने वाले अवसरों का स्वागत करें और उनके जरिए जीवन को बेहतर बनाने की कोशिश करें ।

PARVATHY N.N
1ST DC ECONOMICS

हर कदम ध्यान से

हर कदम तू जागी रहे |
हर कदम पर तेरा ध्यान रहे |
रोज कुछ न कुछ सामना करते रहे |
हजारों मुश्किलें आती रहे |
कोई तुझे समझने की कोशिश न करता रहें |
तुझ पर किसी का ध्यान न रहे
अभाव में तेरे सब शिथिल रहे |
तू सब में एकता भरती रहे |
दूसरों के लिए अपना सपना छोड़ती रहे |
उनका सपना साक्षात करती रहे |
अपने सुखों को छोड परों के दुखों को अपनी रहे |
जब जिंदगी को मुड़कर तू देखती रहे |
केवल स्वयं के लिए कुछ बाकी न रहे |
तू खुद अपने सपने को पूरा करती रहे |
अपने समय को तू बनाती रहे |
अपनी जिंदगी के लिए तू लगातार मेहनत करती रहे |
अपनी मंजिल को प्राप्त करती रहे जिसे पाकर तू
झूमती रहे |

ANAGHA BOSH
1ST DC ENGLISH LITERATURE

पर्यावरण का आवरण जला

मनुष्यजाति की ऊर्जा तथा जीवन काल बनकर रहनेवाला पर्यावरण की हरियाली हमेशा हमारे मन को रोमांचित करती हैं | सदियों से यह हमारी सांस बनकर रही हैं , और हमें जोश देती हैं | हर एक मनुष्य अपना पहला कदम इस मिट्टी पर रखता हैं | इसके दैनिक जीवन में उसकी माँ बनकर , छाया बनकर , भोजन बनकर देती हैं |

लेकिन आज , नए युग के बच्चे यह सब भूल जाने की कगार पर है जो भयानक रूप से प्रकृति में दिखाई पड़ता है | अपने स्वार्थलाभ के लिए प्रकृति की चीजों का दुरुपयोग कर उसकी ऊर्जा स्रोतों का नाश करके आज मानव आगे बढते जा रहे हैं | पेड़ों को काटकर अन्य जीव जाल के आवास स्थान को उजाड़ देते हैं | बड़े-बड़े कंक्रीट के मकानों को बनाने के लिए खेतों को , नदियों और समुद्रो के स्थान घटाकर बनाते है | इंधनों के ज्यादा उपयोग के कारण होने वाली वायु प्रदूषण और कारखानों से उड़ने वाली विषैले धुएँ ,आज हमारी प्राण वायु को नष्ट कर रही हैं |

अनियंत्रित जल तथा धरती के प्रदूषण से सारे जीव जंतुओं के जीवन के लिए नुकसान पहुंचा है | इन गतिविधियों से होनेवाली जलवायु परिवर्तन के वजह से धरती के तापमान बढा जिससे बडे बडे हिम पिघलाते है और समुद्र के किनारे जानेवाले लोग के मन में आशंका बढती हैं |

अगर यह हालत चलते रहे इस धरती में जीना भी असंभव हो जाएगा | इसलिए हमे प्रकृति के रक्षक बनने के लिए हम सब को आगे आना होगा | इस धरती को अपनी माँ मानकर , उनका सम्मान करते हुए उनकी देखभाल करनी ही होगी| यह भूमि हमारी आने वाली पीढ़ियों को भी सुगमता से उपयोग करने के लिए है , यह बात मन में रखे , हम अपनी प्रगति की चिंताओं को सही रास्ते की ओर ले जाना चाहिए | जिससे हमारे पर्यावरण को नुकासान न पहुँचे । बस सबको हाथों में हाथ लेकर यही समझाना है | क्योंकि हमे प्रकृति को बचाना है |

"जहाँ होगी खुशहाल प्रकृति , वहाँ चलती रहेगी जिन्दगी की गति ।

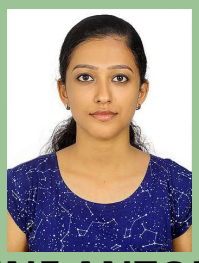

IRINE ANTONY
2ND DC GEOLOGY

राधेय की मित्रता की यादों मे

मैं पहली बार राधेय से रण भूमि में मिला था । वो एक सिंह जैसा अर्जुन से युद्ध कर रहा था । उसे मिलकर ऐसा लगा अपनी रूह का खोया हुआ हिस्सा मिला । मैं,हस्तिनापुर का भावि साम्राट दुर्योदन के मन में शांति थी। जो मुझे मामा शकुनी की षडयंत्र से भी कभी नही मिला । वो अब अंगराज बन चुका था, उस से भी ऊपर वह मेरा सच्चा मित्र राधेय बन चुका था।

इन्द्रप्रस्थ से लौटते समय मेरा मन आग में जल रहा था। मामा श्री ने मुझे अकेला छोडने का निर्णय किया । मैं ने स्वयं अपने कक्ष में बंद किया था। वह हुआ मेरा अपमान मुझे जला रहा था। उस समय मेरे कंधे पर एक हाथ मैंने महसूस किया । वो ओर कोई नहीं था, मेरा राधेय था। उसने कहा – " , मित्र तुम्हे शोक मानने की कोई आवश्यकता नहीं है जब तक मैं तुम्हारे साथ हूँ । आज्ञा दो इसी क्षण इन्द्रप्रस्थ जीत लाऊँगा।" मेरा मन शांत हुआ । क्योंकि वह मुझे सबसे अधिक समझता था ।

महीने बीते – पांडव वनवास चले गये । राधेय ने चारों दिशाओं में अपने दिग्विजय प्राप्त किया था । जब व ह हस्तिनापुर लौटा, मैने स्वयं उसका स्वागत किया । मेरे पिताश्री ने उससे कहा –" राधेय तुम मुझे मेरे पुत्र जैसे ही प्रिय हो । कभी भी दुर्योधन का साथ मत छोड़ना ।" राधेय मुसकुराकर बोला-" महाराज, मैं दुर्योधन से ऐसा जुड़ा हूँ जैसे आत्म- शरीर से जुडी हो । मैं तब तक मित्र दुर्योधन के साथ नहीं छोडूँगा जब तक मैं ज़िंदा हूँ ।" राधेय की यह बात सुनकर मेरा मन खुश हुआ | मे रे चेहरे पर आँसु की एक बूँद उसने महसूस किया |

दिन बीते, महीने बीते, वर्ष बीते | पांडव अपने वनवास से लौट आये और आरंभ हुआ सबसे विभीषण युद्ध । ये युद्ध रोकना आसान था | परंतु भाग्य नहीं चाहता है । मैं जानता था मेरे राधेय का साथ मुझे हारना नहीं देगा । परंतु 17 दिन मेरे जीवन के पासे पलटे। राधेय का रथ का चक्र धरती में थस गया । राधेय चक्र निकालने लगा । उस के बाद जो कुछ भी हुआ वह समस्त संसार जानता था | मैं कुछ न कर पाया । मैं नेआँसु नहीं बहाये क्योंकि मेरे आँसु पोंछनेवाला राधेय मेरा अश्रु पोछ पाएगा । उसकी आँखो में आत्म ग्लानी मैंने महसूस किया और उसने कहा –" मित्र फिर मिलेंगे । मेरे राधेय ने प्रस्थान किया । हमेशा - हमेशा के लिए | राधेय के बिना इस रण मैं जीत पाऊंगा ? "

मैं आ रहा हूँ राधेय । महाबली दुर्योदन मरणासन्न है । आप ने जो कुछ भी मेरे इस जीवन यात्रा के बारे में सुना वह सब मैं ग्रस्तवस्ता में बता रहा था । ये हरी - घास मेरे रक्त से सनी हुई है। कल राधेय के नेत्रों में जो आत्मग्लानी मैंने देखा था उसका कारण मैं जान चुका हुँ। वो कौधेय था । इस बात से मैं नाराज़ नहीं हु | माता कुती की एक भूल मेरे लिए वरदान था | राधेय ने अपने जीवन का सबसे बड़ा सच जानने के बाद भी मेरे लिए लड़ा अंतिम सांस तक लड़ा । मैं इस बात से खुश हुँ । मुझे अधिक समय तक अपने राधेय से दूर नहीं रहना पड़ेगा मेरी आँख मेरे साथ नहीं दे रही थी । मेरी आँख के समक्ष सब कुछ धूल है। एक पीले वस्तु मेरे ओर आते हुए देख पा रहा हुँ । वह पीली वस्तु मेरे समक्ष खड़ा है | कोमल ऊंगलियों मेरे केश पर महसूस कर पा रहा हुँ । वो प्रिय भानुमति है, नहीं । मित्र अशोधामा है – नहीं, ये एक रण भूमि मैं लड़ते आदमी की ऊँगलियाँ नहीं, वो कौन है ? और कौन है ? मैं एक हाँसी मेहसूस कर पा रहा हुँ । हाँ, मैं अब जान चुका हुँ, ये कौन है ? –" क्यों आये है आप यहाँ । मेरी चेष्टा करने आए है" । एक अश्रु बूँद मेरे चेहरे पर गिरी । ये आप ही है वसुदेव । ये अश्रु मेरी पीड़ा महसूस करने के कारण बह रहे है । आज न जाने क्यों आपकी मुस्कान का कारण मैं समझ पा रहा हुँ । दुनिया के द्वारा कनायक कहे जाने दुर्योदन को अपने राधेय की मित्रता कही न कही नायक बना दिया था ।" मैं आ रहा हुँ राधेय" ।

"दुविधा के समय जो व्यक्ति हमारा साथ निभाता है,
वही तो सच्चा मित्र कहलाता है" ।

TITUS VARGHESE
1ST DC ECONOMICS

क्रिस्टियानो रोनाल्डो

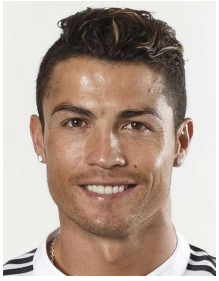

क्रिस्त्यानो रोनाल्डो डॉस सौटोस अवियरो(जन्म:5 फरवरी 1985) जिसे आमतौर पर क्रिस्त्यानो रोनाल्डो के नाम से जाना जाता है, एक पूर्तगाली पेशेवर फुटबॉल खिलाड़ी है जो इतालवी फुटबॉल क्लब युवेन्टस केलिए और पूर्तगाली की राष्ट्रीय टीम का कप्तान है| आज रोनाल्डो के फुटबॉल की बहतरीन युवा श्रतिमाओ में से एक माना जाता है| इन्होंने अपना स्वर्णिम समय स्पेनिश क्लब रीयल मेड्रिड में बिताया है |इन लर टेक्स में चोरी और हेराफेरी के कई बार आरोप ओर जुर्माने लग चुके है|जार्जिना रोड्रिग्स क्व साथ ये कई वर्षो से अंतरंग संबंधों में है|

जीवनी:क्रिस्त्यानो रोनाल्डो के जन्म पूर्तगाल में फनचल मदिरा में 5 फरवरी 1985 को माता मरिया डालोरेस हॉस सैंटोस अवियरी और पिता जोस डिनिस अवियरो के यहाँ हुआ था| क्रिस्त्यानो रोनाल्डो का एक भाई ह्यूगो और दो बहन एल्मा और कातिय हैं| क्रिस्त्यानो रोनाल्डो के नाम का दूसरा भाग पूर्तगाल में अपेक्षाकृत दुर्लभ है|उसके माता पिता के उसका यह नाम अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति रोनाल्ड रिगन के नाम पर रखा था क्योंकि वह अपने पिता के पसंदीदा अभिनेता थे और इसे नामकरण के पीछे रोनाल्ड रिगन अमेरिका का राष्ट्रपति होना कोई कारण नहीं था|2010 से इरिना श्याक के साथ संबंध में है|

क्लब कैरियर:स्पोर्टिगा सि. पि 16 साल कि उम्र में रोनाल्डो का स्पोर्टिगा की युवा टीम से प्रथम टीम मैनेजर लास्ज़लो बोल्लोनि द्वारा पदोन्नत किया गया था, जो उनके ड्रिब्लिंग से प्रमावित थे| बाद में वह क्लब के अंडर 16 अंडर 17 और अंडर 18 टीमों, बी टीम और पहली टीम के लिए खेलने वाले पहले खिलाड़ी बन गए एक ही सीज़न के अंदर थे| एक साल बाद 7 अकतूबर को रोनाल्डो ने प्रिमियर लीग में मोरेन्सस के खिलाफ अपनी शुरुआत की ओर 3-6 की जीत में दो गोल किए| 2002-03 सीज़न के दौरान उनके प्रतिनिधियों में लिवरपूल के मैनेजर गियार्ड होउलियार और बार्सिलोना के अध्यक्ष जोन लपार्त को सुझाव दिया |प्रबंधक आर्सेनल वेंगर जो कि विजर पर हस्ताक्षर करने में रुचि रखते थे| ने संभावित हस्तांतरण पर चर्चा करने के लिए नवंबर में आर्सेनल के मैदान में उनसे मुलाकात की| मैनचेस्टर यूनाईटेडस के प्रबंधक एलेक्स फगर्यूसन, हालांकि,रोनॉलडो को एक स्थायी कदम पर तुरंत प्राप्त करने के लिए ढूढ था, सपोर्टिंग के बाद अगस्त 2003 में एस्टाडियो जोस अलवालडे के 3-1 से हराया था। शुरुवात में यूनाइटेड ने सिर्फ रोनॉलडो पर हस्ताक्षर करने की योजना बनाई थी और फिर ऋण उसे एक वर्ष के लिए स्पोर्टिंग में वापस लाया गया हालांकि, उससे प्रभावित होकर मैनचेस्टर यूनाइटेड के खिलाड़ियो ने फगर्यूसन से उस पर हस्ताक्षर करने का आग्रह किया। खेल के बाद, फगर्यूसन ने स्पोर्टिंग £12.24 मिलियन का भुगतान करने के लिए सहमति व्यक्त की, जिससे उन्होंने "सबसे रोमांचित युवा खिलाडियों में से एक" माना था। क्लब सर जाने के एक दशक बाद अप्रैल 2013 में , स्पोर्टिंग ने रोनॉलडो का उनका 100,000 सदस्य बनने के लिए चुनकर सम्मानित किया।

AMJAD IQBAL KAKKASSERY
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

देखा नहीं था मैंने पापा को

वेतन मिला मुझको
आज पहली बार
पापा के लिए कुछ नहीं
मम्मी के लिए साड़ी खरीदी चार |
बचपन में पापा की शिकायत
मां का दुलार व प्यार
हर वक्त याद आता है मुझको
मुझे गोद में लेकर ना थपथपाया
पापा ने ना हंसाया ना खिलाया
यही बात खटकती थी मुझको ।
उस दिन से सोचा था मैंने
उस दुनिया से हटकर
दूसरा आशियाना बनाना है मुझको ।
पापा ना हमारे लिए जीते थे
ना ही हम से कुछ कहते थे
ना ही मेहनत करते थे
ना ही अच्छे कपड़े पहनते थे
पर इन से हटकर मेरी जीत का एहसास था मुझको ।
किसी ने ऐसी चुभी बात बताई ।
जीत के अंधेपन में यह बात नहीं समझ में आई ।
आखिर वे भी तो मेरे पापा है ।
खरीदा मैंने उनके लिए तोहफा
पहुंची जब मैं उनके पास
राख में तब्दील हो गई थी उनकी अर्थी और आस
पहुंचने में बहुत देर लगी थी मुझको
इसलिए देखा नहीं था मैंने पापा को ।

BINDHYA .A.B
1ST DC ZOOLOGY

गुलाब

गुलाब एक झाड़ीदार कटीला और खुशबूदार फूल जो कि सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इसे फूलों का राजा भी कहा जाता है। इसके आकार कोमा कद और रंग का आधार पर इसकी १०० से भी ज्यादा प्रजातियां पाई जाती है।मौसम के अनुसार भी इस की दो प्रजातियो में विभाजित किया जाता है। गुलाबयूरोप के बहुत से देशों का राष्ट्रीय फूल है । गुलाब को अलग-अलग भाषा में अलग अलग नाम से पुकारा जाता है।

गुलाब में औषधीय गुण होने के कारण इसे बहुत सी दवाइयां बनाने के लिए प्रयोग किया जाता है। गुलाब के फूलों की खेती कर उनसे धन अर्जित किया जाता है। दक्षिण भारत में गुलाब के फूलों की विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है। इस से इत्र बनाने के लिए बड़े-बड़े उद्योग लगाकर उनसे धन कमाया जाता है। गुलाब का फूल बहुत ही कमाल होता है। गुलाब का फूल नेहरू जी को बहुत ही प्रिय था। हर साल 12 फरवरी को गुलाब दिवस मनाया जाता है। यह कहने की बजाय की ईश्वर ने फूलों के साथ कांटे बनाए, हमें ईश्वर को शुक्रिया कहना चाहिए कि उन्होंने कांटों के साथ फूल भी बनाएं: “प्यार एक जंगली गुलाब की तरह है, सुंदर और शांत, लेकिन अपने बचाव में दूसरो का खून बहाने के लिए तैयार हैं। प्यार भरी जिंदगी में कुछ कांटे जरूर होते हैं, लेकिन जिंदगी खाली होती है। कांटा छोटा सा नुकीला होता है ।गुलाब की रक्षा करने केलिए वह शत्रुओ के देह मे चुभ जाता है।। भगवान ने गुलाब की सुंदरता को अच्छा डिजाइन दिया और उसके संरक्षण के लिए कांटे डाल दिए।

बाइबिल में कांटो को पाप, दुख और कठिनाई को नकारते हुए कांटा दुनिया के सबसे प्राचीन प्रतीकों में से एक है: गुलाब के साथ मिलकर, यह दर्द और खुशी का प्रतिनिधित्व करता है, और कांटा मसीह के जुनून का प्रतीक है,जैसे की कांटो के मुकुट के साथ है ।

ROSE MARIYA PAUI
1ST DC B.COM

एक रुपए

एक गांव में एक गरीब परिवार रहता था। उस परिवार मे पिता एकमात्र कमाने वाला सदस्य था वह अपने परिवार को गरीबी से बचाए रखता था। पर उनका बेटा बड़ा आलसी था। एक दिन पिता ने उसे सुधारने का निर्णय लिया अपने बेटे से कहा, "बेटा, अगर अब से यहां भोजन खाना है तो हर दिन एक रुपए घर लाना होगा।"
अगले दिन वह लड़का एक रुपए की तलाश में निकला। पड़ोसी से मिलने पर उससे एक रुपए उधार में लिया। दोपहर के समय पिता घर के सामने खड़े थे। उस लड़के ने खुशी खुशी अपना ₹1 रुपया दिखाया, तब उसके पिता ने उससे वह रुपैया कुएं में फेंकने को कहा। वह लड़का कुछ सोचे बिना उधार लिया हुआ एक रुपए कुएं में फेंक देता है और अंदर जाकर खाना खाता है। इस तरह गांव के किसी भी पड़ोसी से एक रुपए उधार लेना, उसे कुएं में फेंकना और खाना खाना कुछ दिन ऐसे ही चला। पर थोड़े दिनों बाद के बाद उसे पैसे उधार लिए हुए पडोसियों से पैसे माँगने में शर्म आई। इसलिए वह खाली हाथ घर आया । उस दिन उसे खाने को कुछ ना मिला। अगले दिन सुबह होते ही वह उठा खेत की और गया और कड़ी मेहनत करने लगा ऐसे काम करके उस दिन पहली कमाई मिली। खुशी उसी आँखों में थी वह थका और पसीने में भीग कर घर आता है। हमेशा की तरह उसके पिता घर के द्वार पर खड़े थे। लड़का अपने पिता को गर्व से कमाया हुआ रुपए दिखाता है, हमेशा की तरह उसके पिता ने सिक्का कुएं में फेंकने को कहा पर इस बार उसे सुनकर दर्द हुआ | उसने कहा, "नहीं पापा, मैं इसे फेंक नहीं सकता, बहुत मेहनत से कमाया।" पिता के मुंह पर एक मुस्कान फैल गई वे अपने बेटे को गले लगा कर घर ले आते है और वह लड़का पहली बार भोजन अपनी मेहनत के स्वाद के साथ खाता है।

JOSEPH ANTO
2ND DC PHYSICS

SWATHI V NAIR
2ND DC GEOLOGY

भयानक रात की बात

ठंड की रात थी,मैं रात का खाना खा कर सोने चल गयी ।मैं सोने के लिए अपने बिस्तर पर लेट गयी ।कुछ देर बाद मेरी आँख लग गयी मैंने एक बडा भचानक सपना देखा जिससे मेरे पसीने छूट गये । जिससे मैं ठीक से सो नहीं पायी। क्योंकि डर मुझे सोने नही दे रहा था । ऊपर से खिडकियो के परदे पर आने वाली परछाई देखकर मेरी रूह काँप गई ।मैं डर के मारे अपने लिविंग रूम में चली गयी और टेलीविज़न चालू कर दिया। उस में भी भूत प्रेत की फिल्म आ रही थी । तो डर और बढ गया और मैने चैनल बदल दिया । मन में भूत -प्रेत वाली चिन्ताएँ थी ।जब में टेलीविज़न देख रहीथा तो मुझे अपने घर के बाहर कुछ अजीब सी आवाज सुनाई पडी।मुझे डर लग रहा था। मैंने सोचा कि वह आवाज़ किस की हो सकती है। कोई आत्म तो नही है। मेरा डर मुझे यह जानने ही नही दे रहा था कि यहआवाज कहां से आ रही है ।इसलिए मैंने अपने कुर्सी पर दुबक्कर बैठ गई। कुछ देर बाद मैंने सुना कि कोई व्यक्ति दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। यह देखकर मैं और भी डर गई थी ' अपनी माँ के कमरे में गयी और उन्हे सब कुछ बताया। हम एक साथ दरवाजे की ओर गए और उसे खोला।दरवाज़ा खोलने पर हमें एक बॉक्स दिखाई दिया। डर कर हमने इसे धीरे से खोला।यह देखकर मैं दंग रह गई।यह एक सुंदर क्रिम केक था।मैंने सुना कि 'जन्मदिन मुबारक हो' ।मैं बहूत आश्चर्यचकित था, क्योंकि यह मेरा जन्मदिन था।मेरे चचेरे भाईयों ने मेरे लिए एक छोटी पार्टी की व्यवस्था की।मैं बहूत उत्साहित हूँ।यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा जन्मदिन था। जो मैं कभी नही भूल सकती

PRIYAMOL T KURIAN
2ND DC PHYSICS

मोत से मोहबत

सुना है कि मोहब्बत से, सब बदल जाते हैं
चाहे कितने भी बुरे हो, सुधर जाते हैं ।
पर हम को मोहब्बत मौत से हुई
ओर हाँ, उसे भी प्यार हमसे हुआ।
अब वे भी हमारे प्यार में बेचैन है ।
एक गहरी सोच में डूबी हुई हुँ
यहीं कि, इसे जीने दूँ
या अपने साथ चलने दूँ

A PRAVEENA
1ST DC ENGLISH LITERATURE

प्यारी दादी

अस्पष्ट, अतीत की यादों को सजाया है
दुखों को हमेशा सह कर दबाया हैं।
मेरे पास आज जो है वह मेरे में समाया है
उनकी यादों को मैंने दिल मे बसाया है
मन में मेरे एक चेहरा आया है।
उनकी आवाज़ में नम्रता को पाया है।
परोपकार से उन्होने अपना नाम कमाया है।
आर्शीवाद उनका मेरे ऊपर छाया है।
मैंने भी उनकी राह पर चलने का बीडा उठाया है।

MRINAL RAJESH
2ND DC GEOLOGY

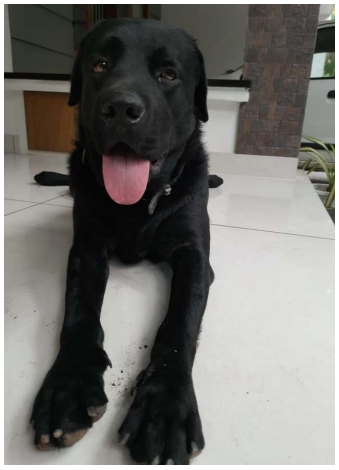

नन्हे काले मेघा

काले मेघा पानी दे' - श्री धरमवीर भारती जी की कृति है जिसमें काले मेघा ने पानी देकर लोगों की प्यास बुझायी। अगर उस कृति में काले मेघा ने पानी दिया तो मुझे काले मेघा ने एक नन्हा सा काले मेघा को ही दिया और वो है – मेरा 'ओरियो'

काले रंग का लैब्राडोग है जिस की गोल -गोल आँखें ,काले फर और एक हिलती हुई पूंछ भी है । वह घर की देखभाल करता है । और मुझे पूरे दिल से प्यार करता है । हर वक्त मेरे पीछे घूमता भी है । मुझे बचपन से ही एक कुत्ते को पालने की इच्छा थी और उसका सही समय 29 अप्रैल 2019 को आया, इसी दिन मुझे 'ओरियो' मिली थी । वो पिछले 2 वर्षों से हमारे साथ है ।

'ओरियो' बहुत शरारती है, नटखट है, प्यारी है, और वह हम सब की प्यारी है । हम साथ में खेलते हैं, दौड़ते हैं, कूदते हैं, और हर तरह की शरारत करते हैं । कभी-कभी मुझे परेशान भी करती है । कुछ समय के लिए उसके साथ घुल मिल जाने के बाद हर किसी की वह चहेती बन गई है । वह ।

असल में पालतू जानवर के रूप में कुत्ते को पालना एक अद्भुत एहसास ही है ।

ATHMAJA .M
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

LAKSHMIPRIYA.S.MENON
1ST DC GEOLOGY

पड़ी अकेली

बिजली कड़की जोर से
सहसा शोर हुआ बगीचे से
देखा जब बाहर झरोखे से
हैरान हो उठी मैं अंदर से
मेरी आंखों के सामने से
अकल्पनीय दृश्य लगा जाने कैसे
कभी हो सकता है जीवन में ऐसे
अकेली हूं मैं घर में जैसे
छोटी मूर्ति को स्थापित किया वैसे
सब टीकाकरण में गए जाने कैसे
इसलिए अकेली पड़ गई थी मैं ऐसे

P.M ASHA LAKSHMI
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

सपनों का घर

रात के अंधकार को चीर कर आने वाले रोशनी । एक कुटिया से ये रोशनी आ रही है । उस कुटिया की अंदर एक मज़दूरिन अपने सोते हुए तीन बच्चों के पास बैठकर कुछ सोच में पड़ी है । उसकी आंखों में परेशानी और बेबसी है । बैठे-बैठे वह सो गयी । उसने अपनी नींद में एक सपना देखा । एक विकसित शहर । इस शहर के कोण में दो मंजिलों वाला घर ।

उस घर के अंदर अच्छे कपड़े पहने हुए बच्चे खेल रहे है । घर के अंदर से एक युवती महंगे कपड़े पहनकर आती है । वह बहुत ही सुंदर दिखाई देती है | उसके घर में कई कमरे थे | पूजा करने का कमरा दूसरी मंजिल पर बना हुआ था | उसका फर्श सफेद संगेमरमर से बनाया हुआ था | वह बहुत ही खुश थी | तभी कोई घर का दरवाजा खट-खटाता है | जिससे उसका सपना टूट जाता है और वह उठकर दरवाजा खोल कर देखती है कि एक आदमी उसके हाथ में बड़ा सा कागज थमा देता है | जब वह पढ़ कर देखती है तो उससे दुःख होता है | क्योंकि वह बैंक का नोटिस था |

AJAY M
1ST DC BCOM

दोस्ती

दोस्त तो दोस्त है
तुम्हारी भी खास बात है ।
सभी खुशियाँ में मेरे साथ है ।
सभी मुश्किलो मे तुम मेरे साथ हो ।
तुम ही हो मेरा बल,
तुम ही हो मेरा हल
तुम बिन अकेले , कैसे तैर सकूँगा ?
कितनी बार रही उदास
जब तुम न थे पास
कितने ही लक्ष्य जीती हूँ
अपने बल के बूत
क्योंकि बनाया था तुमने मुझे मज़बूत |
वास्तव में दोस्ती एक शान है ।
यह ईश्वर का वरदान है |

SWATHI
1ST DC PHYSICS

ग्रेटा थनबर्ग

ग्रेटा टिनटिन एलोनोरा एर्ममन थनबर्ग स्वीडन की एक पर्यावरण कार्यकर्ता हैं। जिनको पर्यावरण आंदोलन अन्तरराष्ट्रीय ख्याति मिली है। स्वीडन की इस किशोरी के अंदोलनों के फलस्वरूप विश्व के नेता अब जलवायु परिवर्तत पर कार्य करने के लिए विवश हूए है। आगस्त २०१८ में, १५ की उम्र में, थनबर्ग ने स्कूल से समय निकालकर हाथ में स्वीडन की भाषा में " Skolstrejk for klimatet"(जलवायु के लिए स्कूलबंदी) लिखी तखती लिए स्वीकन की संसद के बाहर प्रदर्शन करना शुरू किया।

ग्रेटा थनबर्ग का जन्म ३ जानवरी २००३को स्टॉकहोम, स्वीडन में हूआ। उनकी माँ मलेना अर्नमैन एक ओपेरा गायिका है एवं पिता स्वान्ते थनबर्ग एक अभिनेता है। उनके दादा अभिनेता और निर्देशक ओलोफ थनबर्ग थे। ग्रेटा पर्यावरण और जलवायु संकट का अहम चेहरा बन चुकी है। सबसे पहला ग्रेटा ने अपने ही माँ-बाप को ऐसी जीवनशैली अपनाने के लिए मनाया। २०१८में जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर लोगों में जागरूकता पैदा क२ने के लिए ग्रेटा ने स्वीडन की संसद के बाहर विरोध-प्रदर्शन के लिए हर शुक्रवार अपना स्कूल छोडा था। जिसे देखकर कई देशों ने #फ्राइडेज फॉर फ्यूचर के साथ एक मुहिम शुरू हो गई। २०११ में जब थनबर्ग ने संयुक्त राष्ट्र के जलवायु परिवर्तन सम्मेलन को संबोधित किया, उसके बाद तो प्रत्येक सप्ताह विश्व के किसी न किसी भाग में छात्रों की हडाताल हुई। इस बात का विचार करके कि बार-बार हवाई यात्रा न करने पडे, ग्रेटा समूद्री जहाज से जलवायु कर्वाई शिखर सम्मेलन में भाग लिया।

उनकी अकस्मात प्रसिध्दि से एक तरफ वे नेता बन गयीं है। तो दूसरी तरफ बहूत से लोग उनकी आलोचना भी कर रहे है। विश्व स्तर पर उनके प्रभाव को कूछ लोग 'ग्रेटा प्रभाव की संज्ञा देने लगे है। ग्रेटा को ओकानेक पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हूए है। जिनमें से प्रमुख ये है . स्कॉटलैण्ड की शाही भौगोलिक सोसयटी की मानव सदस्यता, टाइम पत्रिका द्वारा १०० सर्वाधिक प्रभावी लोगों की सूची में उनका नाम शामिल करना और वर्ष की सबसे यूवा टाइम-व्यक्ति घोषित करना, फोर्ब्स पत्रिका में प्रभावशाली स्तियों में उनका नाम सम्मिलित करना और दो बार नोबेल पुरस्कार के लिए उन्हें नामित करना शामिल है।११ दिसम्बर २०१९ को इन्हें 'टाइम पर्सन आफ द इयर' पूरस्कार प्रदान किया गया।

ग्रेटा अपने सीधे-साधे शब्दों में बात करने के लिए भी जाती है। अपनी सार्वजनिक सभाओं में और २ाजानीतिक नेताओं के साथ वार्ता में वे जलवायु संकट पर तुरंत कार्यवाही करने का आग्रह करती है।

ANNA MARIA
2ND DC PHYSICS

बिल्ली और बंदर

एक जगंल में दो बिल्लियां रहती थी। दोनों में गहरी दोस्ती थी। उनको अगर खाने को कुछ मिलता तो दोनों मिलजुलकर खाती। एक दिन उन्हें रोटी का एक टुकड़ा मिलता है। दोनों आधा - आधा करके खाने को होते हैं तभी एक भूखा बंदर उनके पास आता है। वह पहली बिलली से कहता है कि तुम्हारा टुकड़ा छोटा है।

तुम्हरे दोस्त का टुकड़ा बड़ा है। लगता है तुम दोनों ने सही तरीके से टुकड़े नहीं किये है। मैं तुम्हारी मद्द करूँ। पहली बिल्ली बोलती है बंदर जी यह सही कहा। लेकिन वह मेरा पक्का दोस्त है। दोस्ती में छोटा बड़ा कुछ नहीं होता। उसने बडा ले लिया तो क्या हुआ। हे तो मेरा दोस्त ही।

आप चुप -चाप नौ दो ग्यारह हो जाइए, हम आपकी बातों में आने वाले नहीं।

BABU JILANI MOMIN
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

भारतीय त्योहार

भारतीय अपने त्योहारों को विशेष महत्व देते हैं । यह क्षेत्रीय त्यौहार हों या राष्ट्रीय त्योहार हमारे देश में सभी त्यौहार प्रेम और उल्लास के साथ मनाए जाते हैं । इनमें से अधिकांश त्योहारों पर स्कूलों , कॉलेजों और कार्यालयों में अवकाश होता है ।

भारत में त्योहारों के महत्व को बहुत अच्छे से देखा जा सकता है | लोग न केवल घर पर त्यौहार मनाते हैं बल्कि अपते निकट और प्रिय लोगों के साथ उन्हें मनाने के लिए भी जाते हैं। उत्सव स्कूलों और कार्यस्थलों में भी किया जाता है। हमारी संस्कृति धार्मिक प्रथाओं के लिए उच्च सम्मान रखती है। भारत में लोग ज्यादातर धार्मिक प्रवृति में लीन रहना सबसे अच्छा मानते है । क्योंकि इससे सकारात्मक सोच बनती है और लोग कुछ हद तक अच्छे कार्य करने में लग जाते है ।चूंकि , भारतीय त्यौहारों से जुडी कुछ धार्मिक धारणाएँ हैं , भारतीय अपने देवताओं को खुश करने और अपने जीवन में सकारात्मकता और खुशियाँ लाने के लिए पूरे मन से मनाते हैं । मिसाल के तैर पर, दिवाली भगवान राम के अपने गृह नगर अयोध्या में लिए मनाई जाती है। जन्माष्टमी भगवान कृष्ण के जन्म का जश्न मनाते है, दुर्गा पूजा देवी दुर्गा की प्रार्थना करने के लिए मनाई जाती है और उनके विभित्र अवतार और गणेश चतुर्थी भगवान गणेश की पूजा करने के लिए मनाई जाती है।

त्योहार का समय हिंदू धर्म के अनुसार शुभ माना जाता है । यह एक और कारण है कि लिए इस समय को महत्व क्यों देते हैं । वे जीवन में कुछ भी शुरू करने के लिए इस समय का इंतजार करते हैं ताकि एक अच्छे नोट पर शुरुआत कर सकें। उदाहरण के लिए , लोगों का मानना है कि नवरात्रों के दौरान या दिवाली के अवसर पर नए घर में जाना सौभाग्य में लाता है , इसी तरह गणेश उत्सव के दौरान या मकर संक्रांति के दौरान नई नौकारी में उन्नित उनके लिए अच्छा साबित हो सकती है। इस तरह , बैसाखी , गुरु पूर्णिमा , पोंगल , महा शिवरात्रि , राम नवमी , बसंत पंचमी और अक्षयतृितया जैसे कई अन्य त्यौहारों को बहुत शुभ माना जाता है। और विशेष रूप से कुछ नया शुरू करने के लिए इंतजार किया जाता है। जैसे कि एक नई दुकान खरीदना , व्यवसाय शुरू करना , हस्तक्षार करना । एक बड़ा व्यापारिका सौदा , शादी की तारीख तय करना , आदि।

इस प्रकार , त्यौहार भारतीयों के लिए उच्च महत्व रखते हैं। चाहे वे भारत में रहों या विदेश में , भारतीय अपने त्योहारों को विशेष महत्व देते हैं और उन्हें खुशी और खूशी के साथ मनाते हैं।

SAYANA SUBRAMANIAN
2ND DC PHYSICS

SWAPNA SUDHA
2ND DC ZOOLOGY

ना जाने हम कब बड़े हो गए
स्कूल के दिन ना जाने कहां खो गए
दोस्तों की बात हमे जब भी याद आती है
मन मे एक अनोखी मस्ती छा जाती है
स्कूल की शरारत की बात आती है
टीचर का डंडा और दोस्तो की रुलाई मन मे आ जाती है
उन लम्हों को याद करके एक खुशी छलक आती ह

KRISHNACHANDRAN M
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

रिश्तो की जड़ें

अलग हो रहे रिश्तों की जड़ें
चारों ओर देखने लगती हैं |
आप ने मुझे नहीं जाना,
मैंने तुम तक पहुँचने की हिम्मत नहीं की |
मैंने देखा उस मिट्टी के नीचे
तुम्हारी मुरझाई हुई जड़ें |
यदि आपकी जड़ें कमजोर हैं,
तो वे सब व्यर्थ हैं |
आप याद रखें कि
पैतृक मूल्य हैं मनुष्य के आधार |
कोई फर्क न पड़ता कि हम कितने अलग,
हमारा स्रोत एक ही है |
अंधी दुनिया को पुनः प्राप्त करने
रिश्ते की जड़ें फैलनी चाहिए |
जब बिखरी हुई जड़ें एक साथ आती
तो उसमें प्राण वायु होती है |
साथ मिलकर हम मजबूत बन
सकते
धरती पर हमेशा के लिए ||

AGNES PJ
2ND DC CHEMISTRY

इरफान खान

इरफान खान का जन्म एक मुस्लिम परिवार मे 7 जानवरी 1967 जयपुर मे हुआ था। इरफान खान जब एम.ए की पढाई कर रहे थे तभी उन्हें नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में आया था। भारतीय फिल्म अभिनेता है और वो बॉलीवुड में दमदार अभिनय के लिए जाने जाते है। इरफान खान की शादी सुतापा सिकदर से हुई जिनसे उन्हें दो बच्चे हैं- बाबिल और अयान।

उनके करियर की शुरुवात टेलीविज़न सिरियल्स से हुई थी। अपने शुरुवाती दिनों में वे यगव्य, भारत एक खोज, चंद्रकांत जैसे धारावाहिको में दिखाई दिये। उनके फिल्मी करियर की शुरुआत फ़िल्म 'सलाम बॉम्बे' से एक छोटे से रोल के साथ हुई। इसके बाद उन्होंने अनेक फिल्मों में छोटे बडे रोल किए, लेकिन असली पहचान उन्हें 'मकबुलं', 'रोग', 'लाइफ इन ए मेट्रो', 'स्लमडॉग मिलियनेयर', 'पान सिंह तोमर', 'द लंचबॉक्स', 'हिंदी मीडियम' जैसी फिल्मों से मिली।

इरफान खान ने अपनी हॉलीवुड फिल्मों में किये गए कामों की वजह से भी जाने जाते हैं। उन्हें तीन बार फ़िल्मफ़ेयर पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के तौर पर 'पान सिंह तोमर' के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार भी मिल चुका है। उन्हें पदमश्री सम्मान से भी नवाजा जा चुका है। दर्शक ऐसे मानते हैं कि वे अपने आँखों से ही पुरा अभिनय कर देते है और यहीं उनकी विशेषता भी है। वे लीक से हटकर फ़िल्मे करने के वजह से मशहूर है।

इरफान खान की मृत्यु 29 अप्रैल 2020 को कोकिलाबेन अस्पताल , मुम्बई में कैंसर के इलाज के दौरान, कोलन इन्फेक्शन से हुए।

ANAGHA S
2ND DC MATHEMATICS

PARVATHY N.N
1ST DC ECONOMICS

जाना था ,
तो आया क्यों ।
याद मिटाना था ,
तो धाग लगाया क्यों ।
अगर अकेले ही रहने का शौक था ,
तो आदत बनी क्यों ।

A PRAVEENA
1ST DC ENGLISH LITERATURE

किसी का है इंतजार

करने लगा वह इंतजार
बिना जाने इसका अंत का कराएं
सुकून की बात है इंतजार
दिल के अंदर की है बहार
चुपके चुपके आया कहीं से वसंत किधर
बीत जके ग्रीष्मा गीत को जान न पाया सुकुमार
प्यार हुआ उसे इसबार
धरती पर फूल खिले है बार-बार
आंखों में आशा की दरकार
जूही मलय के समीर से करती है प्यार
आशा है मिलने की हजार
प्यार का चढ़ा है खुमार
उसका चेहरा उसकी बाते याद आये बार बार
जिंदा है मुझ में तेरी यादों की बहार
अब तो बता दो तुम कहां हो यार क्योंकि मैं पागल कर रही हूँ.....
तुम्हारा इंतजार

DEVI P C
2ND DC ZOOLOGY

महामारी

कोरोनावायरस या कोविड -19 संक्रमण ऐसी बीमारी है जिसे वैश्विक संगठन द्वारा महामारी घोषित किया गया है | नवंबर 2019 में या चीन की लैब से निकला था । धीरे - धीरे यह वायरस इंसान से इंसान में फैलने लगा । देखते ही देखते इस वायरस ने पूरे दुनिया में पैर पसार किए । अंटार्टिका जैसे क्षेत्र में भी कोरोनावायरस की पुष्टि हुई है । जनवरी 2020 में यह वायरस भारत में पाया गया । 21 मार्च 2020 को पूरे देश में जनता कयूं लगाया गया था , 1 साल बाद यानी 2021 में फिर से कोरोनावायरस लगातार बढ़ रहा है ।

कोरोनावायरस बीमारी क्या

कोरोनावायरस एक ऐसा संक्रमण है जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में तेजी से ट्रांसफर होता | वर्तमान में इस वायरस के लक्षण सर्दी , जुखाम , बुखार , सुगंध नहीं आना , स्वाद नहीं आना , सांस लेने में तकलीफ होना और गले दुखना है । पूरी दुनिया में इस वायरस पर शोध जारी है ।

कैसे फैलता है यह वायरस और बचाव के उपाय

जो व्यक्ति कोरोना पॉजिटिव है उसके संपर्क में आने से सबसे पहले यह फैलता है । साथ ही किसी व्यक्ति द्वारा खांसने के बाद जो बारीक पार्टिकल आपके शरीर में प्रवेश करते हैं इससे संक्रमित होने का खतरा है । इसलिए सरकार द्वारा जारी निर्देश में कहा गया है कि बातचीत के दौरान कम से कम 3 फीट की दूरी बनाकर रखें । इसी के साथ मास्क भी लगा कर रखें | जब किसी दूसरे व्यक्ति के पार्टिकल आपके संपर्क में आते हैं तब संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है | बार - बार हाथ सैनिटाइजर हैंड वॉश या साबुन से धोएं |

कोविड -19 से बचाव के लिए " मेड इन इंडिया " वैक्सीन

कोरोनावायरस को महामारी घोषित करने के बाद से पूरी दुनिया में वैज्ञानिकों द्वारा बॉक्सिंग पर शोध जारी है । वर्तमान में भारत रूस समेत अन्य देशों में वैक्सीन जारी की है । भारत द्वारा 2 वैक्सीन का निर्माण किया गया है | कोविशील्ड वैक्सीन , इस वैक्सीन का उत्पादन भारत में सीरम इंस्टिट्यूट द्वारा किया जा रहा है । कोवैक्सीन इस वैक्सीन का उत्पादन भारत बायोटेक द्वारा किया जा रहा है ।

भारत ने 65 देशों में पहुंचाई कोरोना वैक्सीन

भारत ने वैक्सीन के उत्पादन के बाद इसे अभी 65 देशों में उपलब्ध कराया है । भारत सरकार द्वारा यह वैक्सीन कुछ देशों को ग्रांट बेसिस पर दी जा रही है ।कुछ देशों में भारतीय वैक्सीन की कीमत चुकाने पर उपलब्ध कराई जा रही है । भारत ने श्रीलंका , भूटान , बांग्लादेश , नेपाल , म्यानमार , मालदीव , सहित अन्य कुछ देशों में 56 लाख कोरोना वैक्सीन के डोज उपलब्ध कराए हैं ।

कोरोनावायरस केस ताजा अपडेट

17 मार्च 2020 के ताजा अपडेट के अनुसार पूरी दुनिया में कुल कोरोनावायरस संक्रमित लोगों का आंकड़ा 1,21,370,336 पहुंच गया है । इस वायरस से मौत का आंकड़ा 20,735,000 है । भारत में कोरोनावायरस का कुल आंकड़ा 1,14,38,734 तक पहुंच गया है । अब तक 1,59,079 लोगों की मौत हो चुकी है । देश में एक्टिव केस की संख्या 2,34,371 है ।

उपसंहार

एक साल बाद फिर से पूरी दुनिया में कोरोनावायरस लगातार फैलता जा रही है । 21 मार्च 2020 की भारत में जनता कयूं लगाया गया था आज एक साल बाद फिर वही स्थिति बन रही है । भारत के कई क्षेत्रों में दुबारा नाइट कयूं लगाया गया है , तो कई क्षेत्रों में पूर्ण लॉकडाउन लगाना पड़ा है । वैज्ञानिकों द्वारा इस पर लगातार शोध जारी है । वर्तमान में इस बीमारी से बचाव के लिए सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें और मास्क लगाए ।

AMRUTHA T.S
1ST DC BCOM

नारी अस्मिता

ईश्वर ने जब सृष्टि की रचना की होगी तो इस सारे खेल को रचना से पूर्व उनके दिमाग में आदमी और औरत ,दो रूपों का चित्र ही उभरा होगा, इस चित्र ने ही शायद उन्हें सृष्टि रचने को प्रेरित किया हो। ऐसी कल्पना इसलिए की जा सकती है क्योंकि इन दोनों रूपों के बिना सृष्टि की कल्पना की ही नहीं जासकती। ईश्वर ने दोनों को धरती पर अवतरित करने से पहले उनमें कुछ ऐसी भिन्नताएँ पैदा की, जिससे दोनों को पहचानने में कोई दिक्कत न हो , लेकिन छोटे से कारण कि यह भिन्नता आगे चलकर भेदभाव और अहम् का कारण बन जाएगी, ऐसा अगर भगवान को मालूम होता तो वह कुछ उपाय भी करता। खैर, यह भेदभाव आज औरत को यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि उस भगवान ने आदमी क्यों नहीं बनाया। मानव सभ्यता के उत्थन और प्रगति का इतिहास पुरुषों और महिलाओं को एक साथ सामुहिक कार्य के आधार पर रचा गया, किंतु इसे भाग्य की विडम्बना ही कहेंगे कि वह इसमें महिलाओं की भूमिका उपेक्षणीय समझ उसे हेयदृष्टि से देखने लगा ।

विकास और प्रगति के लिहाज से मनुष्य पूर्व काल से आज तक निरंतर आगे की ओर बढ़ता रहा है । इसी विकासने उसकी कार्यक्षमता और जीवन स्तर में बहुत बड़ा परिवर्तन किए हैं, किंतु इन सभी परिवर्तनों का श्रेय प्रत्यक्ष - या - परोक्ष रूप से पुरुषों ने लेकर साजिक व्यवस्था पर अपना अधिकार जमा कर लिया । इस प्रकार का शोषण विश्व स्तर पर तो हुआ , किंतु भारतीय संदर्भ में अधिक मुखर रूप से उभरकर सामने आया । महिलाओं का शारीरिक और मानसिक रूप से प्रताडित करके , उनकी रचनात्मकता और आज़ादी को समाप्त करने जैसी आमानवीयता ने उनकी भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया। हमारे निति - निर्माताओं एवं पितृसत्तात्मक समाज ने नारियों को एक ऐसी दुविधा में डाल दिया है, जिससे उभर के आने में आज भी नारियों को कई और साल लगेंगे ।

अंधविश्वास के दायरे में होने वाली परंपराओं और रीति - नीतियों के बलबूते आज भी लोग अंधा होकर चलते हैं । उत्पीड़न आजीवन चलने वाली एक समाजिक – रीति बन चुकी है । जो भ्रूण हत्या , शिशु हत्या , एवं समाज के अन्य दूषित रूपों -दहेज ,वेश्यावृत्ति , लैंगिक शोषण एवं बलात्कार जैसे कुरूपतम उत्पीड़नों में देखने को मिलती है ।पुरुष महिलाओं को एक मशीन मान कर चलते हैं जो सिर्फ बच्चे पैदा करने ,घरेलू काम करने,उसकी इच्छाओं का पूर्ति करने जैसे न जाने कितने कार्य जो महिलाओं पर थोपी जाती है स्त्रियों को ही घरेलू माना जाता है ।'वह सिर्फ घर के काम करने के लिए बनी हैं' 'घर के काम के अलावा उसे आता ही क्या है' 'वो काम नहीं करती वह उसका रोज का कर्तव्य है' - यह सब उन लोगों कि सोच है जो पितृसत्तात्मक समाज के अंधविश्वास में बंधे हुए हो। अगर एक पुरुष घरेलू काम में एक स्त्री कि हाथ बटा ही लिया तो मानो भूचाल आएगा और उसे पत्नी के अधीन पति कहकर हल्ला मचाते रहेंगे । महिलाओं के ओर होने वाले उत्पीड़न वह चुप- चाप अपने घर बचाने के लिए सहती जाती है। वो दूसरों के लिए अपनी बच्चे, अपने पति, अपने घरवालों के लिए वह चुप -चाप सब कुछ सहन करलेती है और पुरुष उसका गलत फायदा उठाकर उसपर उनका अधिकार जमाते है या उनके शोषण करते हैं । समाजिक सारी जघन्य अपराधों, शारीरिक - मानसिक छेडछाड एवं बलात्कार के लिए महिलाओं को उनके आचरण और चाल - चलन हेतु दोषी ठहराकर ,उसके चरित्र पर सवाल उठाए जाते हैं ।इन सब का दोषी केवल महिला ही होती है और सारा आरोप केवल उनपर ही उठती है । समाज की सभी समस्याओं का सीधा असर समाज और जाति का सुजन करने वाली नारी जाति पर ही पड़ता है ।कई कारणों से फैलने वाले अत्याचारों का मुख्य लक्ष्य महिलाओं को बनाकर उनके पहनावे, शिक्षा,और उसके अस्तित्व पर उंगली उठाई जाती है । व्यक्तिवाद, अहंकार ,धनार्जान और अन्य नैतिक- मूल्यों के पतन ने मनुष्य को सहज मानवीय संवेदनाओं से विमुख कर उदासीन बना दिया है ।

आज के यह भागते - दौड़ते समाज में, महिलाओं की उपेक्षा करके प्रगति की किसी प्रकार से आशा नहीं की जा सकती । महिलाओं को उनके अधिकारों के प्रति सहज बोध देने के लिए अब नए कानूनों और परिपाटीयों को चलाने की जरूरत है । उन्हें खुलकर सांस लेने की, अपने खुले दिमाग से सोचने , आज़ाद होने की, खुश रहने की पूरी अधिकार है ।यह सब किसी की देना नहीं है ,जब चाहे देने के लिए और जब चाहे रोकने के लिए यह सब उनके जन्म सिद्ध अधिकार है जैसे पुरुषों की होती है ।पर फर्क इतना है कि पुरुषों पर कोई रोक नहीं लगाता और जब स्त्री की स्वतंत्रता कि बात आती है तो लोग अचानक से मुंह मोड़ने लगाते हैं ।स्त्री एक कोयले की तरह है जो तीव्र ज्वाला में जलते एक हीरा बन जाता है ,अगर उसे अच्छे से आकार दे दिया जाए तो वह कोहिनूर भी बन सकती है ।

महिला और पुरुष दोनों समाज के दो ऐसे मूल्यवान रूप है जिसका मूल्य एक दूसरे से के साथ ही बढ़ता है । सबको एक मानाकर चलना , सबको आदर देना यह एक अच्छे समाज के सूजन के लिए महत्वपूर्ण है। नैतिक अधोपतन और रुढ़ियों को समाप्त करके, आदमी के औरत की और अपने नजरिए को बदलकर ,नारी जागरूकता का प्रोत्साहन करके नारी को उत्पीड़न से बचाने का रास्ता मिल सकता है।

हमारे घरों में भी नारी की उच्च स्थान है जैसे दुर्गा मां, काली पूजा,अर्धनारीश्वर की पूजा नवरात्रि जैसे कई उदाहरण जो महिलाओं को सम्मान सहित देखने को प्रेरित करती है ,लेकिन न जाने लोग यह सब भूलकर नारी को एक खिलौने की तरह प्रयोग करके फेंक देते हैं । तब सब अंधे हो जाते हैं । नारी अबला नहीं होती उसे अबला नारी बनाया जाता है ।

इसे बदलने के लिए लोगों को आगे आकर इस विषय की चर्चा करनी होगी , सवाल उठाने होंगे , नारियों को सशक्त करना होगा । उन्हें मापने मूल्य समझाना होगा , वह इसीलिए नहीं जन्मी है , कि किसी का उत्पीड़न सहन कर सके ।

उसके अंदर एक नई जीवन के सूजन का निपुणता है अगर इस समाज में नारी और असुरक्षित होगी तो हमारे आने वाले पीढ़ियो भी सदा असुरक्षा के घेरे में रहेंगी और राष्ट्र का कभी प्रगति नहीं होगी । यह तभी संभव है जब लोग इसके खिलाफ आवाज उठाएंगे । बात की महत्वपूर्णता को समझकर कदम बढ़ाएगे ,लोग उसकी आवश्यकता को पहचानेंगे तभी एक अच्छे , समाज की प्रगति होगे । हमें एक साथ मिलकर नेकी के ओर बढ़ना पड़ेगा तभी आने वाले पीढ़ी को हम एक अच्छा भविष्य और एक राह दिखा सकेंगे ।

HRIDHYA SURESH
1ST DC ECONOMICS

प्यार तो एक गुलाब है
जब खिल जाए तब खुशियाँ आ जाती है।
जब मुरझा जाए तब मायूसी छा जाती है ।

AKSHAYA THOMAS
1ST DC PHYSICS

पुरानी तस्वीर

आज मैंने अपनी एक पुरानी तस्वीर उठाकर देखी ।
गर्मियों में हम समुद्र के तट पर खेल रहे थे।
सूरज की किरणे हमारे बालों में पड़कर और चमक भर रही थी ।
समुद्र की पीली रेत बिस्तर की भाति लग रही थी।
हम सीपों को इकट्ठा करके उसे
एक छोटे से बक्से में डालते और कुछ शंक जो बहुत ही सुंदर लगते उन्हें कान की बाली बनाकर पहनते । दोस्तों को यह अच्छा लगता तो उसे छिन्ने का प्रयास करते । समुद्र की उस गीली रेत में हम घर बनाते उसकी तस्वीर को केमेरे में कैद करते । इसी बीच तस्वीर खींचते समय मेरे दोस्त ठंडी रेत पर बैठकर तस्वीर खींचवा रहे थे । तभी अचानक एक केकडे ने मेरे दोस्त की जोंघ पर चियौंटा मारा आ ..... आ ..... माई की आवाज़ से गूँज गया सारा । यह देखकर सभी इतना हँसे की हमारे सारे दाँत बाहर आ गए | आज भी उस तस्वीर को देखकर चेहरे पर मुस्कुराहट आ रही जाती है ।

DITHI C.N
2ND DC ECONOMICS

ATHMAJA M
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

अमिताभ बच्चन

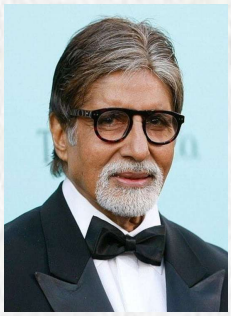

इलाहाबाद , उत्तर प्रदेश कायस्थ परिवार में 11 अक्टूबर 1942 को अमिताभ बच्चन का जन्म हुआ । उनका पिता हरिवंश राय बच्चन भारतीय फिल्म जगत बॉलीवुड के अभिनेता और प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार थे , और उनका माँ तेजी बच्चन उविभाति भारत के कराची शहर से सम्बन्ध रखती थी जो कि अब पाकिस्तान में हैं | आरंभ में अमित जी का नाम ' इंकलाब ' रख गया था जो भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रयोग किए प्रेरक वाक्यांश ' इंकलाब जिंदाबाद ' से लिया गया था । लेकिन बाद में प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत ने इनका नाम ' अमिताभ ' रखा । अमिताभ का अर्थ है ' शाश्वत प्रकाश ' ।

कैरियर

अमिताभ ने फिल्मों में अपने कैरियर की शुरुआत ख्वाजा अहमद अब्बास के निर्देशन में बनी फिल्म ' सात हिंदुस्तानी ' के साथ कलाकारों में एक कलाकार के रूप में की । फिल्म ने वित्तीय सफलता प्राप्त नहीं की पर बच्चन ने अपनी पहली फिल्म के लिए राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार में सर्वश्रेष्ठ नवागंतुक का पुरस्कार जीता | लेकिन अमिताभ बच्चन की पहली आठ फिल्में बड़ी फलोप थीं । अब बच्चन ने 175 फिल्म में अभिनय किया है और आज बच्चन उन अभिनेतावों में एक है जिन्होंने अधिक फिल्मों में अभिनय किया है ।

आवाज

अमिताभ बच्चन अपनी जबरदस्त आवाज के लिए जाने जाते हैं | वे बहुत से कार्यक्रमों में एक वक्ता , पार्श्व गायक और प्रस्तोता रह चुके हैं | बच्चन के आवाज से प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक सत्यजीत रे इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने ' शतरंज के खिलाड़ी ' में इनकी आवाज का उपयोग कमेंट्री के लिए करने का निर्णय किया । उद्योग में प्रवेश करने से पहले , बच्चन ने ' ऑल इंडिया रेडियो ' में समाचार वायक नामक पद हेतु नौकरी के लिए आवेदन किया जिसके लिए इन्हें अयोग्य घोषित कर दिया गया था ।

पुरस्कार , सम्मान और पहचान

अमिताभ बच्चन को सन 2001 में भारत सरकार ने कला क्षेत्र में पद्मभूषण से सम्मानित किया था । 2002 को किशोर कुमार सम्मान , 2019 को दादा साहेब फाल्के पुरस्कार मिला है । इनको तीन राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और बारह फिल्म फेयर पुरस्कार मिला है । अमिताभ बच्चन का विवाह अभिनेत्री ' जया भादुरी ' से हुआ और उनकी दो संतानों है ' श्वेता बच्चन ' और ' अभिषेक बच्चन ' ।

बच्चन पोलियो उन्मूलन अभियान के बाद अब तंबाकू निषेध परियोजना पर काम करेंगे । अमिताभ बच्चन को अप्रैल 2005 में एच आइ वी / एड्स और पोलियो उन्मूलन अभियान के लिए यूनिसेफ के द्वारा सद्भावना राजदूत नियुक्त किया गया था ।

प्रमुख फिल्में

सात हिंदुस्तानी , आनंद , शोले , दोस्त , अमर अकबर एंथोनी , हम किसी से कम नहीं , ब्लैक , पा , महाभारत , बोल बच्चन , भूतनाथ , भूतनाथ रिटर्न्स , ठग्स ऑफ हिंदुस्तानी आदि है ।

AJAY M
1ST DC BCOM

होली

होली भारत में मनानेवाली एक रंगबिरंगा त्योहार है । भारत के देशवासियों होली मनाते है। होली अनेक रंगों का उत्सव है जो अनेक भावनाओं का प्रतीक है । वह प्यार, खुशी, सफलता, भाग्य आदि का प्रतीक है । होली 'प्यार का त्योहार','रंग का त्योहार', 'वसंत का , आदि नामों से जाने जाते है । होली भगवान कृष्णा और देवी राधा की याद मे भी मानता जाता है । धार्मिक निष्ठा और मनोरंजन की सूचना देते है। होली का आचार इस प्रकार होती है। पहले दिनों में होलिका दहन की जाती है | दूसरा दिन धुलिवंदन है जिसमें लोग एक दूसरे की ओर रंग फेकते है | इस दिन सब घर-घर जाकर इकट्ठा होकर गले मिलते हैं और मिठाइयाँ आदि मिलाकर खाते हैं । होली हिंदुओं का त्योहार है। लेकिन अजकल सब लोग कोई भेदभाव किये बिना होली मानते हैं।

SREERA RAMESH
1ST DC MATHEMATICS

लक्ष्य

ना हीं मुझे किसी से झगड़ना है ।
ना ही मुझे किसी से अकडना है |
ना ही मुझे किसी से भिड़ना है ।
ना ही मुझे किसी से बिगडना है ।
कांटो पर मुझे दौड़ना है ।
गिर गिर कर मुझे उठना है ।
लड़खड़ा कर भी आगे बढ़ना है ।
केवल मुझे अपने लक्ष्य पर उड़ना ।

AYSHA SALEEM
1ST DC INTEGRATED GEOLOGY

माँ - माँ होती है

माँ- माँ होती है ।

उसमें भी कोई बात होती है ।
वह जब मुस्कुराती है ।
सारी कायनात खिल जाती है ।
वात्सल्य के मोती वह पिरौती है ।
हमें वह बहुत सुहाती है ।
ममता की मूरत हमें कब दिखाई देती ?
जब हमें वह छाती का दूध पिलाती है ।
इसलिए तो वह माँ कहलाती है।
माँ- माँ होती है ।
उसमें भी कोई बात होती है ।

POOJA.K
1ST DC INTEGRATED GEOLOGY

खेल और भारत

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन समय से ही कई प्रकार के खेल खेले जाते हैं और देश का राष्ट्रीय खेल हॉकी को माना जाता है । विशेष रुप से , बच्चे खेलने के बहुत अधिक शौकीन होते हैं । वे आस - पास के क्षेत्र में , पार्को , बगीचों में खेलते हैं । इसके साथ ही वह आमतौर पर स्कूलों में होने वाले खेलों में भी भागीदारी लेते हैं । स्कूल स्तर पर , जिला स्तर पर , राज्य स्तर पर , राष्ट्रीय स्तर पर और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देश के बच्चों और युवाओं की अधिकतम भागीदारी के लिए बहुत सी खेल गतिविधियों का आयोजन किया जाता है । यद्यपि , कभी कभी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर जैसे - ओलंपिक या कॉमनवेल्थ खेलों में खिलाड़ियों का खराब प्रदर्शन भारत में खिलाड़ियों के लिए अच्छी खेल सुविधाओं की कमी और अभाव को प्रदर्शित करता है ।

इतिहास

प्राचीन यूनानी काल में कई तरह के खेलों की परंपरा स्थापित थी और ग्रीस की सैन्य संस्कृति और खेलों के विकास ने एक दूसरे को काफी प्रभावित किया । खेल उनकी संस्कृति का एक ऐसा प्रमुख अंग बन गया कि यूनान ने ओलिंपिक खेलों का आयोजन करना शुरु कर दिया , जो प्राचीन समय में हर चार साल पर पेलोपोनिस के एक छोटे से गाँव में ओलंपिया नाम से आयोजित किये जाते थे । खेल को पूर्ण व्यवस्थित रूप सर्वप्रथम यूनानियों ने ही दिया था । उनकी नागरिक व्यवस्था में खेल का महत्त्वपूर्ण स्थान था उस युग में ओलिंपिक खेलों में विजय मनुष्य की सबसे बड़ी उपलब्धि समझी जाती थी । गीतकार उनकी प्रशंसा में गीत लिखते थे और कलाकार उनके चित्र तथा मूर्तियां बनाते थे ।

भारतीय एथलीट अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

अभी भी भारतीय एथलीट अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के खेलों में मानक स्थिति को प्राप्त नहीं कर पाए हैं हालांकि , यह लगता है कि आने वाले समय में वे ऐसा कर पाएंगे क्योंकि वर्तमान सालों में खेलों का क्षेत्र बढ़ गया है । इसे देश की सरकार द्वारा स्कूल और कालेजों में बड़े स्तर पर बढ़ावा दिया जा रहा है । भारतीय एथलीट (खिलाड़ी) हर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेल में अपनी पूर्ण भागीदारी दिखा रहे हैं और लगातार गुणवत्ता और मानक हासिल करने के लिए कोशिश कर रहे हैं । भारतीय खिलाड़ियों ने पिछले ओलंपिक खेलों में बहुत कम स्वर्ण पदक जीते थे हालांकि , वे बहुत ही साहस और उत्साह के साथ खेले थे , जिसने दर्शकों को काफी उत्साहित किया । भारत हॉकी , कुश्ती , क्रिकेट , आदि कई खेलों में अग्रणी है ।

खिलाड़ी का चुनाव

सबसे अच्छे खिलाड़ी का चुनाव उन विद्यार्थियों में से किया जाता है , जो स्कूली स्तर और राज्य स्तर पर बहुत अच्छा खेलते हैं । अब भारत में खेलों की स्थिति बदल गई है और यह लोकप्रियता और सफलता पाने का अच्छा क्षेत्र बन गया है । यह शिक्षा से अलग नहीं है और यह भी आवश्यक नहीं है कि , यदि कोई अच्छा खेल खेलता है , तो उसके लिए शिक्षा की आवश्यकता नहीं है या यदि कोई पढ़ने में अच्छा है तो खेलों में शामिल नहीं हो सकता । इसका अर्थ यह है कि कोई भी व्यक्ति खेलों में भाग ले सकता हैं , चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित । शिक्षा और खेल एक ही सिक्के अर्थात् सफलता के दो पहलू हैं । विद्यार्थियों के लिए स्कूलों में खेल खेलना अनिवार्य कर दिया गया है , इसके साथ ही शिक्षकों और अभिभावकों को उनके स्तर पर उनके विकास और वृद्धि के साथ ही देश का भविष्य बनाने के लिए खेल खेलने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए ।

निष्कर्ष

खेल बहुत तरीकों से हमारे जीवन को पोषित करने का कारय करते हैं । ये हमें अनुशासन और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने लिए निरंतर कार्य और अभ्यास करना सिखाते हैं । इसके साथ ही यह हमें शारीरिक और मानसिक दोनों तरीकों से स्वस्थ रखते हैं और इस प्रकार हम सामाजिक , भावनात्मक , मानसिक और बौद्धिक रूप से फिट रखते हैं । इस तरह के एक प्रदूषित और दबाव के माहौल में जहाँ हर कोई तनाव देने के लिए और एक दूसरे के लिए समस्या पैदा करने के लिए तैयार हो जाता है , ऐसे में खेल मनोरंजन और मन को एकाग्र करने का सबसे अच्छा तरीका है । यह एकाग्रता स्तर और स्मरण शक्ति को बढ़ाता है और मस्तिष्क को सकारात्मक विचारों से परिपूर्ण कर देता है ।

HARSHAN MATHEW
1ST DC BCA

मेरा मुखौटा

अमल कृष्ण के .ए
बी.एस.सी. कंप्यूटर साइंस

मेरा मुखौटा उन नौजवानों पर एक मज़ाक उड़ाता है जो कोरोना की स्थिति की गंभीरता को नहीं समझते हैं और खुद को, अपने परिवार के सदस्यों और पूरे समाज को खतरे में डालते हैं

Scene 1

(सुबह का समय ।एक पुराना केरलीय घर। मां घर के आंगन में झाड़ू मार रही है| मणि बाहर बैठे अखबार पढ़ रहा है। पापा अंदर बैठे टीवी देख रहे हैं। हरि बाहर जाने के लिए निकल रहा है)

हरी :माँ, मेरा मास्क देखा?

माँ : नहीं, मैने नही देखा ।

हरी : तुमने यह कहां रखा है ?

माँ : मुझे नहीं पता।

हरी : (मणि को हटने को कहते हुए) रास्ता दे।

मणि : एक के दाम में दो मुर्गी। आज राजेश को बुलाकर बकेट चिकन बनाने के बारे मे बताता हूँ।

माँ : (हरी से):कम से कम मास्क तो ठीक से पहन के जा।

हरी : अरे चलता हैं। पुलिस वालों को देखते ही ठीक से पहन लूंगा।

माँ : तब मार पड़ जाएगी।

Scene 2

(करीब दोपहर का वक्त ।मणि चार्जर में लटकाए हुए मास्क के अंदर से फोन निकालता है ।मणि अपने दोस्त राजेश को फोन लगाता है। बात करते वक्त हरी बाइक में वापस आता है। हरी अपना मास्क बाहर रखकर, अपने पीठ को हाथ देकर घर के पीछे की ओर जाता है।)

मणि (फोन पर) : हेलो, अबे राजेश कहां है तू? पत्ते खेलने कब आएगा?

जल्दी आ ।

आते- आते बिनु और तक्कुडु को भी लेकर आ जाना।

लॉकडाउन?

छोड़ना वो सब ।

जल्दी आ,कब से यहां बैठे बोर हो रहा हूं ।

(मणि हरि को घर के पीछे की ओर जाते हुए देखता है)

रुक मैं अभी कॉल करता हूं ।

Scene 3

(घर के पीछे की जगह ।मणि हरि को झांककर देखता है और उसकी ओर भाग के जाता है)

मणि : अरे क्या हो गया?बोल तो सही!

(पुलिस की कही हुई बातें हरि याद करता है)

पुलिस (चिल्लाते हुए) : मास्क नाक पर लगाने के लिए होता है ठुडडी पर लगानी की चीज़ नहीं है।

समझा ।

(हरि को मार पड़ती है)

मणि : अच्छा हुआ मार पड़ गई |

मैं तो पत्ते खेलने जा रहा हूं , हि ... हि... हि...|

(हंसते हुए चले जाते हैं)

हरि : ज्यादा हंसो मत तुम्हें भी फटकाएँगे वो ।

Scene 4

(रात का वक्त ।घर के अंदर का हॉल । पापा टीवी में मुख्यमंत्री का भाषण सुन रहे हैं ।राजेश घर के बाहर खड़ा है ।)

मणि : अबे आ रहा हूं, रुक ।माँ , मेरा मास्क देखा क्या? पापा, आपने देखा क्या?

पापा : तेरा मास्क मेरे पास कैसे होगा?

मणि : कोई बात नहीं मैं माँ का मास्क पहन लूंगा |

(पापा को गुदगुदी करते हुए बाहर भागता है)

पापा (गुस्से से) :रुक, किधर जा रहा है?

मणि : बाहर।

पापा : इस वक्त!

(मणि राजेश की पुकार सुनने का नाटक करता है और बाहर भागता है ।पापा भी उनके साथ बाहर आकर उनसे सवाल करते हैं)

पापा : यह किसका मास्क है?

मणि : मां का , नहीं भाई का।

पापा : तुझे शर्म नहीं आती !

सुबह अखबार में कोई भी मुर्गे और पाडे का दाम देखता रह जा!

कभी भी काम की खबरें मत पढ़!

किसी एक का छुआ मास्क दूसरों को उपयोग नहीं करना चाहिए और

कई पर भी फेकना भी नहीं चाहिए।

और तू अपने भाई का मास्क पहन रहा है।

उसके नाक का और मुंह का उस पर होगा। यह है आजकल की

पढ़ी-लिखी

युवा! अंदर घुस।

मणि (राजेश से) : चल निकलता हूं।

पापा (राजेश से) : भाग।

Scene 5

(घर के सब एक साथ बाहर बैठकर सूखते हुए मास्क को देखते हैं)

पुकार

मत करो यह मेरे साथ,
मैं भी एक जान हुँ ।
मुझे दुनिया देखने दो,
मुझे आसमान छूने दो |
लड़की हुँ तो क्या हुआ ?
लड़के से कुछ कम नहीं ।
मैं भी जीना चाहती हुँ ,
देश के लिए कुछ करना चाहती हुँ।
सब लोगों को बताना चाहती हुँ,
मैं भी कुछ कर सकती हुँ ।
जरूर आपको इज़्ज़त दिलाऊंगी,
ताने की जगह तारीफें करवाऊँगी ।
सब का मूँह बंद करवाऊंगी,
बस एक अवसर दे कर तो देखो
मुझे भी इन रंगों को जानने दो,
इस सुंदर सी दुनिया में आने दो ।

ADHWAITHA NANDHAN
1ST DC PSYCHOLOGY

नारी का शाक्तिकरण

दोस्तों क्या है यह नारी शक्तिकरण? हम सब बचपन से इसके बारे में सुनते आ रहे है। शक्तिकरण की ज़रूरत क्या है? नारी शक्तिकरण की बात।९५१ को उठी थी। इस २१वी सदी में एक सौ बहतर की बात बडी ही प्रासंगिक है। इस प्रसंग के अनुसार हम जानते है कि नारी को हमने कई पदों से नवाज़ा चाहे देवी के रूप में माँ के रूप में और भुमि के रूप में आदि । लेकिन समाज उसे मनुष्य के रूप में देखना भूल गया। हम मानते है कि नारी देवी का रूप है फिर भी हम उसे घर की चार दीवारी में रखते है। उसे लाक्ष्मी का दर्ज़ा देते है। उस लक्षमी को कोई अन्य पूरूष देखे या वह किसी अन्य पुरुष देखे या वह किसी अन्य पूरूष को देखे जो ठीक नहीं है। इसलिए उसे घर में रहने की सलाह दी जाती है। नारी भूमि की तरह है। क्योंकि वह सबको ढोती है। जिस प्रकार भूमि को गर्मी सर्दी और बरसात आदि आदि सहना पडता है। ठीक उसी प्रकार नारी को परिवार वालों के अत्याचार सहने पडते है। उनकी खुशी के लिए अपनी खूशियाँ त्याग देती है। उसका जब शोषण होता है उसे सब कुछ सहने पडता है। क्योंकि वह नारी है। पहले महिलाओं की पसंद और न पसंद न जानकर फैसला किया जाता था। उसका अपना कोई व्यक्तित्व नही था। मर्द आज्ञा देंगे तो नारी उसका पालन ज़रूर करे। जैसे जैसे समय बीता कई समाज सुधारक आगे आये। उन्होंने नारियों के अधिकार के लिए कई लडाइयों की। उसी का नतीजा है कि आज बालविवाह सती प्रथा और यौन उत्पीडन से कूछ राहत जरूर मिली।

महिलाओं ने अपने अधिकार के लिए कई लड़ाइयाँ लडी जिसकी जित ने १९- वी सदी में उनकी शिक्षा और अनुष्ठानों में सुधार ला दिया।१९१५ में गाँधीजी के भारत छोडों आन्दोलम में महिलाओं ने बढ-चढकर हिस्सा लिया और इससे कई महिला संगठनों का गढन हुआ। इतना ही नहीं स्वतन्त्रता के बाद लडकी के ससुराल में कामकाजी स्थानों में और २ाजनीति में समानता के अधिकारों पर अच्छा काम हुआ। आधुनिक यूग में आते-आते नारियों ने सब अधिकार पा लिए, स्त्री ने अपना अस्तित्व पहचाना और पुरुषों से कंधे से कंधा मिलाकर काम करने लगी। यह सब उचित था लेकिन उसे एक नयी समस्याओं का सामना करना पड़ा। परिवार में घर मे कार्यस्थक मे साइबर हमलें समाज में और मीडिया में उत्पीडन से जूझने लगी। जब उसे उत्पीडन किया जाता है,तब समाज तय करता है कि लडकियों को कैसे बस्त्र पहनने चाहिए उसे कैसे बोलना और चलना चाहिए आदी। समाज चाहे कितना ही आधुनिक हो जाए किन्तु उसकी सोच पूरानी है।

जारी शक्तिकरण का आगाज़ तो हो गया है। लेकिन झस अगाज़ को ज़ारी रखकर समाज की सारी नारियों को जाग्रत करने का प्रयास करेंगे। जिससे उनका आत्मबल जगे और उनक उत्पीडन कम हो। आनेवाले कल के लिए नारी शक्तिकरण और अधिक प्रगति करे। कहते है खूद को मज़बूत करने के लिए जोखिम लेना पडता है। इसके लिए एकबार अपने अन्दर झाँकना पडता है।

JULIYA K DAVIS
2ND DC PHYSICS

गुस्सा

छोटी-छोटी बातों पर क्यों करते हो गुस्से का प्रहार ।
ध्यान से एक बात सुन लो यार
गुस्सा तो है एक तलवार
गुस्से में हम सामने वालों की बातें नहीं सुनते हजार।
बस कर देते हैं उस पर तलवार ।
सामने वाले का मन हो जाता है तार -तार
अपनी करनी पर दुखी हो जाते हैं हम सरकार ।
बुध - बुधाकर हम पछताते हैं नहीं करना था उस पर वार ।
हमको दुखी कर देता है हमारा गुस्से का प्रहार ।

ANUPAMA S
1ST DC INTEGRATED GEOLOGY

एकता केलिए

हालांकि मैंने सुना है कि जब मैं एक बच्चा था,तो कई लोगों ने मुझे ' शिगंडी ' कहा था । इस तथ्य से कि मैं कभी भी एक महिला या पुरुष नहीं दा और एक तीसरा सेक्स ग्रुप था जो मेरी कल्पना से परे था । हालाँकिमैंने कई लोग को आपका मज़ाक उड़ाते और अपमान करते देखा है,आपके यह महसूस करने में बहुत देर हो चुकी है कि ट्रांसजेंडर एक सच्चाई थी ।

पिछले कुछ समय से मुझे यह एहसास होने लगा है कि मनुष्य ने कोई मानव अदा नहीं है और धर्म धर्मनिरपेक्ष नहीं है ।मैं एक छोटी सी कहानी बताना चाहता हुँ।

एक बात कोच्चि से त्रिशूर तक की ट्रेन यात्रा की ।रास्ते में एक बूढ़ी औरत और उसकी जवान बेटी मेरी पास आकर बैठी। हमने कुछ स्टेशनों की ओर एक दूसरे से जुड़े यात्रा के झगई, शिकायतों और चिंताओं के साथ जारी रही । एक ट्रांसजेंडर अगल पड़ाव से आया और मेरी बगल में बैठ गया । हालांकि थोडा आश्चर्य हुआ, हम एक - दुसरे को देखकर मुस्कुराए । मेरे दो दोस्तों ने बात तक नही की जैसे कि उन्हें वह पसंद नही आयी । मैंने उन्हे बार - बार कहा लेकिन उन्होने अपना रवैया नहीं बदला फिर मैंन उनसे से बात की जो । चाय आने पर हम चारों ने याय खरीदी । चायवाले के पास कोई खुल्ले नहीं थे, इसलिए उसने हम यारो को शेष इस रुपये दिए । विनम्रतापुर्वक हमें बॉट लेने को कहा । बूढ़ी औरत ने बैग से पाँच रुपये लिए और मुझे दिए और यह कहते हुए मुँह फेर लिया कि " मुझे ऐसे लोगो से नपुरत है " ।

यह मुझे बिलकुल अच्छी नही लगी । तरफ दीदी (ट्रांसजेंडर) अपनी ऑखे पोछ रही थी । थोडी देर बाद हमने बहुत बात की जैसे ही उनका स्टेशन आया उन्होंने हाथ मिलाया और चली गई । सच तो यह है कि इन सबका व्यवहार देखकर मेरे मन में बेचैनी होने लगी कि कैसी निर्मम दुनिया है, बाद मे अनक यात्रा कई लोगों से मिली लेकिन केवल दीदी को फिर से नहीं देख सकी । आज में सोच रही हूँ कि किसी की गलतीटेंशन होने की है? क्या सभी मनुष्य समान नहीं है ?

हम सभी मनुष्य है जिन्होंने सीखना सीखा है, लकिन वास्तविकता यह है कि हमने जो सीखा है उसे व्यवहार मे लाना नहीं सीखा है। यदि यही सीख व्यवहार में होती, तो वे जाति, धर्म, रंग, नस्ल, और लिंग के बारे में नस्लवाद से बचने में सक्षम होते । सब कुछ ईश्वर की रचना नहीं है ? समय आ गया है जो विविधता की दुनिया में रहते है विविधता में जीने की कोशिश करें । हालंकि सावधान रहें..... ।

JOMOL JOHN
2ND DC ECONOMICS

विज्ञान के चमत्कार

आज का युग विज्ञान का युग है । प्रत्येक क्षेत्र में विज्ञान ने चमत्कारपूर्ण अविष्कार किए हैं । विज्ञान का शब्दार्थ है ' विशेष ज्ञान ' अथवा विशिष्ट ज्ञान | हम किसी भी विषय के नियमित अथवा क्रमबंध अध्ययन को वैज्ञानिक अध्ययन कहते हैं । हम जिन बातों को असंभव मानते थे , विज्ञान ने उनको संभव बना दिया है । विज्ञान ने मानव जीवन को अधिक सरल और सुखदायक बनाया है उसकी एक बड़ी देन है बिजली | जीवन में प्रत्येक क्षेत्र में हमारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए बिजली के उपकरण मौजूद है । हमारी रसोई घर से लेकर खेत तक और श्मशान तक बिजली का उपयोग होते हैं । यात्राओं को भी विज्ञान ने सरल बनाया है रेलगाड़ी , कार , जहाज , हवाई जहाज , रॉकेट आदि के सहारे से हम कम समय में लंबी दूरी तक आराम से पहुंच सकते हैं | समाचारों को एक स्थान से दूसरी स्थान तक पहुंचाना , सामान बेजना , व्यापार करना , आदि में भी विज्ञान का बहुत बड़ा देन है । टेलीफोन और स्मार्टफोन द्वारा हम दुनिया के किसी कोने में बैठे व्यक्ति से बात कर सकते हैं । विज्ञान की दूसरी अद्भुत देन है ' इंटरनेट ' । आजकल हम किसी भी काम इंटरनेट द्वारा कर सकते है वह चाहे व्यापार हो , बिल भरना हो , मनोरंजन हो , पढ़ाई हो सब कुछ हम इंटरनेट द्वारा कर सकते हैं । लॉकडाउन के दौरान हमारी शिक्षा भी तो इंटरनेट द्वारा ही होती थी और अब भी । उसी प्रकार दूरदर्शन के माध्यम से टनिया के किसी , कोने में घटित घटना को सजीव रूप में देख सकते है । सारांश यह है कि दुनिया के स 1/2 आंगन बन गए हैं । दूरियां एकदम कम हो गई है । इसके अलावा चिकित्सा , कृषि , शिक्षा , टेक्नॉलॉजी आदि क्षेत्र में भी विज्ञान ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई है । आज हमारे किसानों के पास जोतने से लेकर फसल काटने तक की मशीन है । इन मशीनों के सहारे से किसान का समस्त काम कम श्रम और समय में पूरा हो जाता है अगर चिकित्सा के क्षेत्र में देखे तो , आज के युग में लगभग सभी रोगों का इलाज है । एक्सरे , अल्ट्रासाउंड , सी.टी स्कैन आदि के सहारे से शरीर के भीतरी भागों की जानकारी भी प्राप्त कर सकती है अतः हम कह सकते हैं कि विज्ञान ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में चमत्कार कर दिखाया है । परंतु इसी के साथ - साथ इसके कई दुष्परिणाम भी हुए है । मशीनों के बढ़ते हुए प्रयोग ने बेरोजगारी को बढ़ाया है । इसके साथ - साथ बंदूक , बम , परमाणु बम , तोप आदि हथियार भी विज्ञान के ही फल है । यह सब अस्त्र - शस्त्र मानव जाति के लिए खतरा बन गए है । सामाजिक माध्यम में भी बहुत सारी धोखा हम देख सकते हैं । अतः हम कह सकते हैं कि विज्ञान ने आधुनिक सभ्यता का विकास किया है । यह द्वारा दी गई सुविधाओं ने मनुष्य की कार्यक्षमता को बढ़ाया है । विज्ञान के जिन अभिशापों के बारे में बताए है वास्तव में उसके अभिशाप नहीं है । बल्कि हम विज्ञान की देनों का गलत उपयोग करके उनको अभिशाप बनाया है ।विज्ञान के चमत्कारों का सही उपयोग से मनुष्य अपने जीवन को सुखी और समृद्ध बना सकते हैं । अतः हमें विज्ञान द्वारा प्रदत वस्तुओं को मानव कल्याण के लिए प्रयोग करना चाहिए ।

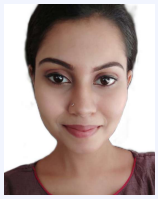

NIRANJENA ANUP
1ST DC ECONOMICS

पानी की बूंद

इतना जीवन उन बूंदों में बसाना है।
जीवन की नब्ज के सूत्र को जगाना है।
इतना शुद्ध कणों को हमने जाना है ।
आप अमृत के स्वामी है हमने ये माना।
इसे कितना बर्बात करता है जमाना ।
सब को यह बात है सुनाना |
अपनीमृत्यु तक अपने आंसुओं को है न दहकाना ।
बस पानी की हर बूँद है बचाना ।

AISWARYA V.S
1ST DC BCOM

केरला के जनजातियों का भोजन

कोरंगत्ती - केरल के आदिवासी बस्तियों के बीच लोकप्रिय एक नाश्ता पखवान है।

सामग्री

- रागी पाउडर
- पानी

बनाने की विधि

मिट्टी के बर्तन में थोडा पानी उबालें। जब पानी उबल जाता है तो बाद में उपयोग के लिए इसमें से कुछ गर्म पानी रखें। उबलते पानी में रागी का आटा डालें। इसे अच्छे से मिलाएं। यहाँ इस समय में मूल निवासी कुशलतापूर्वक रागी को मिलाने के लिए दो सख्त छडियों का उपयोग करते है। पॉट को इस उद्देश के लिए विशेष रूप से सेट की गई कांटेदार हार्ड स्टिक का सर्मथन किया जाता है। इसे अच्छी तरह मिलाने के लिए अलग रखी हुए गर्म पानी का इस्तमाल करें। डिश को देखें, यह एक सही पेस्ट हैं जिसमें कोई ग्रिट दिखाई नहीं देता है। आपको लगभग हलवा जैसा डिश मिलती है। आपने इस व्यजंन की तैयारी में नमक या चीनी या किसी अन्य सामग्री के उपयोग की अनुपस्थिति देखी होगी। जब यह अच्छी तरह के मिक्स हो जाए तो इसे केले के पत्ते में परोसें और ठंडा होने दें। यह एक ब्लैंड डिश है और इसे अकेले या आदिवासी साइड डिश जैसे सेंथल अडाकु, चंमबदकु या कोई सरु के साथ खाया जा सकता है।

चेमपडकु

सामग्री : कोलोकासिया पत्तियां

चेरी टमाटर

लाल मिर्च

शालोटस

धनिया

स्वाद के लिए नमक

जीरा बीज

हल्दी

करी पत्ते

बनाने की विधि

प्रकुति की प्राचीन जेबों से सुरक्षित चेम्बिला को पहले दिन एकत्र किया जाता है। यह आदिवासी बस्ती क्षेत्र में आसानी से उपल्बध पौधा है। अब कोलकासिया की पत्तियों को छोटे टुकड़े में तोड लें और एक तरफ रख दें। एक पैन गरम करें और उसमें लाल मिर्च, धनिया और जीरा डालें। इसे भूरा होने तक भूने। वे सामग्री सखार्मी के लिए कोई उपकरण का उपयोग करें।

मिट्टी के बर्तन में थोड़ा पानी गर्म करें। इस बीच पारंपरिक पीसने वाले पत्थर में हल्दी को पीसकर पेस्ट बना लें। इसमें भूनी हई लाल मिर्च मिलाएं और पेस्ट बनाने के लिए इसे क्रश करें। इसमें धनिया और जीरा डालें और अच्छी तरह से पीस लें। इसके बाद करी पत्ते लें और अच्छी तरह से मसल लें। छिड़क को कुछलने और इसे अन्य कुछल सामग्री के साथ अच्छी तरह से मिलाएं। अब पेस्ट तैयार है।

चेम्बिला के टुकड़ों को उबलते पानी में पकाएं। अच्छी तरह से हिलाए। एक बार जब यह आधा उबल जाए तो इसमें क्रश लिए हुए चेरी टमाटर डालें और अच्छी तरह से हिलाएं। आदिवासी बस्ति क्षेत्र में चेरी टमाटर प्रचुर मात्रा में उपब्ध है। अगला पेस्ट को उबलते पत्तों में डालें और अच्छी तरह से हिलाएं। चेम्बडकु अब परोसने के लिए तैयार है ।

JESSICA ELIZEBATH JOFFY
2ND DC PHYSICS

SWAPNA SUDHA
2ND DC GEOLOGY

समय का सदुपयोग

हमारी सफलता का रहस्य के सदुपयोग में ही छिपा हुआ है । हमारे जीवन का एक -एक क्षण रत्न से भी अधिक मूल्यवान है । परंतु खोया हुआ समय किसी भी प्रकार से लौटाया नहीं जा सकता । जीवन संग्राम में सफलता प्राप्त करने की इच्छा रखनेवाला मनुष्य को अपने प्रतिदिन के कार्य की तात्कालिक बना लेनी चाहिए कि किस समय क्या करना है । समय का सदुपयोग करने केलिए हमें बाल्यकाल से ही किसी प्रकार का व्यायाम अवश्य करना चाहिए । इससे हमारे शरीर सुपुष्ट होगा । मानसिक उन्नति केलिए हमें अच्छे ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए तथा अपने से अधिक बुद्धिमान लोगों के साथ जीवनोपयोगी विषयों पर वार्तालाप करना चाहिए । आत्मिक शक्ति की उन्नति केलिए हमें कुछ समन्वया भगवत - भजन में लगने चाहिए । ईश्वर ही जन्म से मृत्यु तक हमारी रक्षा करते है । उसके उपकारों को स्मरण करना तथा उसका गुणवान करना हमारा परम पावन कर्तव्य है ।

समय का सदुपयोग हम आलस्य से दूर रहकर ही कर सकते है । आलस्य समय का महान सत्तू है । आलसी मनुष्य का समय यो ही बिताना जाता है । ऐसा मनुष्य न तो विद्यार्थी - जीवन से विद्या प्राप्त कर सकता है और न जवान होकर गृहस्थी की ठीक तरह से संभाल सकता है । आज का काम कल पर डालने की आदत बहुत बुरी है । इससे कोई काम पूरे रूप से नहीं हो पाता । जो मनुष्य केवल गपशप में लीन रहता है , समझ लेना चाहिए कि उसका समय व्यर्थ ही बीत रहा है इसी प्रकार किसी की निन्दा करना , इधर - उधर बिना किसी उदेश्य से घुम करना , गन्दी पुस्तको पढना आदि भी समय के अभाव की शिकायता किया करते है । परिश्रमी मनुष्य के पास कभी भी समय का अभाव नहीं होता । सबसे अधिक काम से व्यस्त रहने वाले व्यक्ति को सबसे अधिक अवकाश भी मिलता है । अपने समय का सदपयोग करने वाले ऐसे ही पुरुषरत्न विश्व , विश्रुत , साहित्य राष्ट्र नायक होते है ।

समय की क्षमता महान है । यह क्षण में ही राजा को रंक और रंक राजा बनता है । इसकी गति रोकेट से ही तीव्र ऐसा था " माई का लाल पैदा नहीं हुआ , जो समय की गति को रोकने की सामर्थ्य रखता है ।

ATHIRA ANAND
2ND DC GEOLOGY

ऋषि कपूर

ऋषि कपूर एक भारतीय फिल्म अभिनेता निर्माता है ऋषि कपूर अपने जमाने के चॉकलेटी हीरो के रूप में जाने जाता है।ऋषि कपूर एक ऐसा परिवार से ताल्लुक रखते बॉलिवुड में बहुत ही महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है । ऋषि कपूर ने उनके फ़िल्मी करियर में सैकड़ों फिल्मों की है । इस दौरान उन्होंने कई अवार्ड भी अपने नाम किये । साल २००8 में ऋषि कपूर को फिल्म फेयर लइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड भी पाया । ऋषि कपूर अभी भी बॉलीवुड में एक सजीव अभिनेता है ।

ऋषि कपूर का जन्म 4 सितंबर 1952 में मुंबई के चेंबूर में हुआ ऋषि कपूर बॉलीवुड के शोमैन यानी चिंटू है ।ऋषि कपूर के दो भाई है । रणधीर कपूर और रणबीर कपूर और दोनों ही बॉलीवुड अभिनेता है ।

ऋषि कपूर ने अपनी प्राथमिक पठाई अपने भाइयों के साथ के । कैमिय स्कूल मुंबई और उसके बाद आगेकी पढ़ाई गोय कॉलेज अजमेर से पूरी की ।

ऋषि कपूर की शादी बॉलीवुड अभिनेत्री नीतू कपूर से हुई है ।फिल्मी परिवार से होने के कारण ऋषि कपूर हमेशा से ही फिल्मों से अभिनय करने की रुचि रखते थे ।

2019 से ऋषि कपूर बोन मेरो कैसर हो गया |जिसके बाद वह इलाज के लिए न्यूयॉर्क गए ।साल में सफल हुए इलाज के बाद 26 सितंबर 2019 भारत लौटे ।29 अप्रैल 2020 को सांस लेने में तकलीफ के कारण उन्हें मुंबई के मर एचएन रिलायंस फाउंडेड हॉस्पिटल में भर्ती कराया गया जिसके बाद उसे अप्रैल 2020 कोबॉलीवुड का चमकता सितारा सभी को अलविदा कह चला गया ।

SWAPNA N.V
1ST DC BCOM

मेरे भाई

दोस्तों आज हम आपके लिए लाए मेरे भाई पर निबंध चलिए अब हम पढ़ेंगे मेरे भाई पर लिखे इस निबंध को । मेरे सबसे प्रिय एक भाई है जिससे मैं बहुत प्रेम करता हूं ।हम बचपन में हम साथ में खेलते थे और हमेशा एक दूसरे की मदद करते थे आज मेरे आज मेरे भाई बर्थडे हो चुके हैं । आज भी हम एक दूसरे से प्रेम करते हैं जब हम एक साथ मिलते हैं तब हमें हमारा बचपन की यादें आ जाता है आज आज भी मेरे भाई से मैं बहुत प्रेम करता हूं ।

बचपन में हम साथ में स्कूल जाते थे साथ साथ में खेलते थे ।जब हम किसी बात को लेकर आपस में झगड़ा करते थे तब हमें बड़ा मजा आता था और हम कुछ समय तक एक दूसरे से बात नहीं करते थे लेकिन कुछ समय बाद हम दोबारा से खेलने लगते थे ।आज हम सभी बड़े हो चुके हैं बड़े होने के बाद मेरे भाई बड़ी इज्जत करते हैं, मुझे मान सम्मान देते हैं ।जब हमें एक दूसरे की जरूरत होती है तब हम एक दूसरे की मदद करने के लिए तैयार हो जाते हैं ।मेरे भाई आज पढ़ लिख कर एक अच्छी जॉब करने लगे हैं वह दूसरे शहर में नौकरी करते हैं ।

जब हम मेरे भाई छुट्टी लेकर यहां पर आते हैं तब हम आपस में लिखकर पिकनिक पर घूमने के लिए जाते हैं और पूरी परिवार आनंद महसूस करता है ।मेरे भाई भले ही नौकरी करने के लिए घर से दूर रहते हैं लेकिन हम एक दूसरे के दिल के बहुत करीब हैं ।मेरे भाई कि जब नौकरी लगी थी तब मैंने आसपास के पड़ोसियों को मिठाइयां बांटी थी और मैंने मेरे भाई को धन्यवाद दिया था ।आज मेरे भाई एक अच्छी नौकरी कर रहे हैं वह अच्छी पोस्ट में नौकरी कर रहे हैं ।उनकी हर साल तरक्की होती है।मेरे भाई का सपना था कि वह एक अच्छी नौकरी करें जब उनको एक अच्छी नौकरी मिली तब हम सभी को बहुत खुशी हुई थी।

मेरे भाई, मेरे लिए वह सबसे ज्यादा दोस्त है ।हम कभी भी एक दूसरे से कुछ भी बात छुपाते नहीं है ।यदि मैं किसी मुसीबत में हूं तो मैं अपने भाई से उस मुसीबत को शेयर करता हूं और जब मेरे भाई किसी मुसीबत में होते हैं तब वह भी उस मुसीबत की बात हो जाए बताते हैं ।हम एक दूसरे कि हमेशा मदद करते रहते हैं ।छुट्टियों मैं मेरे भाई घर पर आता है तब हम पूरी परिवार के साथ क्रिकेट खेलते हैं ।मेरे भाई का सबसे पसंद खेल क्रिकेट है और हम सभी मिलकर क्रिकेट खेलते हैं ।जब हम साथ में रहते हैं तब हमारी बचपन से ही एक आदत है कि हम सुबह के समय जल्दी उठकर एक साथ घूमने के लिए जाते हैं और दौड़ते हैं और व्यायाम करते हैं ।

हम सभी प्रतिदिन भाई को फोन करते हैं ।कभी भी अपने भाई को फोन लगाता हूं तो कभी वह भी मुझे फोन लगा कर हाल-चाल पूछे लेते हैं ।हम दोनों एक दूसरे से बहुत प्यार है और हमारा यह बॉन्ड कभी भी काटते हैं । हम दोनों एक दूसरे से सम्मान करते हैं ।जब हमारे घर में किसी तरह का कोई कार्यक्रम होता है तब हम दोनों एक साथ मिलकर उस कार्यक्रम को सफलता की और ले जाते हैं। दिवाली के समय हम सभी एक साथ मिलकर दिवाली मनाने हैं और यह दिवाली हम सभी के जीवन में खुथियाँ लेकर आती है । मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि हे भगवान मुझे हमेशा ऐसी ही संतोष और उससे अधिक स्नेह और प्यार से ना रहने दूँ। मेरी भाई भगवान से मिले मेरी दुनिया का सबसे बड़ा उपहार है और उसके प्रति मेरा प्यार और संतोष कई शब्दों द्वारा व्यक्त नहीं किया जा सकता है ।

SANJANA
1ST DC GEOLOGY

चुटकुले

मोनू (दोस्त से) : लोग फुटबॉल को पैरों से क्यों मारते हैं ?
सोनू : गोल करने के लिए |
मोनू : लेकिन फुटबॉल तो पहले से ही गोल है ।
मरीज : डॉक्टर साहब ! फूलों की हार किसके लिए है ?
डॉक्टर : ओ ! वह मेरे लिए है अगर मेरा पहला ऑपरेशन सफल हुआ तो , नहीं तो तुम्हारे लिए |
गुरुजी : पृथ्वी गोल क्यों है ?
बच्चा : मौसम गोल है , संतरा भी , चश्मा भी गोल है , धरती भी गोल है ।
गुरुजी : बेटे ! चश्मा लगा कर देखो , तेरी आंख भी गोल है ।
रमेश : अगर आपको पता चला कि मैं फर्स्ट क्लास के साथ पास हो गया तो आपको कैसे लगेगा ?
पापा : मैं खुशी के मारे पागल हो जाऊंगा ।
रमेश : बस ! इसी कारण से ही फेल हो गया ।
एस विपिन : अगर मैं हिमालय पर चढ़ूँगा , तुम मुझे क्या देगा ?
राज : धक्का ।

AKHIL N.A
1ST DC GEOLOGY

शेर और चार बैल

एक बार की बात है एक जंगल में चार बेल रहते थे ।वे जंगल में बड़ी सुखी से रहते थे | जब किसी एक पर मुसीबत पड़े तो वे एक साथ मिलकर एक दूसरे की सहायता करते थे | एक बार एक शेर उनको खास पर चरतेहुए देखकर उन पर हमला कर देता है ।अपने उद्धार हमला होते देख बेल संभल गये ।उन्होंने एक जुट होकर शेर का सामना किया |

अपने ऊपर एक साथ हमला होते देख शेर घबरा गया और उसे अपनी जान बचाकर भागना पड़ता है । शेर समझ गया था कि इन्हें एक उपाय सोचा उसने उन बैलों के बीच फूट डाली उसका प्रभाव उन बैलों पर पड़ा | बैल कुछ दिनों तक अपस में लड़ते रहे फिर किसी चतुर बूढ़े बैल ने उन्हे समझताया कि वे सब आपसी विश्वास भूलकर अपनों का ही खून बह रहे हो ।

तुम सब शत्रु मोहरे बन चुके हो शत्रु को पहचानों उस उसके लक्षय को ध्वस्थ कर दो बैलों कोउनकी बात समझ में आई जब शेर ने एक बेल पर अवसर देखकर हमला किया तो तीनों बेल एक साथ आए । उन्होंने मिलकर शेर को इतना मारा की वह उठने के लायक ही नहीं रहा | आज हमारे देश की स्थिति कुछ ऐसी ही है ।

हमारे देश के लोग कभी धर्म के नाम पर कभी जमीन के नाम पर कभी कृर्षिके नाम पर आपस में लड़ते हैं या फिर समाज में अशांति फैला देते हैं क्या कभी इन लोगों सोचा है कि हम भारतवासियों के बीच फूट कौन डाल रहा है । ध्यान से देखने पर पता चलता है कि यह काम विदेशी शक्तियों का है।यह हम समझ नहीं रहे हैं क्योंकि हमने अपने दिमाग में ना समझने का ताला लगा रखा है | जो बड़े दुख की बात है |

ROSE PAUL
2ND DC PHYSICS

सिर्फ मानव

पिता रक्षति कॉमारे भर्ता रक्षति यौवने ।
रक्षन्ति स्थविर पुजा , न स्त्री स्वातन्जयमहती ॥

भारत साहित्य में सुप्रधान स्थन लेने वाला काव्य ' मनुस्मृति ' से लिये हुए दो पंक्तियाँ के बारे में अगर सोचेगे तो शायद उतर यही पक्तियां होगी । इसी पंक्तियों को लेकर बहुत सारे लोग भारतीय संस्कृति और भारतीय परंपरा को स्त्री विरुद्ध तरीकों से तुलना करते हुए देखा गया है । लेकिन , क्या कवि हमसे यही कहना चाहते है कि स्त्री को आज़ादी का हक नहीं है या फिर उसको आजादी से जीने की तमन्ना नहीं होनी चाहिए । जी , बिलकुल नहीं । हमारे इस समाज में औरतों को असुरक्षित स्थितियों से गुजरना पड़ता है । ये पहचान कर कवि ने इन पंक्तियों से हमें याद दिलाया है कि स्त्री की सुरमा पुरुष का दायित्व और धर्म है
यही मनु मनुस्मृति ' में ये भी लिखा है कि यत्र नार्यस्तु पूज्यते समन्ते तत्र देवता ।
गतान , जहाँ स्त्री की होती है वहाँ देवता रहते है । औरतों को इसी तरह संपूज्य समझने वाले मनु, स्त्री को पुरुषों के गुलामी में रहना है, एसी सोच को मॉका भी नहीं,लेकिन, क्या करे , बदकिस्मत से पुरुषों के दिखाने हमारे इस समाज में थोपने के लिए प्रयत्न करने वाले कुछ पदितों ने या फिर यूँ कहूँ कि अपने आपको पंडित समझने वाले कुछ लेगों ने उन पंक्तियों को गलत तरीकों से अपने मतलब के लिए इस्तेमाल किया । उन लोगों ने कहा कि आजादी मतलब है अपनी मर्जी से जिंदगी जीना , अगर औरतों को अपनी मर्जी से जिंदगी जीने दें तो ये समाज ही बरबाद हो जाएगा । इसके परिणाम स्वरूप , हमारे इस समाज में औरतों ने सदियों तक मर्दो के पाँव के नीचे दबी रहीं । ये सब तो हम जानते है . लेकिन आज की बात अलग है ।

आज औरतें सभी क्षेत्रों में पहुंच गई है । ममुदर की गहराइयों से आसमान की ऊँचाइयों तक स्त्री पहुंच चुकी है । अपने सामने आये सभी चुनौतियों को पार कर वे समाज के ऊँचे स्थान तक पहुंच गई है । इसी तरह अपने हस्ताक्षर को इतिहास के पन्नों पर छपवा दिया है । एसी बहुत सारी औरतें हमारे सामने है : जैसे कि झाँसी रानी , इंदिरा गाँधी . मदर तेरेसा , रज़िया सुलताजा . मलाला यूसुफसाई , क्यों और कहूँ . हमारे कालेज के पूर्व छात्रा पौ.यू चित्रा जी भी इसी का उदाहरण है ।

ये सब बदलने से भी , अपने आपको शिक्षित महान समझने वाले हमारे समाज के कुछ लोगों ने स्त्री को सभी तरह से शक्तिशाली मानने के लिए आज भी तैयार नहीं है । " लड़की है न उसे पढ़ाई करने से क्या फायदा " . आज नहीं तो कल उसको दूसरे घर में जाना तो होगा न " ! ये है , आज के कुछ माँ - बाप की सोच । हिंदी कविता में अनेक कवियों ने इस विष् को लेकर बहुत ज्यादा लिखा है । जैसे अनामिका जी , उन्होंने अपने ' बेजगह ' कविता में लिखी है कि , हमारे इस समाज में औरतें केश और नाखून की तरह है । अपनी जगह से गिरकर कहीं की नहीं रहतीं । आज भी लड़कियों को अपने सपने देखने का हक और उसे साकार करने का हक पूरी तरह से नहीं मिली है । ये सब सही नहीं है औरतें भी इस समाज का हिस्सा है । अगर हम लड़कों और लड़कियों को तुल्यता देना है तो , उसके लिए परिवर्तन तो हमारे घर से ही शुरु करना होगा । माँ- बाप बच्चों को यही सिखायें कि , लड़का और लड़की बराबर होते है , किसी में न कोई छोटा होता है और न कोई बड़ा और लड़कों को ये भी सिखाना है कि , वे तन्त्र एक मर्द बन जाते है , जब वे एक लड़की को सही इज्जत देना शुरू करता है । अगर वैसा होता है तो , हमारे समाज में न रहेगा पुरुष , न रहेगी स्त्री , रहेगा तो सिर्फ मानव । और ये परिवर्तन हमसे शुरू होना चाहिए । अगर एक साथ है तो सब अच्छा !

ANNTREENA SOJAN P
2ND DC ZOOLOGY

प्रकृति की रक्षा

धरती हमारी माता है । माता हमारी कितनी अच्छी तरह से देखभाल करती है । बदल में वह कुछ नहीं लेती । केवल देती है । उस धरती की संतान हम अपने स्वार्थ और लालच के जाल में फँसकर पहले पेड़ काटे तो धरती को गर्म सहनी पडी फिर भी उसने कुछ नहीं कहा ।कार कानून से तेजाबी पेशवा और शहरों का कूड़ा कचरा नदी में डालकर शुद्ध जल को बैगनी बना दिया ।इस पर भी वह दुखी होकर तुम सबको बच्चा समझकर क्षमा कर दिया ।परमाणु बमो के परिश्रम से तुम ने उसके जाति को छलनी छलनी कर दिया ।इसके बाद भी जंगलों में आग लगाकर पर्यावरण का नाश कर दिया और तो और नदियों से रेत निकलकर तुमने धरती के पारे को बढ़ा दिया ।सह ना सके वह इसलिए उसके सुनामी का ताण्डव दिखा दिया ।जहांजो को ऐसे जिला उलूम की गेर पर चारों दिशाओं में फेंक दिया ।उस दिन इंसान जा रे जा के मारे इबादत गाने में बैठकर ऊपर वाले से रक्षा की गुहार करने लगे ।दो गम के झटके लगे तो स्वार्थ से बनाई इमारत को गिरा दिया । आज भी उसे समझ में नहीं आ रहा ।अरे प्रगति ही नहीं रहोगी तो हम कैसे बचेंगे ।क्योंकि जहां है हरियाली , वहां है खुशहाली ।

BIYA GEORGE
2ND DC MATHEMATICS

सुनील छेत्री

सुनिल छेत्री एक भारतीय पेशेवर फुटबोलर है । सुनिल छेत्री का जन्म (3 अगस्त 1984) आन्ध्राप्रदेश के सिकंदराबाद नामक स्थान पर हुआ । उनकी माता और दो बहनों ने बोपाल की महिला टीम से फुटबॉल खेला था । शायद इसी में उनकी रुचि फुटबॉल में बचपन से जागी । उनके पिता भारतीय सेना में एक गोर्खा जवान की नौकरी करते थे और उनका स्नानान्तरण बहुत जल्दी होता था । परंतु इससे सुनील को कोई फर्क नहीं पड़ा । वह तो केवल फुटबॉल के दीवाने हो चुके थे । आवसायिक जीवन)

14 साल की आयु में सुनील ने अपना फुटबॉल जीवन दिल्ली शहर में 2001 में शुरू किया । एक साल बाद ही तुरंत उनकी प्रतिभा को मोहन बागान ने समझा और उन्हें शामिल कर लिया । उस दिन से सुनील के पेशेवर फुटबॉल जीवन का आरंभ हुआ और फिर वण थी उसने कभी पीछे मूड के कभी नहीं देखा । लोकप्रिय रूप से कैप्टन फैटास्टिक के रूप में जाना जाता है । जिसने क्रिस्टियानो रोनाल्डो के बाद सक्रिय खिलाड़ियों के बीच अंतर्राष्ट्रीय मैचों में सर्वाधिक गोल करने के मामले में दूसरा स्थान मिला है । वह दोनों सबसे कैप्ट खिलाड़ी है । और देश का शीर्ष अंतर्राष्ट्रीय संघ फुटबॉल गोल स्कोर की सूची । सर्वकालिक शीर्ष गोल करने वाले भारतीय राष्ट्रीय टीम केलिए 72 राष्ट्रीय गोल के साथ 112 दिखावे में सुनील छेत्री के एएफसी द्वारा उनके 34 वें जन्मदिन पर एशिचाई आईकन कामित किया गया था ।2006,2009,2012 , में नेहस कप जीता है और 2007 मे एनिया कप में केलिफ कालीफाई भी हो गये । इसमें कोई शक नहीं है एक वह भारत के सबसे अच्छे खिलाड़ी है । अर्जुन पुरस्कार से भी नवाजा गया है । एन डी टी वी इंडिया ने उन्हें प्लेयर और द एअर क अवौड़े भी गीत चुके है ।

ये सब पुरस्कार बताते है कि ऐसा कारनामा कोई आम खिलाड़ी नहीं बल्कि एक प्रतिभावान खिलाड़ी ही कर सकता है निश्चित रूप से सुनील छेत्री आगे भी लिया जाएगा ।

SANJAY T.P
2ND DC ECONOMICS

कोरोना

ओ कोरोना तू कहाँ से आया।
सब कुछ हो गया पराया पराया।
तेरा आना किसी को न भाया।
मम्मी भोले हाथ धोए।
घर से बाहर कहीं ना जाए।
स्कूल की टीचर की याद सताए।
नानी को घर हमें भूलाए।
शोंपिग के लिए मन ललचाए।
बथेर्ड फीका फीका पड जाए।
ओ कोरोना तू बता हम छोटे छोटे बच्चे,
कैसे अपना दिल बदलाए।
तेरा भय इतना सताए।
कोरोना तुझसे नही डरते है हम।
हममें है तुझसे लडने का दम।
सोशल डिस्टन्सिंग निभाएंगे।
गुड सिटिज़न बनकर दिखाएंगे।
सरकार के रूल्स अपनाएंगे।
घर में बैठकर तुझे हराएंगे
और फिर अपना जीवन खुशहाल बनाएंगे।।

AKSA VARGHESE
2ND DC GEOLOGY

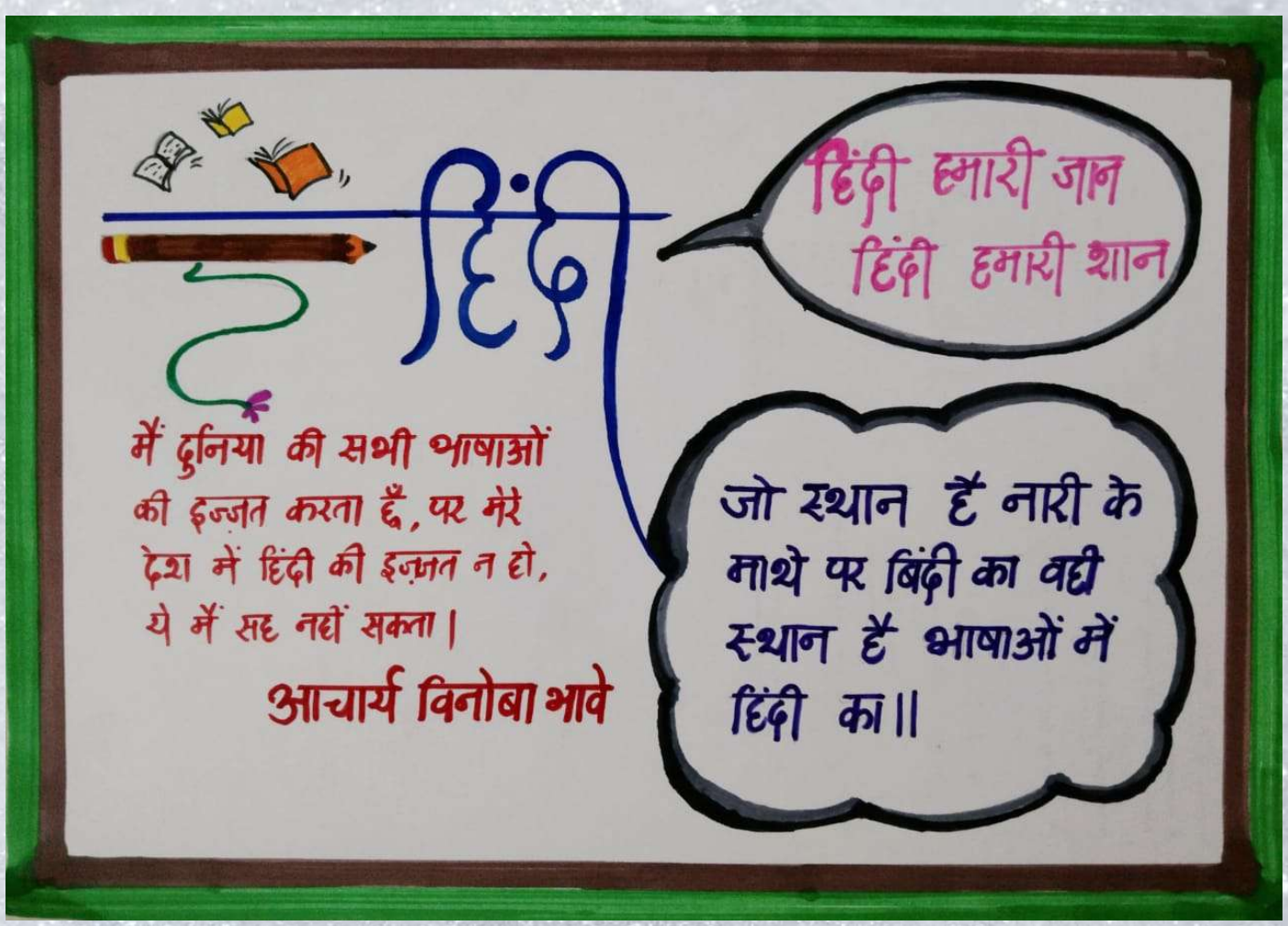

SRUTHI LAKSHMI M.O
1ST DC PHYSICS

प्रगति

मंगलवार का दिन था । दोपहर को थका हुए एक बूढा आदमी सुपरमार्केट के सजे सजाये प्रवेश द्वार के पास खड़ा था। जहां पर वह खड़ा था, सड़क के उस पार लग्जरी शॉपिंग मॉल का शानदार दृश्य था। वह एक सप्ताह के लिए यहां था, लेकिन अभी भी पानी से बाहर पडी मछली की तरह तडप रहा था। वह मन से दुखी था । लोगो की भीड आने से पहले ही

उसके मन ने उसे बचपन की शुरुआती दिनों को याद किया। उन्हें उस सुन्दर घर का बड़ा कमरा जो एक किराने की दुकान थी । जिसमे वह काम करता था। उनके दादा एक बड़े बूढ़े आदमी थे, जिनकी आँखों में एक अनूठी चमक थी,वे स्टडी टेबल पर बैठे थे, जो कैश काउंटर का काम करते थे। राजीव,उन का एकमात्र पोता था वह उनकी आंखों का तारा था। स्कूल के बाद हर शाम को राजीव दुकान में समय बिताता था ।

उन्होंने उन परिचित चेहरों को याद किया, जो उनकी दुकान में आते और सिर्फ एक या दो सामान खरीदने के लिए आते थे । लेकिन उन्हे हमेशा छोटे लड़के को "नमस्ते" कहने मे झिझक होती थी। सभी एक दूसरो को मुस्कुराकर अदब से बात करते थे । स्वार्थ और अहंकार नाम की चीज थी ही नही ।हर कोई हर किसी को जानता था - उस समय एकताबद्ध
समाज था ।

आज हर कोई स्वार्थी हो गया है। कई बार, लोगों जब कैश काउंटर पर लंबी कतारों में खड़ा होते है। तब भी वे एक दूसरो को देखकर मुस्कुराते कम है ।केवल अधीरता या झुंझलाहट व्यक्त करने के लिए अपनी चुप्पी तोड़ते हैं। ऐसा लग रहा था कि लोग मुस्कुराहट जैसी अनमोल मूल्य को भूल गए हैं।

उन दिनों में, बच्चे अक्सर अपने माता-पिता के एक साथ जाते थे, उन्हें याद था कि वे स्टोर में कैसे आया करता थे, और वे विनम्रता से पूछते हैं कि वे क्या चाहते थे। किसी को भी आज के बच्चों को अनुशासित करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई?

वे बच्चे जो अपने माता-पिता के साथ सुपर मार्केट जाते हैं, वे बेतरतीब ढंग से चॉकलेट, शीतल पेय, सीडी, या जो भी वे पसंद करते हैं
उठाते है। माता-पिता ने उन्हें कभी न नहीं कहा,कोई भी सवाल नहीं पूछा । जो बिल्कुल ठीक नही है।

उनके दादा का निधन हो गया है, जब राजीव 10 साल का था। उनके पिता ने उनकी विरासत को संभाला था। कुछ वर्षों तक, चीजें सुचारू रूप से चलती रहीं। तब राजीव के पिता की अचानक मृत्यु हो गई, और उस पर जिम्मेदारी का भार पड़ गया। उसे जल्द ही एहसास हो गया कि समय बदल रहा है। धीरे-धीरे, लेकिन समाज में लगातार बदलाव राजीव के लिए स्टोर पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे थे यह अंत की शुरुआत थी। वह कॉर्पोरेट जगत के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता था। वातानुकूलित सुपरमार्केट जो मुफ्त में ऑफर करते हैं, जहां हर जगह बसंत होती है। वह निश्चित रूप से उन सभी फैंसी वस्तुओं का स्टॉक नहीं कर सकता था। उसकी खुमारी उतर गई। अंत में,उसे हार स्वीकार करना पड़ा। अपने पूर्वजों से माफी मांगने के साथ, वह अंततः में अच्छाई के लिए उसने अपनी दुकान को बंद कर दी।

राजीव के लिए सौभाग्य से पुरानी संपत्ति को अच्छी कीमत मिली। वह दूर के उपनगरों में एक आरामदायक घर खरीदने में सक्षम रहा। उनके दो बेटे पढ़े लिखे थे,वे दोनों विदेश में थे। ,उन्हें उनके बारे में कोई चिंता नहीं थी चिन्ता थी,केवल अपने बुढ़ापे की। भगवान की कृपा से वह न विकलांग है न अपाहिज अभी भी वह स्वस्थ था। उनके बचपन में, छुट्टियों का मतलब था कि सभी चचेरे भाई बहिन साथ मिलना और उनके साथ एक मजेदार समय बिताना । आजकल छुट्टियों का मतलब केवल विदेशी गंतव्य के लिए रवाना होना और अजनबियों के बीच समय बिताना हो गया।

अंत में उन्हें सुपरमार्केट में सुरक्षा गार्ड के रूप में नौकरी मिल गई। यह विडंबना थी, लेकिन पुराने लोगों को केवल चौकीदार के रूप में नौकरी दी गई थी। इसका मतलब था, दरवाजे के पास खड़े होने का सिर्फ अंतहीन, सुनसान घंटे। कांच का दरवाजा अपने आप खुल गया, जब कॉस्ट्यूमर्स आए। उसके पास शिकायत करने का कोई कारण नहीं था-उसने अच्छा भुगतान किया है।

वह वहाँ खड़ा था, एक मुस्कुराहट के साथ, यह सब की विडंबना को दर्शाता है। एक तरह से,जीवन पूर्ण चक्र में आ गया था लेकिन यह एक अलग वर्ग के साथ वापस आ गया था। आज अधिकांश फैंसी क्रेडिट कार्ड का उपयोग करता था। दादाजी के समय में, जिसमें खातों को बनाए रखा गया था। उन्होंने प्रत्येक महीने के अंत में भुगतान किया। वे लेनदेन विश्वास, अखंडता और मूल्यों पर आधारित थे, जो किसी भी तरह से खो गए थे। वह चमचमाती रोशनी के बीच खड़ा था, उसे कुछ याद आया जो उसने कहीं पढ़ा था.....

"सभी प्रगति परिवर्तन के कारण आती है,
लेकिन सभी परिवर्तनों से प्रगति नहीं होती है! "

NEHA MARIYA
2ND DC PHYSICS

क्लास के आखिरी दिन

एक साथ रहने के बाद
बिदाई का दिन आ चुका है
रंग से भरी जिंदगी की खट्ठी - मीठी यादें
और गम – खूशी मिल – जुलकर
हमे एक साथ अलग रास्ते
में जाना पड़ता हैं |
हर एक चुनौती को स्वीकार कर ने
हार को मिटाना केलिए
परीश्रम का सहारा है लेना ही पडता है ।
लक्ष्य को प्राप्त करने केलिए
गुरु का आर्शिवाद पाना ही पड़ता है ।
एक साथ रहने के बाद
बिदाई का दिन आ चुका हैं।

LAKSHMI K.S
2ND DC MATHEMATICS

अतीत

अतीत तो अतीत हो गया
उसमें सब व्यतीत हो गया
सब आगे बढने की कोशिश तो करो
किसी से मत डरों
आगे बढ़ने का सुझाव कोई तो दिया करो
अतीत तो अतीत हो गया।
उसमे सब व्यतीत हो गया
उसकी चिन्ताओ मे भढक गया
एक तनाव मुझ मे बस गया
किसी ने कहा अपने अपराधो को भूल जाये
भविष्य के मीठे संगीत गाये
अतीत का दीमक जब आए
मुझे खोखली कर जाये
अतीत का दर्पण मुझ मे है समाया
छुट नही रहा है उसका साया
मेरी हिम्मत को मैंने नहीं खोया
अतीत ने मुझे बहुत है दबाया
मुझे स्वयं पर ऐसा विश्वास है समाया
नयी ज़िन्दगी की उडान के लिए
मैंने मेरा मन है घुमाया
अतीत तो अतीत हो गया
उसमें सब व्यतीत हो गया

ANNIE JOSEPH
2ND DC ECONOMICS

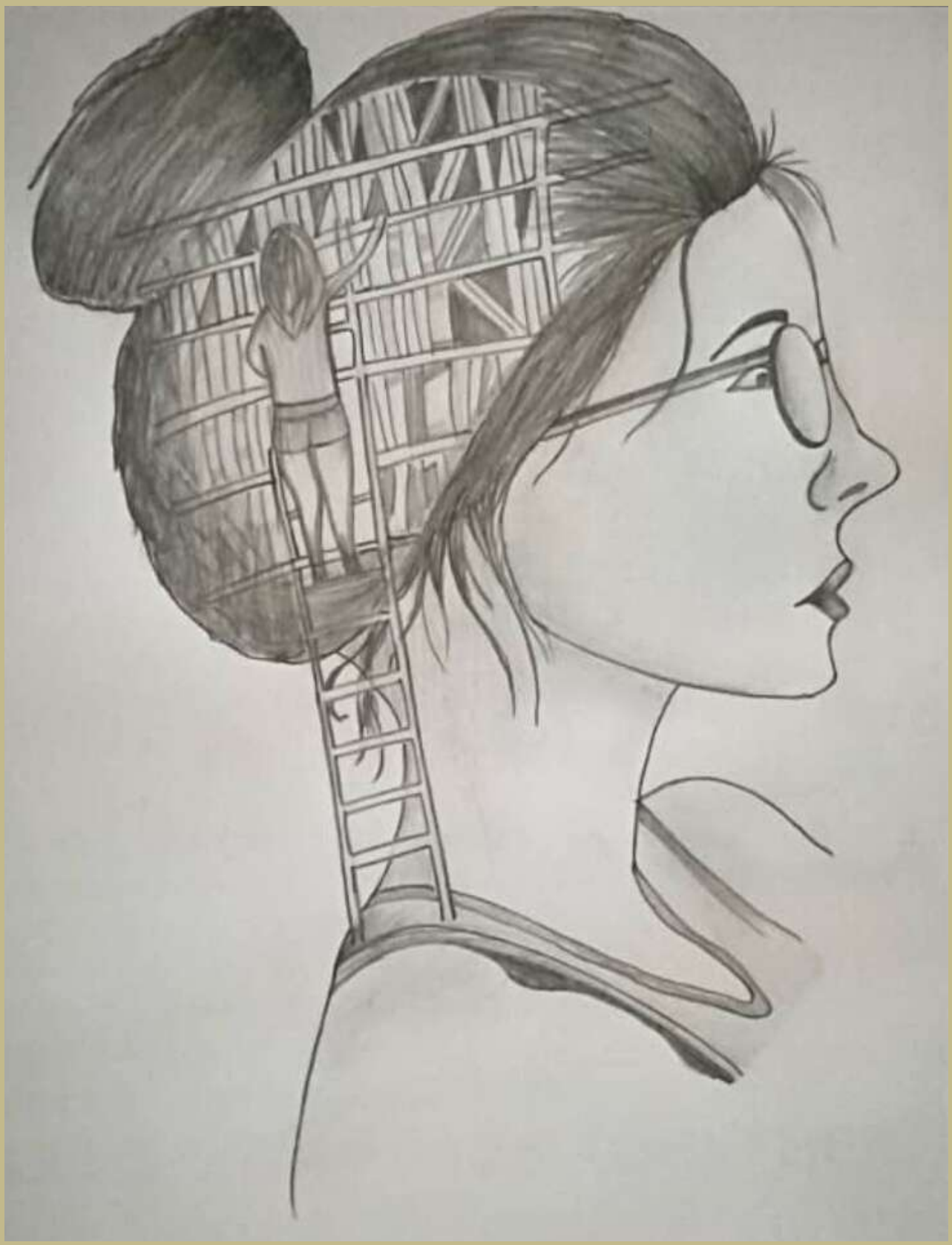

AKSHAYA KRISHNAN
2ND DC MATHEMATICS

भाषण

विषय : किसान आंदोलन

V.VINEETHA
1ST DC CHEMISTRY

नवाजुद्दीन सिद्दीक

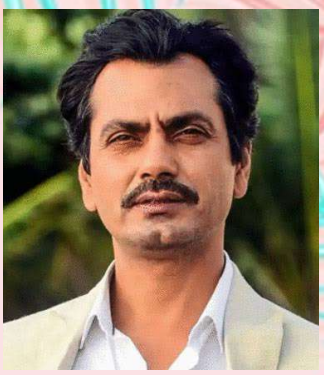

सिद्दीकी का जन्म 19 जुलाई 1974 को मुजफ्फरनगर जिले , उत्तर प्रदेश , भारत के एक छोटे से शहर बुढ़ाना में हुआ था । वह अपने आठ भाई बहनों में सबसे बड़ा है ।सिद्दीकी की शादी अंजना किशोर पांडे से हुई है | उनकी एक बेटी शोरा और एक बेटा यानि है । उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से रसायन विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की । एक बार नई दिल्ली में एक नाटक देखने के बाद तुरंत अभिनय के तैयार हो गए | सिद्दीकी नई दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय गए और वहाँ से स्नातक करने के बाद मुंबई चले गए | उन्होंने वर्ष 1999 में आमिर खान अभिनीत फिल्म सरफरोश में एक छोटी भूमिका के साथ बॉलीवुड में अपनी शुरुआत की । इसके बाद वह दो तीन फिल्मों में भी दिखाई दी । 2002 और 2005 के बीच उसे फिल्मों में काम नहीं मिला । वह चार अन्य लोगों के साथ एक फ्लैट में रहता था । 2004 उनके संघर्ष के सबसे बुरे वर्षों में से एक था । वह अपने किराया तक नहीं दे सकते थे । 2004 और 2007 के बीच सिद्दीकी कुछ फिल्मों में छोट भूमिकाएँ की थी | 2010 के फिल्म पीपली लाइव एक पत्रकार की भूमिका की थी , जिससे पहले बार उन्हें एक अभिनेता के रूप में व्यापक पहचान मिली । उसके बाद वह बहुत सारे फिल्मों में अभिनय किया जैसे की तलाश , किक , बजरंगी भाईजान , मांझी द माउंटेन मैन आदि । उन्हें अपने अभिनय के लिए बहुत सारे पुरस्कार मिले जैसे कि : - राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार , एशिया फिल्म पुरस्कार , फिल्म फेयर अवॉर्ड्स , ऐ.ऐ.एफ.ए अवॉर्ड्स , अंतरराष्ट्रीय एमी पुरस्कार आदि ।

MAHESH MENON
1ST DC PHYSICS

यह है 21व सदी

21वीं सदी है सब कुछ आसान
जो चाहे वह है सब उपलब्ध है उंगलियों के पास
सुना है आज सब कुछ तेज काम करता है
पर क्या भूल गये तेज का अर्थ यह नही कि दूसरो को पीछे छोड दे?

आज जीत हासिल करना उससे कम कुछ बरदाश नही होता,
पर क्या अपनी जीत दूसरों के हारने पर निर्भर है?

हम आज स्वतंत्र माने जाते हैं, पर जब राजनीतिक तौर पर सही नहीं ठहरते
तो क्यों आलोचकों को जेल क्यो जाना पडता है?

एकसिडनट में कोई पड़ जाए मदद करेगा कौन ?
क्योंकि अपने फोन से वीडियो लेना या देखना मन्नत मानते है।

सब के दिमाग में आज-कल एक वोट-बैंक है
अपने सोशल- मीडिया के पेज पर वह 'लाइक' का बटन
वह ही जीत है!

सैकड़ों मील दूर पड़े दोस्त से तो हर दिन बात हो जाती है
पर अपने पड़ोसी कौन है न जाने, आज इसमें थोड़ा बदलाव आया है
इसलिए दुआ किसे दू?! covid को?!

BEJOY JAYARSON
2ND DC PHYSICS

जिंदगी जियो

आज में जियो,कल में नही
परंतु कल को न भूलना ।
ज़िंदगी को जियो जी भर के
जैसे हमारी कोई कल ही न थी ।
हर एक पल को जियो
ज़िंदगी अभी खत्म हो जाएगी ।
पूरे करो वे सपनो, जो अधूरे रहे थे ।
उड़ो अपनी उड़ान और छू लो सार आसमान ।
न अपने गुज़रती कल की,
नही आने वाले कल की, फ़िकर हो,
जियो इस क्षण में , इस पल में ।
साथ रखो एक प्यारी मुस्कान
जो बदल सकती है ये जहाँन ।

ATHMAJA M
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

सुशांत सिंह राजपूत

सुशांत सिंह राजपूत हिंदी फिल्मों के अभिनेता होने के साथ-साथ थिएटर और टीवी अभिनेता भी हैं। टीवी सीरियल पवित्र रिश्ता में काम कर चुके राजपूत को इस सीरियल की बदौलत काफी लोकप्रियता मिली थी। सुशांत सिंह ने फिल्म काय पो चे से अपने फिल्म करियर की शुरुआत की जिसके बाद उन्हें एक स्टार के रूप में भी दर्शकों ने अपना लिया। सुशांत की फिल्म 'छिछोरे' को सर्वश्रेष्ठ फिल्म का 67 वा राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला।

पृष्ठभूमि

सुशांत सिंह राजपूत का जन्म पटना बिहार में हुआ है। उनके पिता सरकारी अधिकारी हैं।

पढ़ाई

राजपूत की शुरुआती पढ़ाई सेंट कैरेंस हाई स्कूल पटना से हुई है और इसके आगे की पढ़ाई दिल्ली के कुलाची हंसराज मॉडल स्कूल से हुई है। इसके बाद दिल्ली कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग से उन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी की।

कैरियर

सुशांत के करियर की शुरुआत बैकअप डांसर के रूप में हुई थी और उन्होंने फिल्म फेयर अवॉर्ड्स में भी कई बार डांस किया है। वहीं पर उनका सबसे पहले बालाजी टेलीफिल्म्स की कास्टिंग टीम ने नोटिस किया जिसके बाद उनके करियर की शुरुआत 'किस देश में है मेरा दिल' नामक सीरियल से हुई जिसमें उन्होंने प्रीत जानेजा का किरदार निभाया था लेकिन ज़ी टीवी का शो 'पवित्र रिश्ता' उनके करियर के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। इन सबके बाद 'काय पो छे' फिल्म से अपना फिल्मी सफर शुरू किया।

प्रसिद्ध फिल्में

काय पो , शुद्ध देसी रोमांस ,एम. एस. धोनी, पीके और केदारनाथ, छिछोरे और दिल बेचारा।

मृत्यु

बॉलीवुड अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत मुंबई में 14 जून 2020 को अपने घर में मृत अवस्था में पाए गए

MANEESHA RAJEEV
1ST DC BCOM

कोरोना

मास्क हम ने है पहना
जिससे कोविड हम में बहे ना
किसी चीज़ को अगर है छूना
साबुन से हाथ निरन्तर धोना
दो गज की दूरी है बनना
क्योंकि हवा में फैला है कोरोना
इन सब पर न रखोगे ताना बाना
कोरोना बन जाएगा आपका दीवाना

JITHIN
1ST DC INTEGRATED GEOLOGY

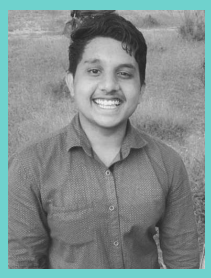

एक असामान्य रात

एक अंधेरी रात। राहुल धीरे-धीरे अपने पिल्ला के साथ मंद रोशनी में सड़क पर चलने लगा। अचानक तेज हवाएं, भयंकर गरज और बिजली कहीं से चमकने लगी। राहुल बहुत डरा हुआ था। राहुल ने दूर से देखा और डर के मारे पिल्ला को भौंकते देखा। अचानक एक अजीब वाहन राहुल के सामने आया।

यह एक यूएफओ था। यह पास के एक सुनसान खेत में उड़ गया। तीन एलियंस पृथ्वी पर चले गए। जब उसने उन्हें देखा तो राहुल घबरा गया। राहुल अपने पिल्ला के साथ एक पेड़ के पीछे छिप गया ताकि वे उसे न देखें। लेकिन उनकी हरकत ने राहुल को झकझोर दिया। वे पृथ्वी के सभी पेड़ों को अपने ग्रह पर ले जाने के लिए आए थे। वे प्रत्येक वृक्ष को गायब करने लगे। जब वे उस पेड़ से गायब हो गए जहां राहुल छिप रहा था, राहुल और पिल्ला उनके साथ अंतरिक्ष यान में प्रवेश किया। अंतरिक्ष यान ने जमीन से उड़ान भरी। पृथ्वी से बहुत दूर एक ग्रह पर पहुँच गया।

राहुल यह देखकर चकित रह गया। धरती पर हर चीज के बारे में जानकारी थी। उन्होंने योजना बनाई थी कि कैसे भूमि को अपने नियंत्रण में लाया जाए। उस हिस्से के रूप में, वे सभी पेड़ों को अपने ग्रह पर ले आए। अचानक एलियंस ने राहुल और पिल्ला की उपस्थिति को पहचान लिया। उन्होंने राहुल और पिल्ला को मारने का फैसला किया। राहुल ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने पिता, माँ, भाई-बहनों और दोस्तों को याद किया। मौत का सामना करते हुए अचानक एक आवाज़ 'बेटा'. जब राहुल ने आँखें खोलीं, तो उसके पिता और माँ सामने खड़े थे। और पिल्ला भी । राहुल ने राहत की सांस ली, यह याद करते हुए कि वह इतने लंबे समय से सपने देख रहा था।

MONICA S
2ND DC PHYSICS

पिता मेरे महान

कहता हूँ मैं
होता है पिता महान
बच्चे है उसकी जान
परिवार की है वह शान
रहती है उसमे ईमान
मुसीबत में हो परिवार का मान
अपने दमपर नहीं होने देगा अपमान
पिता पर करे अभिमान
इसलिए मत लो उसका इम्तिहान
अपने परिवार केलिए दे देगा जान
होता है पिता महान

SOORYAN K.S
1ST DC INTEGRATED GEOLOGY

भारत की प्रमुख समस्याएँ

हमारा राष्ट्र भारतवर्ष स्वयं विविधताओ व अनेकताओं का अनूठा संगम है । वह अनूठा संगम एकात्म के सुत्र में पिरोया हुआ भी है । एकता में विभक्ति धर्म, संस्कृति, सभ्यता, सम्प्रदाय व भाषा के लोग एक साथ निवास करते हैं। हमारे राष्ट्र की सभ्यता व संस्कृति को संपूर्ण विश्व में सराहा जाता है। समुच्चय विश्व के कवि लेखकों तथा विद्वानों के तमाम दार्शनिक व आध्यात्मिकता के उपासक मातृभूमि की प्रशंसा करते आए हैं। लेकिन इस गौरवशाली भारतवर्ष की भी प्रमुख समस्याएं हैं।

भारतवर्ष की प्रमुख समस्याएं दो प्रकार की है -

एक तो वह जो राष्ट्रीय द्वारा बनाई गई है और दूसरी जो बाहरी शक्तियों के कारण निर्मित हुई है। सर्वप्रथम तो हम बात करते हैं क्षेत्रवाद और सांप्रदायिकता वाद से संबंधित समस्याओं की। हमने अपने राष्ट्र को आजादी के पश्चात क्षेत्रीयता में विभाजन करने का आधार संप्रदाय व प्रांतीयता को बनाया। यह हमारी बहुत बड़ी भूल थी जिसके लिए हमने ना जाने कितनी कुर्बानी दी है और ना जाने कितनी आगे भी देंगे। राजस्थानियो का राजस्थान, मराठियों का महाराष्ट्र, बंगालियों का बंगाल, पंजाबियों का पंजाब- इस प्रकार से हमने संप्रदायवाद को बढ़ावा देने का कार्य किया। हमने यह नहीं सोचा कि राष्ट्र को एक सूत्र में बांधने के लिए हमें भारत वासियों को ऐसी पहचान प्रदान करनी चाहिए जिसमें उनकी शब्द पहचान विलुप्त हो जाए। बड़े उद्देश्य को पाने के लिए हमें उन लघु उद्देश्य की बलि करनी चाहिए थी। जो बड़े उद्देश्य की राह में रुकावट डालती थी।

आजादी के समय धर्म व संप्रदाय के आधार पर इस राष्ट्र का विभाजन पाकिस्तान के रूप में हमारे सामने आ चुका था। इसके बावजूद भी सं प्रतिवाद के फार्मूले पर विर्खाण्डंत करने की जयन्यतम भूलकर डाली । सरदार वल्लभ भाई पटेल की दूरदर्शिता ने यह भाप लिया था कि इस प्रकार के क्षेत्रीय नाम करने वाले भारतवर्ष भविष्य में इसके परिणाम भोगेगे । लेकिन आजादी के जश्न में डूबे राजनीतिज्ञो को उस समय कहाँ होश था ! उन्होंने सरदार पटेल की सलाह हास्य पर डाल दिया। धर्म व जाति की समस्या के कारण हम पहले ही से टुकड़ों में बैठे हुए थे सीमा के आधार पर तो सिर्फ दो मुल्क ही बने थे। लेकिन धर्म जाति भाषा व प्रांतीयता के आधार पर हमारे दर्जनों टुकड़े कर दिए गए। अयोध्या में राम मंदिर और बाबरी मस्जिद की आजादी से पूर्व के समाचार को हम आदि के छह दशक बाद भी नहीं सुलझा पाए हैं।

भ्रष्टाचार महंगाई और बेरोजगारी हमारी बाद की समस्या है जो लालच अदूरदर्शिता और अविवेकपूर्ण प्रशासन के कारण पोषित हुई है। भ्रष्टाचार का प्रमुख कारण लालच है जबकि महंगाई एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है। विवेकपूर्ण रीति से इस पर भी विजय पाना संभव नहीं है । लेकिन बेरोजगारी किस देश की प्रथम समस्या है। रोजगार के साधनों का विकेंद्रीकरण करने के बजाय उनका केंद्रीकरण कर दिया गया। राजनीति के धुरन्दर खिलाडियों ने कुछ लोगों को लाभ पहुंचाने के लिए इस प्रकार की अधिकार नीतियां बनाई की वहीं पर लोग पुंजीपति बन गए और शेष लोग मजदूर एवं श्रमिक ।

आज भारत सचमुच अर्थतंत्र पर गिने चुने उद्योगपतियों के कब्जे में है। इसके बावजूद भी देश के कर्णधार ओं की कुंभकरण नींद नहीं टूट रही। ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के इतिहास से भी राजनीतिक यह कोई शब्द नहीं ले रहे हैं। अब विडम्बना यह है कि कुछ पूँजीपति घराने के व्यक्ति अपने व्यापार का प्रतिशत बढ़ाने के लिए फल एवं सब्जी जैसी चीजों को भी स्वयं बेचाने की कुटिल नीति अपना रहे हैं। जो छोटे दुकानदार किसी तरह अपना पेट पाल रहे थे अब उन्हें बेरोजगार करने का षडयंत्र रचा जा रहा है। बढ़ती जनसंख्या भी एक समस्या है और इस समस्या के बेकारी की समस्या में और भी इजाफा किया है।

भारतवर्ष का अगली समस्या है बाहरी शक्तियों से उत्पन्न समस्याएं।

भारतवर्ष से शत्रुता रचाने वाले देशों की आकस्मिकता नीतियों के कारण भी हमारे देश को धक्का लगा । इसलिए पूँजी एक बड़ा हिस्सा सुरक्षा जरूरतों पर खर्च कराना पड़ता है। हमें अपनी राष्ट्रीय आय का एक बड़ा भाग पेट्रोलियम पदार्थों पर भी खर्चा करना पड़ता है। हमें सोचना चाहिए कि राष्ट्र में टाटा एसी नीति को विकसित किया जाए जिससे पेट्रोलियम पदार्थों पर जो हमारी निर्भरता है वह कम हो सके। हमें मोटर याम कानून मैं आवश्यक सुधार करने के लिए नई नीति बनाने की आवश्यकता है। विश्व बैंक तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थानों से हमें कर्ज प्राप्त होता है। कर्ज़ प्राप्त करने के लिए हमें उनकी ऐसी शक्ति को मानना पड़ता है जो वास्तव में हमारे लिए अच्छी नहीं है।

आतंकवाद इस देश की सबसे बड़ी समस्या बन गया है जिसे पाकिस्तान द्वारा पोषित किया गया है। युद्धों में शिखश्त खाने के पश्चात पाकिस्तान अपनी कुटिल चालों से आतंकवादी घटनाओं को तूल देने में लगा हुआ है लेकिन उसके बावजूद भी भारत सरकार की ढुलमुल नीति के कारण हम कोई कठोर फैसला नहीं ले पाते। पाकिस्तान मित्रों का वह संधि के नाम पर जो भी सुविधाएं प्राप्त करता है इसका उपयोग व आतंक फैलाने के लिए करता है। समझौता एक्सप्रेस के नाम पर भारत पाकिस्तान के बीच रेल सुविधा की गई। लेकिन उनमें भी पाकिस्तान ने आतंकवादियों को भारत में भेजा। हजारों व्यक्ति पाकिस्तान गये अवश्य लेकिन उनकी वापसी नहीं हुई। वे लोग आतंक फैलाने के इरादे से इस देश मैं मौजूद है। फिर भी हम पाकिस्तान से समझौता करते हैं और हर बार धोखा खाते हैं

उपरोक्त वर्णित समस्याएं किसी ना किसी रूप सभी राष्ट्र में विद्यमान है। मानवता जब मानवीय मूल्यों से गिर जाता है तो यही गिरावट अनेक समस्याओं को जन्म दे देती है। इस में अंतर सिर्फ इतना ही होता है कि समस्याओं का सामना ईमानदारी व दूरदर्शिता से किया जाने की आवश्यकता होती है ना कि इसके आगे घुटने टेकने से। यदि हम राष्ट्रीय चरित्र व सब व्यवहार का आत्मा बल विकसित कर सके तो हर समस्या से निपट सकते हैं। रिश्वत नहीं देंगे और काला बाज़ारी का विरोध करेंगे तो यह समस्याएं स्वतः समाप्त हो जाएगी। लेकिन हम अपनी सुविधा के नाम पर नाजायज रिश्वत देखकर भ्रष्टाचार को बड़वा देते हैं। इसी प्रकार वर्ग विभेद की हमारी फूट का फायदा दुश्मन राष्ट्र उठाता है और शांति व प्रेम की धारा पर आतंकवाद व घृणा के बीज बोए जाते है। अब वक्त आ गया है की विरुद्ध स्वार्थ को त्याग कर हम विश्व पदों की भावना का विकास करें और अपना स्तर पर समस्याओं से लड़ने का प्रयास करें। अकेले राजनीतिज्ञों से इन समस्याओं का निराकरण किया जाना संभव नहीं होगा। इसमें देश के हर नागरिक को सहयोग करना पड़ेगा तभी हमारा देश समस्याओं से मुक्त हो पाएगा।

AFEELA MOHAMMED
2ND DC ECONOMICS

मेरा देश , मेरा भारत

भारत है मेरा देश
संपन्न है मेरा देश
अलग अलग त्योहार है
अनेक यहाँ खुशहाल है।

फूलों का ओणम होता है
दीपों का दीवाली होती है
रंगों का होली होती है
तारों की किसमस होती है।

भारत है मेरा देश
धन्य है मेर देश
कई धर्म है देश
विविध विविध संपन्न है।

अहिंसा के बापू है
सत्य के हरिश्चंद्र है
बच्चों के चाचा जी है
शास्त्र के मिसाइल मैन है ।

भारत है मेरा देश
देखों कितना महान देश |

SREERA RAMESH
1ST DC MATHEMATICS

" होला " मेरा गाँव

होला प्यार, खुशी और एकता से भरपूर एक गांव था शहरीकरण के चंगुल में फंसकर होला में से सब कुछ मिट गया वहां के सारे लोग खुदगर्ज बन चुके हैं। प्यार, विश्वास, हंसी, दोस्ती सब होला के दिल से नष्ट हो चुका था। सारे लोग स्वार्थता के मार्ग पर चल रहे थे। होला गाँव की एक विशेषता है वहां जाड़े के मौसम में सर्दी असहनीय हो जाती है। जब जब सर्दी बढ़ जाती तब तक मृत्यु दर बढ़ता ही रहता। सारे दृश्य माध्यमों में होला का यह मौसम और बढ़ता मृत्यु दर एक महत्वपूर्ण समाचार बन जाता था। हर बार की तरह इस बार भी ज्यादातर बस्तियों के लोगों का हाल बहुत गंभीर था इसी वक्त बस्ती की एक नन्ही बच्ची का देहांत सारे शहर को दुख के कगार पर लाकर खडा कर दिया।

होला अमीरों का गाँव था। हर राज्य में होला की समस्या बहुत चर्चित विषय बन चुका था। होला मे एक छोटे लड़के ने अपने दोस्तों के साथ मिलकर बच्चों का एक दल बनाया। बच्चों ने एक साथ मिलकर 2 दिनों तक चर्चा की उसके बाद बच्चों ने अपने परिवार को भी अपनी बात बताई। बच्चों के माता पिता में सहमति होने के बावजूद भी उस उद्यम का बखूबी से साथ दिया। दसवीं कक्षा में पढ़ने वाली आनी के दिमाग में यह उपाय आया था। आनी के नेतृत्व में बस्ती के सारे लोगो को जाड़े के मौसम में लड़ने के लिए कपड़े और रजाई बांट दी गई। उस उद्यम की वजह से बहुत सारे लोगों के जीवन तबाह होने से बच गए। और अब होला गाँव पहले की तरह प्यार, खुशी, दोस्ती, विश्वास आदि से खिल उठा।

SREYA KUMAR K
2ND DC ZOOLOGY

संरक्षण

शांति के दिनों में तुम आई
मेरा सुंदर सपनों को टूटने के लिए
इस रेगिस्तान में हरीतिमा की तलाश में
आई हूँ मैं
तुम मेरी और मेरी परिवार की
सब आशाओं को टूटने के लिए आई है ?
लेकिन यह सब सोच कर दुखी होने के लिए
मेरी पास समय ना हो!
जीवित है न,
आगे जीना ही चाहिए,
मेरी परिजन के लिए,
आशा को साथ लेकर ।

LAKSHMIPRIYA S MENON
1ST DC GEOLOGY

समाज के आईना

यह शीर्षक पढ़ने के बाद आप विचार करेगे कि क्या है ये समाज का आईना ? यहां में ' कला ' के बारे मे कहना चाहता हूँ । उदाहरण के लिए फिल्म । फिल्मों मे हमेशा समाज की स्थिति का चित्रण मिलता है । जैसे की नाटक , किताबों की तरह फिल्मों भी मनुष्य को और गहराई से सोचने पर मजबूर देता है । फिल्म में सौ साल पहले या उसे भी हज़ारो साल की हो इसमें हमें अपनी पहले संस्कृति की , झाँकी जरूर रहा मिलेगी है | शीर्षक का अर्थ अब आपको स्पष्ट हो गया होगा ।

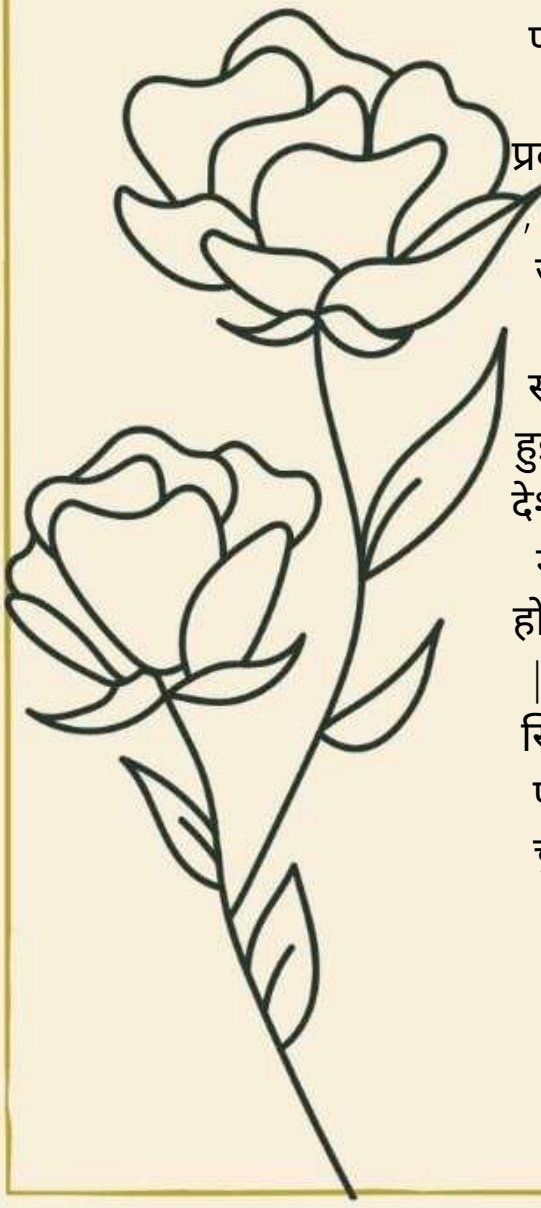

समाज मैं अच्छी पिल्मे भी है और बुरी फिल्म भी है । एक अच्छी और बुरी फिल्म का भेद हम आसानी से समझलेते है पर ये ' समझना ' अलग तरीका से होता है । पर एक अच्छी फिल्म ये है कि एक इन्सान के दिल ज्ञान रूपी ज्योति प्रकाशमान करे वह अच्छा सोचता है । वह प्रकाश एक संन्देश , वो संन्देश देता है सन्देश हमारे ज़िदगी , समाज , परिवार में जोडना पर अवसर डालती है । उदाहरण के लिए 2019 में रिलीज़ हुई ' Article 15'एक भारतीय फिल्म जो हमारा समाज का जाति , वर्ण के बारे मे बताता है । हमारे भारत में हुई घटनाओं के आधार पर ही ये फिल्म चित्रण किया । भारत देश आज भी जात- पात्र के मकड जाल में फंसा है । ये फिल्म में जातिमत भेदभाव के बारे में बताते है । ये फिल्म रिलीज होने के पहले कुछ लोग ये फिल्म के डाइरेक्टर को खिलाफ थे | या नी जब एक व्यक्तित्व सच्चाई दिखाना चाहता है उसके खिलाफ सब आते है । यही हाल " उरी " फिल्म की हुई । जो पाकिस्तान की सर्जिकल स्ट्राइक पर आधारित थी उसे गिने चुने राजयों ने अपने यहाँ चलाने को अनुमति नहीं थे । कुछ लोग फिल्म नामक कला रुप को पैसे बनाने के एक स्रोत जैसा मानता है । असल मे ये एक कला है ।

इसलिए हमे उसे कला जैसा मानना चाहिए | आज राजनीति की ताकत भी फिल्मों पर पड़ती है । जब एक फिल्म राजनीति पार्टी की बुराई दिखाते है वह यह सब सेंसर बोर्ड की मदद से सब हटवा देते है । कुछ महीने पहले सरकार की एक नई नियम आयी थी , आगे से ' ओ . टि . टि प्लेटफार्म पर रिलीज होने वाला फिल्म भी सेंसर बोर्ड की नियंत्रण में होगी । ये नई कानून के वजह से सबी लोग सामाजिक मीडिया पर इसकी खिलाफ का तरह का आक्षेप मज़ाक वीडियो , ट्रोलस , मीम ये सब था । कोविड महामारी के वजह से फिल्म सब इस ओ . टि . टि प्लेटफार्मों के वजह से ' फिल्म व्यवसाय ' अभी भी खड़ा होता है और फिर भी इस तरह प्लेटफार्मों पर भी सरकार नियत्रण करना चाहती है ।

फिल्म एक कला है जो हर शैली में होती है और हर एक व्यक्ति उसे देखकर अलग तरीके से समझता है । सब लोग फिल्म को एक मनोरंजन की तरह नही बल्की एक ' कला ' जैसा देखना और सभी लोग फिल्म व्यवसाय के बारें और जानना चाहिए ।

TANISH THOMSON
2ND DC FUNCTIONAL ENGLISH

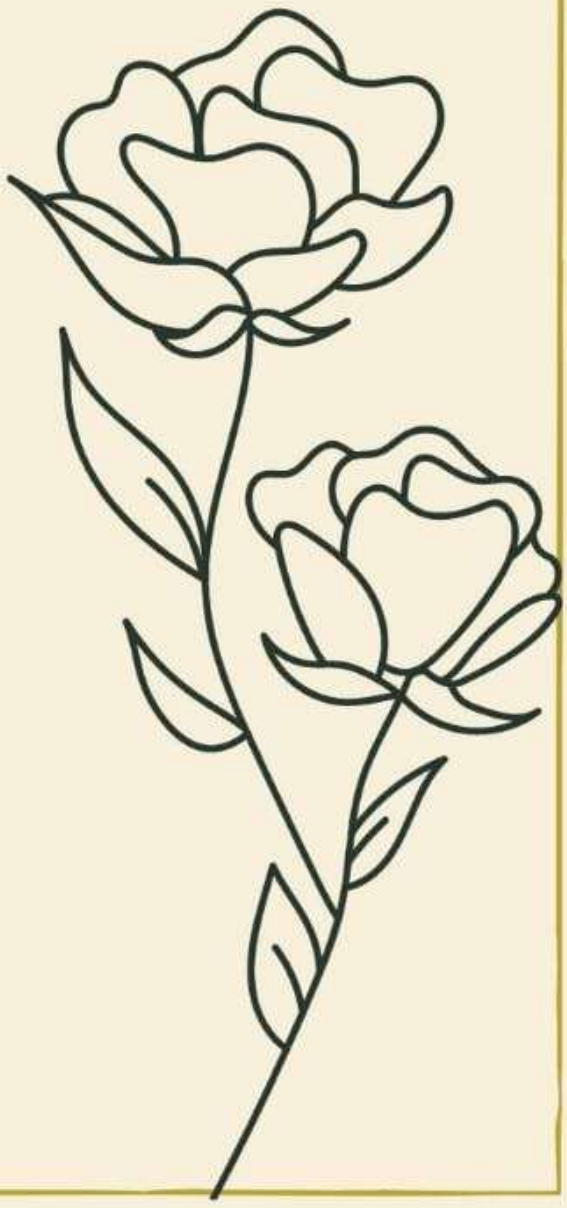

मेरी माँ

सुबह हो या शाम
वह हमेशा करती थी काम
हंसती थी, रुलाती थी कभी डँटती भी थी
पर करती थी मुझसे बहुत प्यार
वह थी मेरी भगवान जैसी
और साथ ही हर पल , हर लम्हा मेरे
चाहे जैसे भी हो हालत
वह 'माँ' थी मेरी परी जैसी
घुटने पर चोट लगती तो मरहम लगाती
दिल पर चोट लगती तो कसकर गले लगाती
कहती "चाहे आसमान गिरे या धरती रहूंगी तो हमेशा तेरी साथ"
अब मैं सोचती हूँ जब मैं माँ बनूँगी
क्या बन पाऊँगी माँ जितना प्यारी

HRIDHYA SURESH
1ST DC ECONOMICS

मुखौटे के पीछे

हँसते हैं , लेकिन पता नहीं कौन है
गाते हैं , लेकिन पता नहीं कौन है
हम मुँह नहीं , केवल आंखें देखते हैं
जो सुनते हैं , मुँह से नहीं
बल्कि आंखों से ...
आंख के आंदोलनों से सुनते हैं
कुछ बात कर रहे हैं
नहीं पता कि यह दिल से ,
या सिर्फ मुँह से

क्या हम अपने व्यक्तित्व के मुखौटे के पीछे ???

CATHERINE C JOSEPH
2ND DC GEOLOGY

NAZNA NAZAR
2ND DC GEOLOGY

नानाजी की यादों में

दोस्तों ! मैं भी आप लोगों में से एक हूं । आज मैं आपको मेरे सबसे अच्छे रोल मॉडल के बारे में बताना चाहती हूं । वह मेरे नानाजी । मुझे इतना जरूर पता है कि मेरी बात आपके दिल को छू कर निकल जाएगी ।

मैं अपने गुरुजनों का बहुत सम्मान करती हूं । क्योंकि वे हमें विद्या ही नहीं प्रदान करते बल्कि हमें अच्छे और बुरे का भी ज्ञान देते हैं । मेरे नानाजी स्कूल के प्रधानाध्यापक थे । उन्होंने अपने जीवन के अनुभव से मुझे पढ़ाया है कि एक अध्यापक को अपने बच्चों से किस तरह पेश आना चाहिए । वे बच्चों से बहुत प्यार करते थे । अगर कोई बच्चा गलती करता है तो वह उसे डांटते थे और अच्छी तरह प्यार से समझाते थे । जब उन्हें समय मिलता तो वह बच्चों से दोस्ती करके उनके दुखों को जानकर उसका हल निकालते ।

वे हम लोगों से बहुत प्यार करते थे । सुबह हो या शाम रोज मेरी मां के हाथों से बनाई हुई चाय पी कर अपने काम पर चले जाते थे । नाना जी का घर हमारे घर से दूर था पूर्णविराम जब वह सुबह आते तो हम जागते ही नहीं थे । जब शाम को आते तो हमारे साथ ढेरों मस्ती करते थे ।

बहुत प्यार वे इतने अच्छे थे कि मेरे पास उनको कहने के लिए शब्द ही नहीं थे । वह मेरे छोटे भाई से करते थे । वे उसे प्यार से कई नामों से बुलाते थे । उनकी पुकार सुनकर वह दौड़ कर उनसे लिपट जाता था । वह भी हमसे बच्चों की तरह बनकर हम से खूब मस्ती करते थे । हम हर शुक्रवार को नाना जी के यहां जाते थे । नाना और नानी अपने घर में अकेले रहते थे । हमारे घर पहुंचने से पहले नाना जी हमारे लिए कुछ ना कुछ खाने की चीज जरूर लाते । शाम की चाय के समय हम सब एक साथ बैठकर खाते थे । नाना जी कभी - कभी मेरे छोटे भाई की खाने वाली चीज उसके प्लेट से उठा कर खा लेते थे । और हमारे साथ खूब हंसी मजाक करते थे । अगर हम लोग किसी कारण से उनके घर नहीं जा पाते थे तो उन्हें अच्छा नहीं लगता था वह हमें खूब बैठते थे उन विराम सच बात तो यह है कि उनकी डेट में भी प्यार छुपा है । वह हमारी हर कामों में मदद करते थे ।

आज दुख इस बात का है कि हमारा मददगार हमसे ढेरों मस्ती करने वाला हमारे नाना जी नहीं रहे शिक्षक दिवस पर ही उनकी मृत्यु हो गई थी आज 4 साल पूरे होने को है । मेरे नानाजी खुशियों के सौदागर थे । उन्होंने अपने जीवन में खुशियां देना ही सीखा है । आज उनका घर शांत और वीरान है । जब कभी सुबह सुबह दरवाजा खटखटा आता हूं तो एक पर लगता है कि जरूर नाना जी होंगे । उनकी हमें याद बहुत आती है । कहते हैं जो इंसान मृत्यु के बाद आसमान का तारा बनकर मुस्कुराते हैं । जब भी कोई भोर का तारा देखती हूं तो मुझे मेरे नाना जी याद आ जाते हैं ।

यह छोटा सा लेख मैं अपने नाना जी और समस्त अध्यापकों को समर्पित करती हूं ।

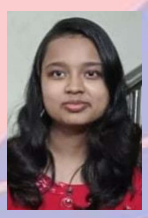

KARTHIKA . M
1ST DC ENGLISH LITERATURE

पंचभूत

पंचभूत या पंच महा - भूत , पाँच महान तत्व, पाँच भौतिक तत्व, पाँच मुल तत्वों का एक समूह है, जो हिंदू धर्म के अनुसार, सभी सत्जन का आधार है । ये तत्व हैं; पृथ्वी , जल, अग्नि , वायु औरआकाश । इन तत्वों की अलग – अलग विशेषताएँ हैं और ये मानव अनुभव के विभिन्न पहलुओं केलिए भी जिम्मेदार हैं। आयुर्वेद और भारतीय दर्शन में, मानव शरीर को इन पाँच तत्वों से बना माना जाता है । हालाकिं श्रावक ने आकाश को मूल तत्व हैं । भारतीय प्रभावित बोद्ध धर्म केवल चार मूल तत्वों को स्वीकार करता है और आकाश ¡ छोड़ दिया जाता है। भारतीय । ब्रहमाण्ड संबंधी प्रणाली के ये पाँच तत्व समान हैं लेकिन पूर्वी एशिया में उपयोग किए जानेवाले पाँच तत्व सिद्धांत के समान नही हैं ।

यह भी शरीर के अंदर वास्तविक खोखले स्थान, जैसे कि ट्यूब और चैनल, धमनियों आदि के अंदर। पृथ्वी पदार्थ की ठोस अवस्था का प्रतिनिधित्व करती है। शरीर के अंग जो विशेष रूप से मोटे, स्थिर, बडे पैमाने पर भारी, मोटे और सखत होते हैं; नाखून, हडिड्यां, दांत, मांस, त्वचा, चेहरा, बाल दाढी और मूँछों, आदि साथ ही गंध और प्राण भावना प्रकृती में पृथ्वी हैं। मन , पृथ्वी की तरह सहन करन की शक्ति और सहन करने का संकल्प लेती है।

LIYA POLY
2ND DC PHYSICS

अपने आप को समझ नहीं पा रही हूँ।
अपने आप को सिखा नही पा रही हूँ ।
बस .....
किस्मत का खेल है ।
किस्मत का ही खेल है ।
मेरी तकदीर में लिखा है ।
जो सब को दिखा है ।

K. VARSHA GOPAKUMAR
1ST DC ECONOMICS

बचपन

बचपन बचपन एक सुनहरा सपना
एक पल जो कभी था अपना
खट्टी मीठी पुरानी यादें
काश कोई उन पलों को वापस ला दे ।

मिट्टी की गुड़िया
कागज़ की कश्ती
चेहरे की मुस्कान
वह पल अभी भी दिल में बसती ।

दिल में दौड़ती मस्ती की लहर
एक पल ना थी शरारत के बगैर
चाहते थे चुराना आसमान के रंग
ख्वाहिश थी झूमना तारों के संग ।

पर अब जो चुरा लिया है वक़्त ने वह सपना
अब सब जी रहे है जिदंगी अपना अपना
किसी को ना परवाह उन सुनहरे पलों की
कुछ तो भूल ही गए हैं वह लहर मुस्कान की ।

जब भी कभी देखती हूँ चाँद तारों को रात भर
तब याद आते हैं वह सुनहरे पल
खट्टी मीठी पुरानी यादें
काश कोई उन पलों को वापस ला दे ।

PARVATHY N.N
1ST DC ECONOMICS

तारों भरी रात

सितारों को देखो,
इतनी दूर बहुत दूर ।
आकाश में ऊँचे
वे बहुत चमकते
कभी भटकते नहीं ।

छोटे बिंदु की तरह,
या रंग के धब्बे
बस ऊपर तैर रहे है ।
मैं सोचता हुँ –
वे वहाँ क्या करते है,
और वे कैसे बना करते है ।

क्या वे सिर्फ छेद है, नभ में उठी,
आकाशगंगा मे पहले ?
या शायद
वे इलेकिट्रक लाइट हैं जो एक प्रदर्शन में टंगा हुआ है !

इतना ऊपर वहाँ,
जाना चाहता हूँ मैं,
देखना चाहता हूँ मैं ।
बस छूना चाहता हूँ मैं
यह वास्तव में अनुदान होगा ।

JEEVAN P KUMAR
2ND DC GEOLOGY

कॉलेज के दिन

डेविड डाइचेस के अनुसार , " कम संख्या मे कक्षाओ मे भाग लेना और छाव के आने और जाने की स्वतंत्रता का मतलब पुरी तरह से नई तरह की अकादमिक दुनिया जैसा था । एक कॉलेज एक छात्र के शैक्षणिक कैरिसर का सपना है | यह आनंद , स्वतंतता और दोस्ती का एक आकर्षक चित्रमाला है | कॉलेज जीवन की मीठी यादें और सुख बस अभ्दत हैं । पहले और अखिरी दिन , दोस्तों के स समुह , अप्रत्याशित छुट्टियां , छात्रावासों में पाठचचर्या और पाठयेतर गतिविधिलयों और रोमांच के कार्य कॉलेज जीवन को सबसे दादगार और अविस्मरणीय हिस्सा बनाते हैं कॉलेज जीवन किसी के जीवन का वह चरण होता है जब कोई जीवम का सबसे महत्वपुर्ण पाठ सीखता है । "

अधिक से अधिक स्वतंत्रता और सीखने के माहौल के साथ कॉलेज जीवन का छात्र के जीवन पर लबे समय तक प्रभाव रहता है । शिक्षको की गुणवता और उनकी प्रभावी शिक्षण शैलियो वास्तव में कॉलेज जीवन को असाधारण बनाती हैं । नए और अच्छी तरह से शिक्षित शिक्षको और नए सहपाठियो की बातचीत एक अलग वातावरण बनाती है ताकि विचारों को वदल दिया जाए , नई आशाएं उत्पन्न होती हैं और वास्तविकताओं का सपना देखा जाता है । कॉलेज के जीतन में , विभिन्न स्थानो और विभिन्न परिवारों के अलग अलग लोगों के साथ बातचीत होती है ताकि एक छात्र विभिन्न परंपराओ और शैलियो के बारे में जान सके । व्यक्तित्व पर इसका अच्छा प्रभाव पड़ता है । इससे एकता , भाईचारे और दोस्ती की भावना भी विकसित होती है ।

किसी को भी कभी यह एहसास नही हुआ कि इस तरह के सूक्ष्म आकार के जीव पुरी दुनिया , मे ऐसा कहर बरपा सकते हैं और हजारों मौतों का कारण बन सकते हैं | शिक्षा उद्योग को नहीं छोड़ा गया है और छात्र जीतन पर कोविड- 19 का प्रभाव दिखाई दे रहा है । कोविड- 19 लॉकडाउन और कॉलेज और स्कूल शिक्षा के साथ जारी रखने की सख्त जरूरत है , निक्षित रूप से जूम एप्प (Zoom App) या गूगल क्लासरूम (Google Classroom) जैसी शिक्षा प्रदान करने के लिए ऑनलाइन विकल्पों का लाभ हुआ है क्योकि कोविड -19 लॉकडउन के दौरान ऐसी चीजों की मांग मे उछाल और सीमाएं बढ़ी हैं । निक्षित रुप से , सैद्धांतिक सामग्री छात्रों को समय पर प्रदान की जाएगी , लेकिन छात्रों का समग्र विकास यहाँ गायब होगा छात्रों में अनुशासन और अलंकार की आदत डालना संभव नही होगा । ये ऐसे समयहै जो कभी वापस नही आएंगे और जैसा कि कोई अन्य विकल्प उपलब्ध नही है , छात्र स्कूल या कॉलेज के वास्तविक कार्य वातावरण से रहित - हैं । कोविड -19 लाँकडाउन की वजह से कई सामाजिक और संस्कृतिक गति विधियाँ छूट जाएँगी ।

इन छात्रों के जीवन और भविष्य को उदासीनता में छोड़ दिय जाना है औ इस बात क कोई संकेत नही हैं कि कब चीजें सामान्य हो जाएगी । इन बच्चों के पस कोविड -19 के खतरे को कम करने के लिए और अपनी कक्षाओ में भाग लेने या घर पर रहने के अलावा और कोई विकल्प नही बचा है । कुछ महिने पहले समाचार था कि एक परिवार को अपनी भैंस , अपने प्राथमिक कमाई स्रोत को बेचना पड़ा , ताकि वे एक स्मार्टफोन खरीद सकें और उनके बच्चे ऑनलपन कक्षाओं में भाग ले सकें | यह प्रत्येक छात्र के लिए और शिक्षण संस्थानों के लिए इस समय अध्ययन शुरु करने ओर जारी रखने के लिए एक बड़ी चुनौती है जब किसी को छुने का मतलब है कि जीवन के लिए खतरा पैदा करने वाली बीमारी को पकड़ना ।

YAHIYA BABU
2ND DC ECONOMICS

पांच ट्रैनस प्लेटिनम ब्लॉकिंग टेक्नोलॉजी हैं

ब्लॉकचेन तकनीक कैसे टेक इंडस्ट्री का विकास कर रही है

ब्लॉकचैन पूरी तरह से स्वचालित और सुरक्षित तरीके से सूचना को ए से बी में स्थानांतरित करने का एक सरल लेकिन सरल तरीका है । एक पक्ष लेनदेन के लिए एक ब्लॉक बनाकर प्रक्रिया शुरू करता है । इंटरनेट पर वितरित लाखों कंप्यूटर इस ब्लॉक को सत्यापित करते हैं । सत्यापित ब्लॉक को एक श्रृंखला में जोड़ा जाता है जिसे ऑनलाइन संग्रहीत किया जाता है , न केवल एक अनूठा रिकॉर्ड , बल्कि एक अद्वितीय इतिहास के साथ एक अनूठा रिकॉर्ड । एक एकल रिकॉर्ड बनाने का अर्थ है लाखों श्रृंखलाओं में पूरी श्रृंखला को गलत ठहराना और यह लगभग असंभव है ।
जैसे ही बिटकॉइन और अन्य क्रिप्टोकरेंसी बाजार में तेजी ला रहे हैं , फोकस ब्लॉकचेन की ओर मुड़ गया है । ब्लॉकचेन टेक्नोलॉजी एक साझा डेटाबेस से भरी हुई प्रविष्टियों के रूप में मौजूद है जिसकी पुष्टि सहकर्मी से सहकर्मी नेटवर्क द्वारा की जानी चाहिए और एन्क्रिप्ट की जानी चाहिए । ब्लॉकचैन को Google दस्तावेज़ में एक दृढ़ता से एन्क्रिप्टेड , सत्यापित और साझा किया जा सकता है , जिसमें शीट में प्रत्येक प्रविष्टि अपने सभी पूर्ववर्तियों के लिए एक तार्किक संबंध पर निर्भर करती है , और हर कोई नेटवर्क में सहमत है । ब्लॉकचैन में बिटकॉइन को मजबूत करने के अलावा कई और संभावित उपयोग के मामले हैं । नीचे व्यापार और वित्त से परे 2020 के अपने कुछ उभरते हुए अनुप्रयोग हैं ।

ब्लॉकचैन बिग टेक कंपनियों द्वारा एक सेवा के रूप में

ब्लॉकचैन एक सेवा (Baas) के रूप में 2020 में होनहार ब्लॉकचैन ट्रेंड्स में से एक है । यह एक नया ब्लॉकचेन ट्रेंड है जो कई स्टार्टअप और व्यवसायों के साथ शामिल है । यह एक क्लाउड - आधारित सेवा है जो उपयोगकर्ताओं को ब्लॉकचेन तकनीक के साथ अपने स्वयं के डिजिटल उत्पादों का निर्माण करने में सक्षम बनाती है । हालांकि , ब्लॉकचेन बनाने , बनाए रखने और संचालित करने के लिए यह महंगा और तकनीकी रूप से जटिल है । यही कारण है कि कई छोटी और मध्यम स्तर की कंपनियां इसके लाभों के बावजूद पूरी तरह से ब्लॉकचेन में निवेश करने में संकोच करती हैं । हालाँकि , Microsoft और Amazon जैसी कंपनियां एक ब्लॉकचेन विकसित कर रही हैं , जो ब्लॉकचेन एप्लिकेशन को भविष्य बनाने के लिए Bas सेवा प्रदान करती है ।

सामाजिक नेटवर्किंग समस्याओं के लिए ब्लॉकचेन समाधान

फेसबुक , ट्विटर जैसे सोशल नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म आसमान छू रहे । इसलिए , डेटा ब्रीचिंग संभावनाएं हमेशा उच्च होती हैं । लेकिन ब्लॉकचेन तकनीक उपयोगकर्ताओं को सोशल मीडिया का उपयोग करते समय बढ़ी हुई गोपनीयता का अनुभव करने में सक्षम बनाती है । सोशल नेटवर्किंग के दौरान उपयोगकर्ता अपनी सामग्री को नियंत्रित कर सकते हैं , जैसे ऑडियो , वीडियो , चित्र आदि , जैसा कि नेटवर्क के मालिक उपयोगकर्ताओं के डेटा का प्रबंधन और नियंत्रण करते हैं । वे निस्संदेह पूरी दुनिया के साथ जुड़ सकते हैं , लेकिन एक ही समय में , सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अपने केंद्रीकृत प्रकृति के कारण हमलों की चपेट में हैं । इसके अलावा , यह नेटवर्किंग भी एक अड़चन की समस्या से ग्रस्त है । गोपनीयता सामाजिक नेटवर्किंग से जुड़ी प्राथमिक चिंता है । यह व्हाट्सएप पर वार्तालाप हो या दोस्तों के साथ साझा की जाने वाली छवियां , कुछ भी निजी और गोपनीय नहीं है , भले ही व्हाट्सएप का दावा है ; " संदेश और कॉल एंड - टू - एंड एन्क्रिप्टेड हैं । " ब्लॉकचेन वितरित प्रकृति डेटा को रोकने के लिए एक एकल इकाई या तीसरे पक्ष द्वारा नियंत्रण को समाप्त करती है । यह सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के हाथों में उनकी सामग्री का पूर्ण नियंत्रण भी प्रदान करता है । Pow और POS जैसे विकेंद्रीकृत सर्वसम्मति तंत्र में गोपनीयता प्रोटोकॉल है ; इसलिए , वे एक उच्च उपयोगकर्ता गोपनीयता स्तर प्रदान करते हैं ।

सरकारी एजेंसियों में ब्लॉकचेन निगमन

वितरित खाता बही अवधारणा सरकारी अधिकारियों के लिए भी आकर्षक है जिन्हें पर्याप्त मात्रा में डेटा का प्रबंधन करना है । आज , हर एजेंसी का अपना अलग डेटाबेस है ; इसलिए उन्हें एक दूसरे से निवासियों के बारे में लगातार जानकारी चाहिए । हालांकि , प्रभावी डेटा प्रबंधन के लिए ब्लॉकचेन प्रौद्योगिकियों के कार्यान्वयन से ऐसी एजेंसियों के कामकाज में वृद्धि होगी । 2022 तक , एक बिलियन से अधिक लोगों के पास एक ब्लॉकचेन द्वारा छांटे गए कुछ डेटा होंगे , लेकिन वे इससे अनजान रह सकते हैं , गार्टनर ने अनुमान लगाया । राष्ट्रीय क्रिप्टोकरेंसी दिखाई देने की संभावना है । सरकारों को अनिवार्य रूप से ब्लॉकचेन - व्युत्पन्न मुद्राओं के लाभों की पहचान करनी होगी । डिजिटल पैसा भविष्य है और कुछ भी इसे रोक नहीं सकता है ।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस वाला ब्लॉकचेन

ब्लॉकचेन तकनीक के साथ कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) का सहयोग भविष्य में मनमौजी नवाचार ला सकता है । यह निगमन ब्लॉकचैन में बहुत सारे अनुप्रयोगों के साथ सुधार का स्तर प्रदर्शित करेगा । स्मार्ट कम्प्यूटिंग पावर , डायवर्स डेटा सेट बनाना , डेटा प्रोटेक्शन , डेटा मोनेटाइजेशन , ट्रस्टिंग एआई डिसीजन मेकिंग ब्लॉकचेन में एआई के कुछ उदाहरण हैं । इंटरनेशनल डेटा कॉरपोरेशन (आईडीसी) का अनुमान है कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर वैश्विक खर्च 2020 तक 57.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो जाएगा और ब्लॉकचेन एकीकरण के साथ लगभग 51 % व्यवसाय एआई को संक्रमण बना देगा ।

ब्लॉकचेन एआई को और अधिक सुसंगत और समझने योग्य भी बना सकता है ताकि विशेषज्ञ मशीन सीखने में निर्णय ले सकें और निर्धारित कर सकें । ब्लॉकचैन और इसके लेज़र हर उस डेटा और चर को रिकॉर्ड कर सकते हैं जो मशीन लर्निंग के तहत लिए गए निर्णय से गुजरता है । इसके अलावा , एआई ब्लॉकचेन दक्षता को मनुष्यों या यहां तक कि हर रोज़ कंप्यूटिंग से बेहतर बना सकता है । वर्तमान में मानक कंप्यूटरों पर ब्लॉकचेन को जिस तरह से चलाया जाता है , वह साबित करता है कि बुनियादी कार्यों को करने के लिए बहुत अधिक प्रसंस्करण शक्ति की आवश्यकता होती है ।

ब्लॉकचेन IoT के साथ जुड़ता है

इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) तकनीकी बाजार जटिल सुरक्षा चुनौतियों के साथ सुरक्षा पर नए सिरे से ध्यान केंद्रित करेगा । ये जटिलताएँ प्रौद्योगिकी के विविध और वितरित प्रकृति से निकलती हैं । इंटरनेट से जुड़े उपकरणों की संख्या ने 26 बिलियन का निशान तोड़ दिया है । डिवाइस और IoT नेटवर्क हैकिंग आम हो रही है । केवल नेटवर्क ऑपरेटर घुसपैठियों को अपना व्यवसाय करने से रोक सकते हैं । मुख्य कारणों में से एक यह है कि IoT नेटवर्क की भेद्यता के कारण IoT का वर्तमान केंद्रीकृत वास्तुकला । दसियों अरबों उपकरणों से जुड़े और अधिक जोड़े जाने के साथ , IoT साइबर हमलों के लिए एक बड़ा लक्ष्य है जो सुरक्षा को बहुत महत्वपूर्ण बनाता है ।

ALPHIN PAUL ANTONY
1ST DC ECONOMICS

जिंदगी

ज़िदंगी हमारी पुस्तक के
हर एक पन्नो की तरह पलट रहे
अनसुनी और अनकही कहानी की तरह चलती रहे ।
फिर भी किसी को सुनने और सुनाने का वक्त ही न रहे ।

कभी अपनों के साथ चल रहे
कभी सबको पीछा छोडकर भाग रहे
आखिर कहाँ , क्या पाने केलिए क्या कर रहे
बस हम केवल दौड़ रहे

इस दौड मे हम हँसना भूलते ही जा रहे
किसी शोर में खोते ही जा रहे
घोर अंधेरे में अब हम जिंदगी बिता रहे
ऐसी जिंदगी का मतलब भी न रहे

जिंदगी झरनों के पानी की तरह वह बह रहा
जिसमें भी उम्मीद और हौसला जागता रहा
वह उदित हुए रवि को देखता रहा
याफिर अंधकार की तन्हाइयों में डूबता रह

जिंदगी का रवैया बड़ा अजीब है रहा
कभी खुशी से आसमान छू रहा
कभी गमों की मार से झटपटा रहा
इसी जिंदगी का राज़ तुम्हें बता रहा

स्वार्थ की अंधी दौड में तू न रहे
जीतना है तो दौडता ही रहे
जिंदगी की खट्टी - मीठी यादों को यादगार बनाते रहे
याद रखना अपनी मेहनत से हर कोई सफल हो रहे ।

अपने भविष्य को उज्जवल बनाते रहे
हम खुलकर सबका मदद करते रहे
जिससे उसके होठों पर मुस्कान आती रहे
हमको वह फरिश्ता समझकर दुआ देता रहे

जिंदगी का सफर ऐसे ही बढते रहे
इसलिए इसके पन्नों पर लाजवाब काम करते रहे
अपने दिल से सजाकर , इसे हर कोई देखते रहे
इसलिए इसे अनोखी किताब बनाते रहे ।

PAWNA PRADEEPKUMAR
2ND DC ECONOMICS

विज्ञान बनाम धर्मः एक तुलना

विज्ञान और धर्म , मानवता के 2 अविकसित हिस्से जो दुनिया भर में हर समुदायों पर भारी प्रभाव डालते हैं । यह लेख ऐसा नहीं है जो बेहतर हो , बल्कि इस बात पर जोर दिया जाता है कि मानवता के लिए कौन - सी चीजें बेहतर होती हैं ।

यह एक लोकप्रिय राय है और मेरे विचार में भी सटीक एक है- धर्म विश्वास और भय पर आधारित है , एक सर्वव्यापी के प्रति , सभी जानने वाले ईश्वर जो एक खगोलीय तानाशाह के विचार की ओर संकेत करते हैं । इसके विपरीत , तथ्यों पर आधारित हैं । यह केवल उत्तर खोजने के बारे में ही नहीं है , बल्कि सवाल पूछने के बारे में भी है । सत्य केवल सत्य की खोज के बजाय जो गलत और गलत है , उसकी भी खोज है । लेकिन विज्ञान और धर्म ने उत्तर खोजने की मनुष्य की जिज्ञासा से अपना आकार प्राप्त कर लिया । यह ब्रह्मांड कैसे बना ? इस जीवन का उद्देश्य क्या है ? हम यहां क्यों आए हैं ? वहाँ बहुत कुछ है जो हम नहीं जानते हैं और हम उत्तर खोज रहे हैं । यदि हम कभी पता नहीं लगा सकते हैं।यह ब्रह्माण्ड और इसमें मौजूद हर चीज जिसमें हमारा अपना शरीर भी शामिल है , को समझना बहुत जटिल है । यहीं से संघर्ष शुरू होता है । वास्तव में एक डिजाइनर की आवश्यकता नहीं होती है और विज्ञान हमारे अपने अस्तित्व के कारण का पता लगाने के लिए प्रयासरत है , जहां धर्म और धार्मिकता अभी भी आदिम विचारों पर चिपके हुए हैं और नई संभावनाओं पर दरवाजे खोल रहे हैं । विज्ञान और विज्ञान की कमी वैज्ञानिक स्वभाव व्यापक रूप से समस्याएं बढ़ा रहा है।हमें तर्क करना और तर्क करना सीखना चाहिए । ञधार्मिक दर्शन प्रकृति में रूढ़िवादी हैं , यह वास्तव में एक ही रूढ़िवाद है जो उन्हें उनके अस्तित्व में मदद करता है । लेकिन बहुसंख्यक अब अपने धार्मिक ग्रंथों या धर्मग्रंथों के समान नहीं रह रहे हैं । क्रिश्चियन बाइबिल के अनुसार वास्तव में नहीं रह रहे हैं , मुसलमान वास्तव में कहे अनुसार नहीं रह रहे हैं कुरान में और न ही हिंदुओं में वेदों के अनुसार । क्या लोगों की मानसिकता धर्म बदलने की नहीं है। इसकी मानसिकता का विकास , हमारी मानसिकता समय के अनुसार विकसित होती है । इस किताब या एक ऐसे व्यक्ति के अनुसार , जो हजारों साल पहले अस्तित्व में है , इस समाज में रहने की कोशिश करने के लिए पूरी तरह से बेकार है ।

मैं एक बेहतर समाज के रूप में धर्मनिरपेक्ष विचारों में दृढ़ता से विश्वास करता हूं । किसी को भी वैज्ञानिक और तर्कसंगत विचारों को विकसित करना चाहिए और तर्क की उनकी शक्ति पर विश्वास करना चाहिए । हमें किसी भी अंध विश्वास पर अपने जीवन को कभी नहीं रखना चाहिए , लेकिन इसे सवाल करना सीखना चाहिए ।

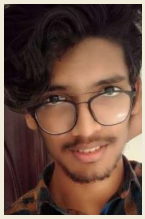

HARIKRISHNAN C.A
1ST DC ECONOMICS

KEERTHANA TM
2ND DC CHEMISTRY

गीत आलाप

HRIDHYA SURESH
1ST DC ECONOMICS

केरल की भिन्न चित्रकला

हमारे देश प्रकृति और भौतिक दोनों ही प्रकार से विश्व का अद्भुत एवम अनोखा शब्द हैं । भारत की संस्कृति , कला , सभ्यता , और , आचरण विशेष हैं और इस में विविधता है ।

भारतीय कला और संस्कृति कला जगत की एक प्रवीण कला एवं संस्कृति है । भारतीय कला सबको मोहित करनेवाला और आकर्षणीय है । हमारे देश की कला की विशेषता यहीं है की वे परंपरा को अपनाते हुए नवीनता का समर्थन भी किया । कला संस्कृति की वाहिका है । भारतीय कला में हमारे देश की संस्कृति के विविध आयामों में प्राप्त मानवीयता प्रकट है ।

भारतीय कला विविध प्रकार है- वास्तुकला चिह्नकला , शिल्पकला नाट्य कला , और साहित्यकला । इन कलाओं में चित्रकला में केरल की भिन्न चित्रकला को विशिष्ट स्थान हैं ।

चित्रकला विविध प्रकार हैं की चित्रकारियों का उल्लेख किया जाता हैं जो भवनों की दीवारों , छतों स्तंभों , पर्वत गुफाओं , कपडे , कागज़ आदि पर अंकित मिलती है । इसमें प्रमुख हैं भित्ति चित्रकला।भारत के कुछ और इलार्को में भित्ति चित्रकला प्रचार में हैं । इस कलाओं में चित्रकला में केरल की दीवार चित्रकला है जिसे मलयालम भाषा में भित्ति चित्र कला कहा जाता है।

केरल के चित्रकारों ने स्वयं अपनी ही एक चिंतात्मक भाषा तथा तकनीक का विकास कर लिया था , अलबत्ता उन्होंने अपनी शैली में नायक और विजयनगर शैली के कुछ तत्वों को आवश्यक सोच समझकर अपना लिया था | इन कलाकारों ने कथकली , कलमेजुथू (अनुष्ठान कला) जैसी समकालीन परम्पराओं से प्रभावित होकर एक ऐसी भाषा विकसित कर ली , जिसमें कम्पनशील और चमकदार रंगों का प्रयोग होता था और मानव आकृतियों को त्रियामी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता था । उनमें से अधिकांश चित्र पूजागुड़ की दीवारों और मंदिरों की मेहराबदार दीवारों पर और कुछ राजमहलों के भीतर देखा जा सकता हैं । विषय की दृष्टि से भी केरल के चित्र शेष परम्पराओं से अलग दिखाई देती हैं । इनमें चित्रित अधिकांश आख्यान हिन्दुओं की धार्मिक तथा पौराणिक पर उधारित है जो उस समय केरल में लोकप्रिय थे । कलाकारों ने अपने चित्रण के विषय केलिए रामायण और महाभारत के स्थानीय रूपान्तर और मौखिक परम्पराओं को आधार बनाया था ।

केरल के भित्ति चित्र 60 से भी अधिक स्थलों में पाए गए हैं , जिनमें तीन महल भी शामिल हैं - कोच्ची का डच महल , कायमकुलम का कुलपुरम महल और पाथमनाभपुरम महल । जिन स्थलों केरल के भिति चित्र परंपरा की परिपक्व अवस्था दृष्टिगोचर होती हैं , वे हैं - पुंडरीकपुरम का कृष्णमंदिर , पनयनारकावु , तिरुकोडिथनम , त्रिप्रायर का श्रीराम मंदिर और थिस्सूर का वडक्कुन्नाथन मंदिर ।

आज भी देश के विभिन्न भागों में ग्रामीण अंचल के घरों और हवेलियों के बाहर की दीवारों पर भित्ति चित्र बने हुए देखे जा सकते हैं । इन्हे प्रायः विधि - विधान अथवा त्योहारों पर महिलाओं द्वारा बनाये जाते है या दीवारों को साफ़ कर महज उनकी सजावट करता । भित्ति चित्र के कुछ परम्परागत उदहारण है - राजस्थान और गुजरात के कुछ भागों पर प्रचलित पिठौरों , उत्तर बिहार के मिथिला क्षेत्र में मिथिला भित्ति चित्र , महाराष्ट्र में वर्ली अथवा बंगाल अथवा ओडिशा हालांकि केरल की भित्ति चित्र इसमें कुछ विभिन्न प्रकार का हैं |

भारत ऐसा देश हैं जो कला को बढ़ावा देता हैं । भारत में चित्र कला का महनीय स्थान है । चित्रकला में केरल की भित्ति चित्रकला को ' मील का पत्थर ' माना जाता है ।

KRISHNAPRIYA E S
2ND DC PHYSICS

आज.....मैं

बिन सफर, बिन मंजिलों का
एक रास्ता होना चाहता हूँ , मैं |

कहीं दूर किसी जंगल में,
ठहरा हुआ दरिया होना चाहता हूँ , मैं

बिना रिश्तों और रिवाजों की
एक ज़िन्दगी बनाना चाहता हूँ , मैं

दूर आसमान से गिरते,
झरने में कहीं खोना चाहता हूँ , मैं

आज में बनना चाहता हूँ , मै

BABU JILANI MOMIN
1ST DC FUNCTIONAL ENGLISH

मलाला यूसफजई

वह सबसे कम उम्र की नोबेल विजेता है । उनका जन्म 12 , 1997 जुलाई को पाकिस्तान के मिंगोस में हुआ | उसके पिता का नाम जियाउद्दीन युसूफजई था । उसकी माँ का नाम तोर पेकाई यूसुफजई था । उसके दो छोटे भाई है । उनके परिवार में स्कूलों की एक श्रृंखला चलाई । उनके पिता एक शैक्षिक कार्यकर्ता ने उन्हें पश्तो , अंग्रेजी और उर्दू सिखाई । उसके पिता को इस बात की शुरुआत में होश आया कि उनमें कुछ खास बात थी और उन्होंने उन्हें खुद को खुलकर सोचने और व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया । उसने 2008 में शिक्षा के अधिकारों के बारे में बोलना शुरू किया जब वह सिर्फ 11 साल की थी | उसने पेशावर के एक स्थानीय प्रेस क्लब में श्रोताओं को संबोधित किया और शिक्षा के बुनियादी अधिकार को छीनने के लिए तालिबान की दुष्टता पर सवाल उठाया । अपने पिता के कहने पर उन्होंने छझ नाम ' गुल मकाई ' के तहत BBC उर्दू वेबसाइट के लिए एक गुमनाम ब्लॉग लिखना शुरू किया । स्वात में तालिबान के बढ़ते प्रभाव के बारे में ब्लॉगिंग करने वाली एक स्कूली लड़की के विचार की शुरुआत BBC उर्दू के आमेर अहमद खान ने की थी ।

तालिबान के बारे में ब्लॉग करना एक बहुत ही जोखिम भरा फैसला था लेकिन जियाउद्दीन यूसुफजई ने खुद जोर देकर कहा कि 11 साल की मलाला ऐसा करती है । उनकी पहली ब्लॉग प्रविष्टि 3 जनवरी 2009 को पोस्ट की गई थी । उन्होंने तालिबान की वजह से स्कूल जाने की हिम्मत करने वाली कम लड़कियों के बारे में लिखा और बताया कि कैसे तालिबान ने स्कूल को बंद कर दिया । जब स्कूल बाद में फिर से खुला और उसने अपने दोस्तों के साथ फिर से कक्षाओं में भाग लिया जैसा कि उन्होंने पहले किया था तब उसने लिखित लेखन किया । फिर उसने अपनी स्कूल परीक्षा दी और 2009 के अंक में ब्लॉग को समाप्त कर दिया । भले ही उसने लिखा है कि उसकी पहचान बाद में पता चली और वह एक लोकप्रिय किशोर कार्यकर्ता बन गई जिसे अक्सर भाषण देने के लिए बुलाया जाता था । अगले कुछ वर्षों में वह पाकिस्तान के प्रधानमंत्री से पुरस्कार प्राप्त करने के लिए लोकप्रियता हासिल करती रही । तालिबान तेजी से इस योद्धा के साथ उत्तेजित हो रहा था और उसने नियमित रूप से मौत की धमकी दी । जब वह 9 अक्टूबर 2012 को स्कूल से घर लौट रही थी तो तालिबानी लोगों ने उसके सिर में गोली मार दी । गोली उसके सिर और गर्दन से होते हुए उसके कंधे में जा लगी । हमले में उसके दो दोस्त भी घायल हो गए | वह शूटिंग से बच गई और उसे तुरंत पेशावर के एक अस्पताल में इलाज मिला और बाद में पिता की देखभाल केलिए बर्मिघम इंग्लैंड भेज दिया गया । आखिरकार उसने बरामद किया और सभी लड़कियों पर अपनी पढ़ाई से इनकार कर दिया । बर्मिघम में एजबस्टन हाई स्कूल । तालिबन और उसके चमत्कारी उत्तर जीविता के साथ उसके आदेश ने दुनिया के सभी कोनो से समर्थन प्राप्त किया और उस आगे बढ़ाने में मदद की । उन्होंने 2013 में 16 वें जन्मदिन पर संयुक्त राष्ट्र में भाषण दिया और संयुक्त राष्ट्र ने ' मलाला दिवस ' को आयोजित किया । उसी वर्ष उनकी आत्मकथा " I am Malala : The girl who stood up for education and was shot by Taliban " प्रकाशित हुई । उसने और भी अधिक उत्साह के साथ अपनी सक्रियता जारी रखी और 2013 में हार्वर्ड यूनिवर्सिटी और ऑक्सफोर्ड यूनियन में बात की ।

जुलाई 2014 में उसने लंदन में गर्ल समीट में बोलकर लड़की के अधिकारों की वकालत की । उन्हें अक्टूबर 2012 में सितार -ए- सूजात पाकिस्तान के सबसे बड़े नागरिक बहादुरी पुरस्कार से सम्मानित किया गया । क्लिंटन फाउंडेशन ने उन्हें 2013 में क्लिंटन ग्लोबल सिटीजन अवार्ड प्रदान किया । यूरोपीय संसद ने उन्हें 2013 में विचार की साखोव पुरस्कार देने की स्वतंत्रता के साथ सम्मानित किया । “ उन्हें बच्चों और युवाओं के दमन के खिलाफ और बच्चों के लिए सभी के अधिकार के लिए " भारतीय कार्यकर्ता कैलाश सत्यार्थी के साथ 2014 के नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया । 2017 में उन्हें मानद कनाडाई नागरिकता से सम्मानित किया गया और कनाडा के आम के घर को संबोधित करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्ति बन गए | वह वर्तमान में लेडी मार्गरिट हॉल , ऑक्सफोर्ड में दर्शन राजनीति और अर्थशास्त्र में स्नातक की डिग्री के लिए अध्ययन कर रही है ।

" जब पूरी दुनिया चुप होती है तो एक आवाज भी शक्तिशाली हो जाती है| "
- मलाला युसूफजई

APARNA V SUNILKUMAR
2ND DC ZOOLOGY

किसान आन्दोलन

हमारा देश कृषि प्रधान है और सच्चाई यह है कि कृषि गतिविधियाँ देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। ग्रामीण क्षेत्रों की तीन-चौथाई से अधिक जनसंख्या अभी भी कृषि और कृषि-संबंधित गतिविधियों पर निर्भर है। अधिकांश भारतीय आबादी गांवों में रहती है। यहाँ का किसान समाज समाज का सहायक है, लेकिन उनकी हालत अभी भी बदतर है। उसकी मेहनत के अनुसार उसे इनाम नहीं मिलता। घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का योगदान तीस प्रतिशत है, फिर भी भारतीय किसान की स्थिति लचर है।

महाराष्ट्र में, शरद जोशी ने किसान संगठनों और उनकी जरूरतों को व्यवस्थित करने में एक महान काम किया है। उनका मानना था कि किसानों को उनकी उपज का सही मूल्य देकर, वे संगठित होकर अपनी स्थिति सुधार सकते हैं। उत्तर प्रदेश के किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत ने किसानों की स्थिति में बेहतर प्रगति के लिए एक आंदोलन शुरू किया। उन्होंने महसूस किया कि किसानों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है।टिकैत के आंदोलन ने इस भावना को बढ़ावा दिया कि किसानों को संगठित किया जा सकता है और आर्थिक प्रगति हासिल की जा सकती है।

किसान आंदोलन भी अपर्याप्तता और किसान की विसंगतियों को खत्म करने का प्रयास कर रहा है। वह चाहते हैं कि भारत में समाजवाद की स्थापना हो, जिसे सभी तरह के पूंजीवाद और एकाधिकार की समाप्ति की आवश्यकता है।किसान यूनियन की यह भी माँग है कि वस्तु विनिमय का माध्यम रूपया माना जाए। यह तभी संभव होगा जब उत्पादक और उपभोक्ता रूपों में किसान के शोषण को समाप्त किया जा सकेगा।

किसान यूनियन किसानों के लिए वृद्धावस्था पेंशन का समर्थन करती है। कुछ का मानना है कि किसान संघ राजनीति से अधिक प्रेरित हों। इस संदर्भ में, किसानों को आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक शोषण के खिलाफ संगठित करना चाहते हैं और एक नए समाज का आयोजन करना चाहते हैं।

आर्थिक समस्याओं के अलावा, हमारा मतलब है कि किसानवादी राजनीतिक शोषण और जाति की राजनीति के उन्मूलन के माध्यम से वर्गवादी राजनीति का विकास। किसानों की उन्नति के साथ ही भारत नाम का यह देश, जिसकी जनसंख्या का कम से कम 70 % भाग किसानो का है , उम्मती कर सकता हैं।

किसान आंदोलन की शुरुआत के महीनों हो चुके हैं और दिल्ली में किसान भाइयों द्वारा किसान कानून के खिलाफ आंदोलन अभी भी जारी है। किसान चाहते हैं कि नए कृषि कानून को वापस लिया जाए और फसल के न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की गारंटी दी जाए।

पंजाब और हरियाणा के हजारों किसान पिछले कई महीनों से दिल्ली की सीमा पर आंदोलन कर रहे हैं। यह पहली बार नहीं है कि किसानों द्वारा आंदोलन किया जा रहा है। 32 साल पहले भी, किसानों ने दिल्ली के बोट क्लब में हलचल मचाई थी, जिसके द्वारा सरकार ने किसानों के लिए लाए गए कानून को वापस ले लिया था, फिर से किसान अपनी मांगों को लेकर दिल्ली की सीमा पर जमे हुए हैं और अपनी मांगों को पूरा करने के लिए दृढ़ हैं ।

सितंबर के महीने में राष्ट्रपति द्वारा तीन नए कृषि बिलों को मंजूरी दी गई थी।

∆पहला कानून है "कृषक उपज व्यापार और वाणिज्य (संवर्धन और सरलीकरण) विधेयक, 2020".

∆दूसरा कानून है- "कृषि (सशक्तिकरण और संरक्षण) कीमत अश्वासन और कृषि सेवा करार विधेयक, 2020".

∆तीसरा कानून है "आवश्यक वस्तु संशोधन विधेयक, 2020".

लेकिन किसानों को यह बिल पसंद नहीं आया | उनका कहना है कि सरकार ने कॉर्पोरेट घरानों को बढ़ावा देने के लिए ऐसा किया गया है और यह बिल गरीब किसानों के लिए नहीं है |

26 जनवरी को दिल्ली में आयोजित एक रैली में किसानों द्वारा लाल किले पर कब्जा कर लिया गया था, जिसने स्थिति को और उग्र बना दिया था और अब सरकार और किसानों के बीच सीधी लड़ाई है, जिसमें किसान नेता भी लगे हुए हैं |

विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं का अवलोकन करने पर, ऐसा लगता है कि कृषि हमेशा उपेक्षित रही है; इसलिए, यह आवश्यक है कि कृषि के विकास पर अधिकतम ध्यान दिया जाए। यह स्पष्ट है कि किसानों को उद्योग के हितों के रिकॉर्ड उपलब्ध कराने चाहिए। कृषि उपज के मूल्य निर्धारण में किसानों की भागीदारी भी सुनिश्चित की जानी चाहिए।

किसान चाहते हैं कि भूमि-सुधार कार्यक्रम के दोषों का निवारण किया जाना चाहिए और सरकार को किसी भी कीमत पर डंकल प्रस्ताव को अस्वीकार करना चाहिए और सरकार को किसानों की मांगों और उनके आंदोलनों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट है कि किसान लोग अपनी माँगों और अधिकारों को प्राप्त करने के लिए पूरी तरह से राजनीतिक नेताओं पर निर्भर है।भूखे रहकर और आत्महत्या करके विरोध करने के बजाय, किसानों को यह समझना चाहिए कि ऐसी स्थिति में कार्य करने का यह सही तरीका नहीं है।किसानों को राजनेताओं के पीछे नहीं जाना चाहिए , ना ही उन्हे विपक्ष पार्टियो का और बाहरी शक्तियो सहारा लेना चाहिए | क्यों कि उन्हे इस आन्दोलन के नाम पर अपना उल्लू सीधा करना होता है । इस बात को अगर किसान न समझ तो हमारे देश का नुकसान हो सकता है ।अगर उनको कुछ हासिल करना है तो सारे किसान संगठन एक साथ शांतिपूर्वक बीच का रास्ता निकाले जिससे साँप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे ।

ATHIRA MADHUSOODANAN
2ND DC CHEMISTRY

टोविनो थॉमस

टोविनो थॉमस एक भारतीय अभिनेता और पूर्व मॉडल है जो मलयालम सिनेमा में दिखाई देते हैं। उन्होंने 2012 में मलयालम फिल्म 'प्रभुविंटो मक्कल' से शुरुआत की। टोविनो का जन्म इरिंजालाकुडा में हुआ, जो इलकल थॉमस और शीला थॉमस के सबसे छोटे बेटे थे। उन्होंने फिल्म नेवराम के लिए सह- निर्देशक के रूप में फिल्म उद्योग में प्रवेश किया।

अपनी विशिष्ट रूप और शैली के लिए कोयीन टाइम्स द्वारा प्रकाशित केरल के सबसे आकर्षक पुरुषों की सूची में टोविनो को छठे स्थान पर रखा गया, वह द टाइम्स ऑफ इंडिया की सहायक कंपनी है। 2018 में कोयीन टाइम्स द्वारा सबसे भावनीय पुरुषों की सूची में टोविनो को पहला स्थान मिला। उन्होंने 2012 में सजीवा एव्थिक्कड़ द्वारा निर्देशित 'प्रभुविंटो मक्कल' मैं अपने अभिनय की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने रुपेश पितांबरन के थेवरम में सहायक निर्देशक के रूप में काम किया। ए: बी: सी: डी: (2013) मैं उन्होंने एक विरोधी किरदार किया। टोविनो फिल्म कुटरा में मुख्य भूमिका में दिखाई दिए, जिसमें मोहनलाल भी थे। उन्होंने रुपेश पितांबरन के दूसरे निर्देशकीय उघम यू टू ब्रुटस मैं मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने गप्पी (2016) मैं तेजस वर्की की भूमिका निभाई जिसे डीवीडी और डिजिटल रिलीज पर दर्शकों द्वारा खूब सराहा गया। उन्होंने फिल्म में अपने प्रदर्शन के लिए NAFA 2017 मैं नया सनसनीखेज हीरो का पुरस्कार जीता। 2020 में उन्हें ममता मोहनदास के साथ फिल्म फॉरेंसिक में देखा गया जिसे दर्शकों से अच्छी प्रतिक्रिया मिली और बॉक्स ऑफिस पर सफलता मिली।

पुरस्कार: सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के लिए फिल्म फेयर अवार्ड मलयालम, सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के लिए फिल्म क्रिटिक्स अवार्ड साउथ आदि।

NAVYA RAJ
1ST DC BCOM

श्रीदेवी

हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में हवा हवाई गर्ल नाम से मशहूर अभिनेत्री , श्रीदेवी को कौन नहीं जानता | श्रीदेवी जी का असली नाम श्री अम्मा यंगर अय्यप्पन है । इसमशहूर अभिनेत्री का जन्म तमिलनाडु के शिवाकाशी में 13 अगस्त 1963 को हुआ था । पिता शिव काशी के ही निवासी थे जबकि इनकी माता आंध्र प्रदेश की रहने वाली थी । इस कारण श्रीदेवी बचपन से ही तमिल और तेलुगु दोनों ही भाषाओं का ज्ञान रखती थी । मात्र 54 वर्ष की उम्र में श्रीदेवी जी का निधन 24 फरवरी 2018 में हुआ | श्रीदेवी जी श्री सुरेंद्र कपूर की बहू है और प्रसिद्ध अभिनेता अनिल कपूर की भाभी है ।अनिल कपूर के अलावा श्रीदेवी के एक और देवर संजय कपूर भी है । इस प्रकार बोनी कपूर से शादी के बाद श्रीदेवी एक मशह अभिनेत्री होने के साथ - साथ बॉलीवुड के एक बहुत ही मशहूर परिवार का हिस्सा भी बनी ।

श्रीदेवी जी का फिल्मी करियर

पहली फिल्म : - मात्र 4 वर्ष की उम्र में साल 1967 में श्रीदेवी ने अपनी फिल्मी करियर की शुरुआत तमिल फिल्म कंधन करुनी ' से एक बाल कलाकार के रूप में की । इन्होंने हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में कुल 63 फिल्में , तेलुगु में 62 फिल्में , 58 तमिल फिल्में और 21 मलयालम फिल्में की | बोनी कपूर से शादी के बाद श्रीदेवी ने लंबे समय के लिए फिल्मी दुनिया से संन्यास ले लिया और 15 साल बाद 2012 में फिल्म ' इंग्लिश विंग्लिश ' से हिंदी सिनेमा में पुनः कदम रखा ।

अवार्ड्स : - श्रीदेवी को अपने फिल्मी सफर में कई अवॉर्ड्स मिले परंतु उन्हें सबसे बड़ा सम्मान भारत सरकार ने साल 2018 में " पद्मश्री " के रूप में दिया । साल 2013 में उन्हें उनकी फिल्म नागिन और मिस्टर इंडिया के लिए फिल्मफेयर स्पेशल अवार्ड से सम्मानित किया गया ।

मृत्यु : - दुख इस बात का है कि आज वे हमारे बीच नहीं है । उनकी कमी फिल्में जगत को हमेशा महसूस होगी ।

मृत्यु कारण : - दुर्घटनावश पानी के टब में गिरने के कारण ।

JISNA V J
1ST DC BCOM

कोविड-19 का प्रभाव

कोरोना की वजह से पूरी दुनिया मे हाहाकर मचा हुआ है। स्वास्थ के साथ साथ पूरी दुनिया एक बडे आर्थिक संकट की तरफ जा ही २ही है जिस से वैशविक मंदी स्पष्ट रूप से देख जा रही हैं। पिछले 6 महीने में पूरी दुनिया के शेयर बाजार धराशाई हो चुके हैं। संयक्त राष्ट्रने चेतावनी दी है दुनिया भर में कोरोना की महामार 2.5 करोड लोगों का रोजगारी छीन लेगी। यह पहले से जारी वैश्विक आर्थिक संकट से 3.6 लाख करोड डॉलर का झटका लगेगा।

कोरोना वायरस महामारी ने शिक्षा के क्षेत्र को क्षति पहुंचाई है। कोविड-19 के कारण सभी छात्रों की पढ़ाई प्रभावित हो रही हैं। कई राज्य बोड परीक्षा के ही बिना बच्चों को अगली कक्षा के लिए प्रमोट कर रहे है। अभिभावकों को बच्चों के भविष्य को लेकर काफी चर्तं चिन्ता हो गई है। ररपोटि के अनसार महामारी के कारण कई माता-पपता ऐसे हैं

। कोरोना वायरस के कारण हमारी आदतों और हमारी दिनचर्या सब बदली है। कोरोना से बचने का सोधा उपाय है । मास्क पहनना ', दो गज की दूरी अपनाना , हाथों को साबुन से धोना । आपने ध्यान दिया है इसी कोरोना के कारण हमारा पर्यावरण स्वच्छ बना है । जो दिल्ली धुएँ कारण दिखती नही थी आज वहाँ आसमान स्वच्छ दिखाई दे रहा है । कोरोना से हमे डरना नही चाहिए बल्कि इसको समझकर मुस्तेदी से अपनो को ही नही दूसरो को भी बचाना है।

HIZANA V.H
2ND DC MATHEMATICS

चिंन्तन

जीवन में कभी ऐसे मोड आते है जहाँ हमे तय करना मुश्किल हो जाता है कि अपनी चाह को चुने या ज़रूरतों को ?

जो व्यक्ति अपनी इच्छा रूपी भावनाओं को काबू में करना सीख लेता है। वही इस दुनिया को जीत लेता है ।

जो अकेले चलते है वही अपनी मंजिल पकड़ लेते हैं।

इस दुनिया में तुम्हारा कोई साभ दे न दे । अंत में तुम्हारी काबिलित तुम्हारा साथ देगी।

अकसर बहस का जवाब मौन रूप से दे । क्योंकि लोग सिक्के की खनक से ज्यादा नोटों को तवज्जूब देता है ।

ALEENA ZERIN
1ST DC PSYCHOLOGY

2020 ने हमें क्या सिखाया ! ?

नये साल के पहले दिना घडी में बारह बजते ही नव वर्ष की शुभकामनाएँ नहने लगी थी। २०१० भी शुरुआत में हर एक साल के तरह ही थे। लेकन कुछ महीने बाद बात बिगडने लगी।

कोविड 19 हमारे जिंदगी पर ताला लगाया । पूरे देश मे लॉकडाउन लागू किया । आगे की जिंदगी बस एक प्रश्न चिन्ह बनकर रुक गया। अनेक लोग मर गए कई लोग बेरोजगार हो गए । पूरी दुनिया मे असमान परिस्थिति थी लेकिन व्यक्तिगत तौर पर इसका असर हर राज्य केलिए अलग था।पर इन सब के बीच मे भी २०१० जो साल है वह हमें बहुत कुछ सिखाया जो किसी अन्य वर्ष हमें कभी सिखा नही पाया।

हम सब अपने भविष्य के बारे में सोचकर हमारे सपनों को पकड़ने की भागदौड में लगे हुए थे । लेकिन २०१० में हमारा भविष्य तो धुँधला पड गया था । हमारे पास केवल वर्तमान ही था और उसी मे मजा लेने का महत्व हम समझने लगे । इस साल ने हमें यह याद दिलाया कि जिदगी बहुत छोटी हैं कभी भी कुछ भी हो सकल हैं। तो हमारे चारो तरफ जो छोटी- छोटी बाते हैं। इन सब मे ह में खुशी ढूँढ नी है। हमें अपने आप को देने के लिए बहुत ज्यादा समय मिला हम अपनी इच्छाओं को समझ पाये । खुद की देखभाल हर एक चीजो की तरह बहुत ही जरूरी है। आखिर हम ही हमारे सबसे अच्छा दोस्त है। घर के चार दीवारो के उदासीनता में हम नए नए शौक खोजने लगे । कुछ लोग सफल हुए पर कुछ लोग नही हर एक बातो के तरफ हमारा जो परिप्रेक्ष्य है वह भी बदलने लगी । जैसे पहले बताए थे । कोविड - 19 हर एक लोगों को विभिन्न तरीके से प्रभावित किया है। लेकिन उसमें जो सकारात्मक चीजे है। उस पर ध्यान देकर उसे अपने आज की ज़िदगी मे ले जाना ही सबसे बहतरीन बात है।

2020 ने हम सनको जाने या न जाने बदल ही है। कई लोगों की ज़िदगी में 2020 एक नया मोड लाया होगा कुछ भी हो हमारी

जिंदगी का एक कठिन अध्याय हम ने सामना किया है । आगे जाकर जो भी परेशानियाँ हमें सामना करनी पड़े। इसी अनुभव से हम आगे लडेंगे । तो क्या कोविड - 19 महामारी का हम आभारी ह है ?? ऐसा कहना सही नही है न ??

INDHUJA S
2ND DC GEOLOGY

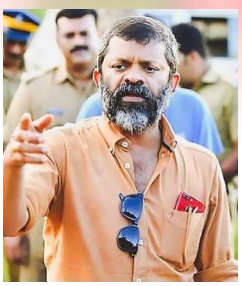

सच्चिदानंदन

के आर सच्चिदानंदन , जिन्हे सच्ची के नाम से जाना जाता था वे एक प्रतिभवान लेखक थे । उनका जन्म केरल के त्रिशूर जिले के कोडुंगलुर में हुआ था । वह एक बहू प्रतिभाशाली व्यक्ति थे । उन्होंने एक थिएटर कलाकार , निर्देशक , लेखक , निर्माता , फिल्म पटकथा लेखक और भी कई । ये सभी भूमिकाए किसी एक व्यक्ति के भीतर मौजूद है । ठक्कल फिल्म प्रोडक्शन हाउस के स्टैंप के तहत , वह चार अन्य लोगों के साथ निर्माता थे ।वे मलयालम फिल्म जगत के जाने माने निर्माताओं में उनका नाम शुमार है।लेखक सेतु के साथ उन्होंने वर्ष 2007 में चॉकलेट , 2011 में मेक अप मान , वर्ष 2009 में रोबिन हुड , वर्ष 2012 में सीनियर्स और कई अन्य सुपरिहट फिल्मों का निर्माण किया । वह अपने पटकथा लेखन के लिए प्रसिद्ध थे क्योंकि उनकी लिपियों में एक मसाला और मनोरंजन की भरमार थी । अनारकली में एक निर्देशक के रूप में सच्ची ने की शुरुआत की ।

अपने कॉलेज के दिनों के दौरान , वह अपने कॉलेज फिल्म सोसायटी द्वारा आयोजित थिएटर शो में बहुत उत्साहि प्रतिभागी थे और यहां तक कि कुछ छोटे नाटक शो भी निर्देशित किए । फिल्म में पी सुकुमारन ने अभिनय किया । उनकी स्क्रिप्ट के परिणाम स्वरूप वर्ष 2012 में जोशी के निर्देशन में एक सुपरहिट मेगा ब्लॉकबस्टर फिल्म रण बेबी रण रिलीज हुई जो मोहनलाल द्वारा निर्मित सबसे सफल फिल्मों में से एक थी । निर्देशक के रूप में उनकी पहली फिल्म वर्ष 2015 में 13 नवंबर को रिलीज हुई थी और इसे अनारकली नाम दिया गया था । फिल्म का निर्माण और नायर ने अपने प्रोडक्शन हाउस मैजिक मून द्वारा किया था । फिल्म का संगीत विद्यासागर ने किया था । फिल्म काफी हिट रही और वह भाग्यशाली रहे कि उन्हें अपने डेब्यु डायरेक्टोरियल वेंचर के लिए इतनी अच्छी प्रतिक्रिया मिली । इसके बाद रामलीला (2017) , शर्लक होम्स (2017) ड्राइविंग लाइसेंस (2019) , उनकी आखिरी फिल्म अय्यपनुम कोशियूम (2020) थी । 18 जून 2020 को त्रिशूर के जुबली मिशन अस्पताल में कार्डियक अरेस्ट के बाद सैकी की मौत हो गई । उनकी कुछ दिनों पहले मैक्सकेयर अस्पताल वडक्कंजेरी , त्रिशूर में किए गए रिप्लेसमेंट सर्जरी के बाद जटिलताओं के कारण कार्डियक अरेस्ट हुआ था । मृत्यु के कुछ दिनों पहले मैक्सकेयर अस्पताल वडकंकजेरी, त्रिशूर में किए गए रिप्लेसमेंट सर्जरी के बाद जटिलताओं के कारण कार्डियक अरेस्ट हुआ था |

JOMOL JOHN
2ND DC ECONOMICS

SWAPNA SUDHA
2ND DC ZOOLOGY

धन्यवाद